१ੴ सतिगुर प्रसादि॥

गुरु ग्रंथ साहिब दर्शन

कर्त्ता और प्रकाशक :

सेवा सिंह (संत)

गुरुद्वारा रामपुर खेड़ा

डाक० गढ़दीवाला, ज़िला होशियारपुर - 144207 (पंजाब)

फोन : 01886-260334

सभी अधिकार कर्त्ता के पास हैं।

प्रथम बार : अप्रैल 2008 (3000)

भेंट – अमल और विचार

कर्त्ता और प्रकाशक :—

सेवा सिंह (संत)

गुरुद्वारा रामपुर खेड़ा

डा० गढ़दीवाला

ज़िला होशियारपुर – 144207

फोन – 01886–260334

लेज़र टाईप सैटिंग

न्यू टैक कम्प्यूटर

ढन रोड, जालन्धर फोन : 0181–5077805

गुरु ग्रंथ साहिब दर्शन

सतिगुर दरसनि अगनि निवारी॥
सतिगुर भेटत हउमै मारी॥

महला ५, पृष्ठ १८३॥

विषय सूची

क्या ?	कहाँ ?
✶ प्रारम्भिक शब्द	(i)
✶ पुस्तक प्रति दो शब्द	(vii)
✶ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की महानता क्यों ?	1
✶ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के सम्पादन की ज़रूरत क्यों पड़ी ?	3
✶ गुरबाणी की महिमा	7
✶ शब्द गुरु	11
✶ सिक्ख धर्म का अकीदा	13
✶ सतगुरुओं ने स्वयं बाणी का सत्कार किया और करने की ताक़ीद की	15
✶ श्री गुरु ग्रंथ साहिब काव्य और भाषाओं का भण्डार	20
✶ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में रागों को महानता	21
✶ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में विषय वस्तु क्या है ?	22
✶ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में ब्रह्माण्ड के प्रसार के संकेत	24
✶ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी प्रति विद्वानों के विचार	26
(उ) बाणी दर्ज़-छः गुरु साहिबान	
– श्री गुरु नानक देव जी	35
– श्री गुरु अंगद देव जी	47
– श्री गुरु अमरदास जी	55
– श्री गुरु रामदास जी	65
– श्री गुरु अर्जुन देव जी	77
– श्री गुरु तेग़ बहादुर साहिब जी	89
(अ) बाणी दर्ज़ – पन्द्रह भक्त जन	
– भक्त कबीर जी	101
– भक्त रविदास जी	111
– भक्त नामदेव जी	121
– शेख फरीद जी	133
– भक्त धन्ना जी	143
– भक्त बेणी जी	153

- भक्त भीखन जी 161
- भक्त सधना जी 167
- भक्त पीपा जी 171
- भक्त त्रिलोचन जी 179
- भक्त रामानन्द जी (रामानंद) 187
- भक्त जै देव जी 195
- भक्त परमानंद जी 203
- भक्त सूरदास जी 207
- भक्त सैण जी 215

(इ) बाणी दर्ज - चार गुर सिक्ख

- भाई मरदाना जी 223
- राय बलवंड और सत्ता जी 231
- बाबा सुन्दर जी 241

(स) बाणी दर्ज - ग्यारह भट्ट जन

भट्टों के प्रति संक्षेप जानकारी

- भट्ट कल्ह सहार जी 249
- भट्ट गयंद जी 255
- भट्ट भिखा जी 259
- भट्ट कीरत जी 263
- भट्ट मथरा जी 267
- भट्ट जालप जी 271
- भट्ट सल्ह जी 275
- भट्ट भल्ह जी 279
- भट्ट बल्ह जी 283
- भट्ट हरबंस जी 289
- भट्ट नल्ह जी 293

(ह) प्रत्यक्ष सतगुरु - श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी

- सद हजूरि हाजरु है नाजर कतहि न भइओ दूराई॥ 299

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी
के
300 साला गुरता दिवस पर

समर्पित

''प्रगट गुरां की देह''
में विराजमान
श्री गुरु साहिबान, प्रभु भक्तों और गुरसिखों
के माध्यम से साकार हुए

''इलाही शब्द''

को,
जो सम्पूर्ण मानवता को अपने मूल से
जुड़ने के लिए सदा से
प्रेरणा स्रोत
है।

प्रारम्भिक शब्द

बाणी बिरलउ बीचारसी

रामकली म: १, पृष्ठ 935

हिन्दुस्तान के इतिहास में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का सम्पादन एक अनोखा चमत्कार था। इस महान् ग्रंथ में गुरु साहिबान के अलावा रहस्यवादी संतों, साधुओं, दरवेशों, फकीरों और महापुरुषों के चार पाँच सदियों के मनोहर वचन संचित किए गए हैं। असल में श्री गुरु ग्रंथ साहिब आध्यात्मिक साहित्य का बहुमूल्य खजाना है। इसमें दर्ज़ महापुरुषों के वचन मनुष्य को ज़िन्दगी बख्शिश करने वाले हैं। यह पावन बाणी सदियों से भारत को ज्ञान और शान्ति प्रदान करती रही है। पावन बाणी की सर्व-साझी विचारधारा सभी धर्मों की एकता को ही दृढ़ नहीं करती, बल्कि ईश्वरीय एकता को मानव एकता में विश्वास पक्का करके सभी को प्रेम सन्देश देती है। अलग-अलग विश्वास, जाति, प्रान्तों और भाषाओं के भिन्न भेद के होते हुए भी आध्यात्मिक एकता के आधार पर पंचम पातशाह श्री गुरु अर्जुन देव जी की ओर से महापुरुषों के पवित्र वचनों को एक ग्रंथ में एकत्रित करना सचमुच एक करामात थी। इस महान् कार्य ने जहाँ आत्मिक और सामाजिक जागृति पैदा की वहाँ नए धर्म की स्थापना की। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की सर्वसांझी विचारधारा में आज भी वह ठोस तत्त्व मौजूद हैं जो हमारी आज की मानसिक पहेलियों को हल करने में सहायक हो सकते हैं।

आज जब सम्पूर्ण सिक्ख जगत् श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पवित्र चार सौ साला पहला प्रकाश पर्व मना रहा है उस समय ''**सतिगुर की बाणी सति सरूपु है**'' जानकर ''गुरु ग्रंथ साहिब दर्शन'' का पुस्तक रूप में लिखा जाना एक सफल उद्यम है।

सत्कार योग्य व्यक्तित्व संत सेवा सिंह जी रामपुर खेड़ा वालों की अनुभवी कलम द्वारा इससे पहले लिखी पुस्तक ''सबदु गुर पीरा'' आध्यात्मिक संसार में बहुत सराही गई है। इस लड़ी को आगे चलाते आप जी की ओर से ''गुरु

ग्रंथ साहिब दर्शन'' लिखकर गुरमत साहित्य के विद्यार्थियों और पाठकों की लम्बित माँग को पूरा किया है। गुरु ग्रंथ साहिब जी के सूक्ष्म से सूक्ष्म पक्ष के बारे में आज तक कई गहन-गम्भीर विचारों वाली पुस्तकें आध्यात्मिक खोजियों के सम्मुख आ चुकी हैं पर संसार के बाकी धर्म ग्रंथों के सम्पादन प्रबंध को सम्मुख रखते, जिस तरह गुरु ग्रंथ साहिब के सम्पादन पक्ष को पूरा किया है, ऐसा महान् कार्य आज तक हमारे सामने नहीं हुआ।

इस पुस्तक के पहले हिस्से में ''श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सम्पादन की ज़रूरत क्यों हुई, के शीर्षक में सत्कारयोग्य संत सेवा सिंह जी के विचारों अनुसार यह सारी गुरबाणी केवल ईश्वरीय ज्ञान, धुर दरगाह से बिना मिलावट फरमान होने के कारण, धार्मिक दुनिया में एक अलग जगह रखती है। ऐसा अमूल्य ईश्वरीय ज्ञान का प्रमाणिक धर्म ग्रंथ किसी भी पीर पैगम्बर, अवतार की ओर से अपनी मौजदूगी में रच कर संसार की गोद में नहीं डाला गया। यह मान और उच्च दर्ज़े की प्रमाणिकता केवल गुरु ग्रंथ साहिब जी को ही प्राप्त है। जहाँ आसान ढंग से आप जी ने इसकी रचना में, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के सम्पादन के कारणों, इसकी पवित्र क्रमता और योगदान वाले सतगुरु साहिबान, भक्तों, गुरसिखों और भट्टों के बारे में वर्णन किया है, ऐसा यत्न आने वाले समय में गुरमत के विद्यार्थियों को एक नई दिशा देगा। पुस्तक के प्रारम्भिक भाग में दर्ज़ शीर्षक में विचारों को बहुत आसान और साधारण भाषा में समझाने का यत्न किया है। ''गुरबाणी की महिमा'' ''शबद-गुरु'', ''सिक्ख धर्म का विश्वास'', ''सतगुरुओं ने स्वयं बाणी का सत्कार किया और करने की ताकीद की।'' इन विषयों के अधीन प्रयुक्त शीर्षकों को स्पष्ट करने के लिए आसान भाषा शैली वर्णन की गई है। ''शबद-गुरु'' शीर्षक के अन्तर्गत आप जी विचारों को सांझा करते हुए समझाते हैं, ''गुरमत के अनुसार शरीर को गुरु नहीं माना गया, गुरु केवल ज्ञान है। ज्ञान शब्द के माध्यम से प्रकट होता है। शबद प्रकट करने का माध्यम शरीर है, कई बार मनुष्य 'माध्यम' को ही गुरु मान कर 'माध्यम' से चिपका रहता है।'' इससे आगे ''सिक्ख धर्म का अकीदा'' शीर्षक में आप जी दृढ़ विश्वास से लिखते हैं कि ''जिस मन में सतगुरुओं और भक्तों के हृदय को पढ़ने और पड़ताल करने की लालसा हो

वह प्यार श्रद्धा और भावना की आंखों से श्री गुरु ग्रंथ साहिब को पढ़े, उसको इस बाणी से सतगुरु जी और भक्तों के प्रत्यक्ष दर्शन अवश्य प्राप्त होंगे।''

'जिनि जिनि जपी तेई सभि निसत्रे तिन पाइआ निहचल थानां हे'

मारु म. ५, सोलहे, पृष्ठ १०७५

सतगुरुओं ने स्वयं बाणी का सत्कार किया है और करने की ताक़ीद की है। सिक्ख का यकीन भी ऐसा ही होना चाहिए —

वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु अवरु न कोइ॥
वाहु वाहु अगम अथाहु है वाहु वाहु सचा सोइ॥

सलोक म: ३, पृष्ठ ५१५

इससे आगे आप जी की ओर से प्रयुक्त शीर्षकों में 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब काव्य और भाषाओं का भण्डार,' ''श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में रागों को महानता'', ''गुरु ग्रंथ साहिब जी की विषय वस्तु क्या है'' की चर्चा की गई है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का विषय वस्तु क्या है? के अन्तर्गत आप जी विचारों की लड़ी को आगे ले जाते हैं। लिखते हैं ''श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में विषय वस्तु न इतिहास है, न मिथिहास है, न कर्म-काण्ड है और न ही उपासना की विधियां हैं, बल्कि वहमों-भ्रमों, कर्म-काण्डों का खण्डन है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में केवल और केवल सच है —''

अंम्रित बाणी हरि हरि तेरी॥
सुणि सुणि होवै परम गति मेरी॥
जलनि बुझी सीतलु होइ मनूआ
सतिगुर का दरसनु पाए जीउ॥

माझ म: ५, पृष्ठ १०३

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में ब्रह्माण्ड के पसारे के संकेत 'शीर्षक अधीन आप जी ने गुरमत विचारों को और भी आसान ढंग से बयान किया है। आप जी लिखते हैं ''सतगुर जी ने पांच सौ साल पहले परमाणु प्रयंत्रों का संकेत देकर फरमान किया है कि आने वाले समय में मनुष्य परमाणु के बने यंत्रों से आँख झपकते ही आकाशों, पातालों, दीपों, मण्डलों में घूम फिर कर आने की सामर्थ्य वाला भी हो जाए फिर भी मनुष्य सुखी नहीं हो सकता। सुख केवल गुरु जी शरण प्राप्त करने से ही मिलना है।''

परमाणो परजंत आकासह दीप लोअ सिखंडणह॥
गछेण नैण भारेण नानक बिना साधू न सिध्यते॥

म: ५ गाथा, पृष्ठ १३६०

इस विषय पर आप आगे लिख रहे हैं, ''संसार की उत्पत्ति'' वैज्ञानिक डार्विन की थ्यौरी (Theory) थोड़ा समय पहले लोगों के सामने आई है, पर गुरु नानक साहिब ने पांच सौ साल पहले ही गुरबाणी में अंकित किया है कि एक सच्चे परमेश्वर जी से धुंधुकार की अवस्था से पवन (गैस) पैदा हुई, पवन से पानी अस्तित्व में आया। पानी से सारी सृष्टि पैदा हुई। पावन गुरबाणी का फरमान है :

साचे ते पवना भइआ पवनै ते जलु होइ॥
जल ते त्रिभवणु साजिआ घटि घटि जोति समोइ॥

सिरी रागु म: १ पृष्ठ १९

इस पुस्तक के अगले भाग में ''श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी प्रति विद्वानों के विचार'' शीर्षक में संसार प्रसिद्ध फिलास्फरों और बुद्धिजीवियों के अलग-अलग विचारों को लिखकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बड़ाई और महानता को दर्शाया गया है। इन विद्वानों में प्रोफैसर पूर्ण सिंह, भाई वीर सिंह, स्वामी राम तीर्थ दण्डी सन्यासी, डा० राधा कृष्णन, डा० बी० आर० अम्बेडकर, श्री रणबीर (जालन्धर), अखलाक हुसैन देहलवी, डा० मुहम्मद यूसफ अब्बासी, डा० धर्मपाल सैनी, पर्ल एस बक-नोबल पुरस्कार विजेता, डकन ग्रीन लीज़, मिस्टर तिआनबी, मिस्टर एच०एल० बराडशाह, फिलास्फर रसल शामिल हैं। पुस्तक के अगले भाग में पावन गुरबाणी के रचयिता और गुरु साहिबान, 15 भक्त, 4 गुरसिक्ख, 11 भट्टों कुल 36 बाणी कर्त्ताओं का जीवन ब्यौरा, संक्षेप जीवन और उपदेश को भावपूर्ण शैली में बयान किया है।

असल में सत्कार योग्य संत सेवा सिंह रामपुर खेड़ा वालों का सत्कार मेरे मन में तब से बन गया था, जब उनके द्वारा रचित पुस्तक ''से किनेहिआ'' (जीवन वृत्तांत बाबा हरनाम सिंह रामपुर खेड़ा) को लोक शैली में किसी बात को बिना बढ़ा चढ़ाकर संगत के सम्मुख पेश किया था। सचखण्ड वासी पूजनीय

संत बाबा हरनाम सिंह जी पुरातन गुरसिक्खों जैसे कथनी और करनी के पूरे थे, उनकी नज़दीकी ने एक पढ़े-लिखे, सिरडी और धर्मी नौजवान सेवादार संत सेवा सिंह के हृदय घर में गुरमत रहणी का ऐसा बीज बोया, जिसने उन्हें एक सम्पूर्ण गुरसिख और संत बनाकर सिक्ख संगत के सम्मुख किया। आप जी गुरुद्वारा रामपुर खेड़ा साहिब के मौजूदा मुख्य सेवादार की सेवा निभा रहे हैं। उनका आत्मिक रंग में रंगे रहना, नम्रता का धारणी होना, दृढ़ इरादे के मालिक होना, सेवा और सिमरन को जीवन का अंग समझना और बढ़िया प्रबंधक होना, उनके व्यक्तित्व के मुख्य गुण हैं। इसके इलावा आप जी का संगत में धड़ेबाजी से निर्लेप रहकर विचरण करना और संगत को हमसाये जानकर प्रेम करना, प्रसिद्ध गुरमत विद्वान् और वक्ता होना, इनके मीरी गुण हैं। प्रस्तुत पुस्तक उनके स्वभाव, जीवन-शैली और प्रतिबद्धता को रूपमान करती है।

मेरी गुरु चरणों में अरदास भी है और हार्दिक इच्छा भी है कि सत्कारयोग्य संत सेवा सिंह जी रामपुर खेड़ा वाले ईश्वरीय रंग में रंगकर इस मार्ग पर चलते और मंज़िलें तय करते जाएं। गुरमत मार्ग के पथिकों के लिए खास करके और सम्पूर्ण सिख समाज के लिए आमतौर पर, यह पुस्तक अहम् जानकारी से भरपूर है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के 300 साला गुरता दिवस को समर्पित इस पुस्तक ने गुरमत साहित्य के महान् खजाने को भरने के लिए बहुत बड़ा योगदान डाला है क्योंकि इसमें बाकी धर्म ग्रन्थों के मुकाबले ''गुरु ग्रंथ साहिब जी के दर्शन'' के विलक्षण झलकारे स्पष्ट तौर पर रूपमान हो रहे हैं। दूसरे सभी धर्मों के धर्म ग्रंथों के प्रति सत्कार प्रकट करता हुआ, इस महान् रचना प्रति नतमस्तक होता हुआ, धन गुरु रामदास जी के वचनों को स्मृति में ला रहा है —

हम अंधुले अंध बिखै बिखु राते किउ चालह गुर चाली॥
सतिगुरु दइआ करे सुखदाता हम लावै आपन पाली॥

धनासरी महला ४, पृष्ठ ६६७

सत्कारयोग संत सेवा सिंह जी ने दास को गले लगाकर प्यार करते हुए, इस पुस्तक के प्रारम्भिक शब्द लिखने की कठिन सेवा सौंप दी। दास अल्पज्ञ

बुद्धि के कारण इस महान् रचना से इन्साफ न कर सका होगा। गुरमत के गंभीर पाठक क्षमा करेंगे।

जिन प्रारम्भिक शब्दों की सांझ कलम द्वारा आप से की गई यह केवल अकाल पुरख वाहिगुरु की बख्शिश और महापुरुषों का आशीर्वाद है। इसमें मेरा अपना कोई योगदान नहीं।

इस खोज भरपूर रचना के प्रकाशन के महान् कार्य की सेवा गुरुद्वारा रामपुर खेड़ा (गढ़दीवाला) होशियारपुर की निगरानी में हुई है। समूह सेवादारों ने जिन्होंने इस प्रकाशन की सेवा को तनदेही से निभाया है, उनके प्रति भी सत्कार प्रकट करता हूँ। दास यह आशा करता है कि गुरमत दृष्टि से विचारने, पढ़ने के इच्छुक जिज्ञासु, इस पुस्तक से पूरा-पूरा लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

गुरु कृपा करे, अकाल पुरख, वाहिगुरु, संत बाबा सेवा सिंह रामपुर खेड़ा वालों को तन्दुरुस्ती और दीर्घायु बख्शिश करें ताकि गुरमत साहित्य के महान् खजाने को भरने का जो बीड़ा उन्होंने उठाया है, उसे निभा सकें और सिख संगतों की खुशी हासिल कर सकें।

पावन गुरबाणी का फरमान है —

बाणी बिरलउ बीचारसी जे को गुरमुखि होइ॥
इह बाणी महा पुरख की निज घरि वासा होइ॥

रामकली म: १ पृष्ठ ९३५

दासन-दास

भगवान् सिंह जौहल

गुरमति व्याख्याकार

गांव जौहल
डा० बोलीना दोआबा
जालन्धर - 144101

दो शब्द

सतगुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का सम्पादन और पहला प्रकाश दिवस 30-31 अगस्त और 1 सितम्बर, 2004 को समूह गुरु नानक नाम लेवा ने बहुत श्रद्धा भावना और उत्साह से विश्व स्तर पर मनाया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी प्रति संगत में प्यार और श्रद्धा देखने योग्य है। इस महान् समय अपने-अपने प्यार और मनोभावों को प्रकट करने के लिए हर गुरसिख ने अपने-अपने ढंग, तरीकों से शब्द गुरु को श्रद्धा भेंट की। किसी ने अत्यन्त स्वादिष्ट भोजन के लंगर से, किसी ने बड़े-बड़े नगर कीर्तन से, किसी ने कीर्तन दरबार द्वारा, विद्वान् वक्ताओं ने शब्दों द्वारा बोलकर, लेखकों ने अपने मनोभाव कलम द्वारा प्रकट करके सतगुरु जी को सत्कार और श्रद्धा भेंट की, ये सभी उद्यम और प्रयास बहुत प्रशंसनीय हैं और सभी को सिर झुकता है **''तिना देखि मनि चाउ उठंदा''** के फरमान अनुसार दास ने भी अल्प बुद्धि से श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के आठ मुख्य विषयों पर एक सौ पन्द्रह उपशीर्षक अधीन ''सबदु गुर पीरा'' पुस्तक जून 2004 में संगत को भेंट करके गुरु चरणों में अपनी श्रद्धा अर्पण करने का यत्न किया था, ताकि गुरु चरणों में मेरी हाज़िरी भी मंजूर हो सके। ''सबदु गुर पीरा'' पुस्तक को पढ़कर संगतों ने ज़रुरत से ज्यादा हौंसला बढ़ाया, जिसके लिए सतगुरु जी का और संगत का दिल की गहराईयों से धन्यवादी हूँ।

अब सतगुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का तीन सौ साला गुरता-गद्दी दिवस अक्तूबर 2008 में आ रहा है जो कि श्री हज़ूर साहिब जी की पवित्र धरती पर जहां सतगुरु गुरु गोबिन्द सिंह जी ने स्वयं

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को माथा टेककर, गुरता गद्दी देकर सभी सिक्खों को सम्बोधित करके कहा था, ''**सभ सिखन को हुकम है गुरु मानिओ ग्रंथ**'' बहुत श्रद्धा भावना से मनाने के लिए तैयारियां चल रही हैं।

उस महान् पवित्र दिवस को अपनी तुच्छ मात्र श्रद्धा भेंट करने के लिए तीन पुस्तकें लिखकर गुरु चरणों में अपनी हाज़िरी लगाने और आप संगतों के आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए मन में इच्छा है। यह पुस्तक जिसका शीर्षक ''गुरु ग्रंथ साहिब दर्शन'' रखा है, इसमें संक्षेप रूप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की महानता क्यों ? गुरु ग्रंथ साहिब जी के सम्पादन की ज़रूरत क्यों पड़ी ? गुरबाणी की महिमा, शब्द गुरु, सिक्ख धर्म का विश्वास, सतगुरु जी ने बाणी का सत्कार स्वयं किया और करने की ताकीद की, गुरु ग्रंथ साहिब काव्य और भाषाओं का भण्डार, रागों को महानता, गुरु ग्रंथ साहिब जी की विषय वस्तु क्या है ? ब्रह्माण्ड पसारा, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी प्रति विद्वानों के विचार शीर्षकों के उपरान्त उन महान् आत्माओं, जिन्होंने संसार को गुरबाणी का अमूल्य खजाना बख्शिश किया है, जिनमें छः सतगुरु ज्योतियां, पन्द्रह भक्त, चार गुर सिक्ख, ग्यारह भट्ट जनों का संक्षेप जीवन लिखने का यत्न किया है ताकि इन महान् परोपकारी ज्योतियों के जीवन सम्बन्धी कुछ जानकारी प्राप्त हो सके। इस पुस्तक में छत्तीस महान् आत्माओं का जीवन ब्यौरा, उनके जीवन की मुख्य घटनाएं और गुरबाणी में मुख्य उपदेश क्या बख्शिश किया है, को निरूपण करने का तुच्छ यत्न किया है। सतगुरुओं और भक्तों के जीवन को दर्शाने के लिए बड़े आकार की पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं, पर यह पुस्तक संक्षेप रूप में उनके जीवन की झलक ही है। अगर कहीं

सतगुरुओं, भक्तों, गुरसिक्खों और भट्टों के जीवन को पढ़कर उनके जीवन की कोई घटना, कोई शिक्षा किसी जिज्ञासु के हृदय को गुरमत सेध देने में सफल हो गई, दास इस पुरुषार्थ को सफल समझेगा।

इस पुस्तक में सतगुरु साहिबान, भक्तों, भट्टों, गुरसिक्खों के चित्र भी लगाए हैं। चित्र चाहे कल्पित ही हैं, गुरमत में चित्रों को ज़्यादा महानता नहीं दी गई और न ही गुरमत में चित्रों की पूजा, अर्चना है पर फिर भी चित्रों का एक अपना स्थान है। निम्न तल पर खासतौर पर बच्चों को आकर्षित करने के लिए चित्र काफी सहायक होते हैं जैसे पैंतीस अक्षरी पढ़ते समय ऊ-ऊँट, अ-अनार, ई-ईंट आदि चित्रों का प्रयोग किया जाता है। जब अक्षर पक्के हो जाते हैं फिर अक्षर ही रह जाते हैं, ऊँट, अनार, ईंट आदि चित्र एक तरफ हो जाते हैं। इसी भावना से चित्र लगाने का प्रयत्न किया है कि शायद कोई निम्न तल का जिज्ञासु या बच्चा इन चित्रों का प्रभाव प्राप्त करके उस संसार चितेरे (परमात्मा), से जुड़ने के लिए यत्नशील हो जाए तो चित्र लगाने भी सफल समझे जाएंगे।

दूसरी पुस्तकों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की शिक्षाओं और गुरसिक्खी रहत मर्यादा सरल तरीके से लिखने का मन में विचार है। गुरु चरणों में अरदास है कि इस फुरने को स्वयं कृपा करके साकार करवा लें क्योंकि एक अल्पज्ञ जीव में सामर्थ्य नहीं है कि सर्वज्ञ सतगुरु जी के महान् उपदेशों या जीवन आदर्शों को उसी तरह वर्णन कर सकें जिस आदर्श या मंतव्य से सतगुरु जी ने महान्, आदर्श जीवन जिया, उपदेश बख्शिश किए हैं। इस मकसद को पूरा करने के लिए आप संगत के आशीर्वाद और अरदास की अत्यन्त ज़रूरत है। आशा करता हूँ कि आप जी ज़रूर ही दोनों बख्शिशें आशीर्वाद और

अरदास से दास को सम्मान देंगे। इसी आशा से यह पुस्तक सतगुरु जी के चरणों में भेंट करके आप संगत के हाथों में पहुँचाने का प्रयास कर रहा हूँ। दूसरी दो पुस्तकें गुरु रहमत से, अगले साल पूरा करने का यत्न है। आशा है सतगुरु जी कृपा करके इस विचार को सम्पूर्ण करेंगे।

गुरु पंथ का दास

सेवा सिंह (संत)

गु०रामपुर खेड़ा

डा० गढ़दीवाला, ज़िला होशियारपुर, पिन कोड 144207,

फोन 01886-260334

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की महानता क्यों ?

जब से परमेश्वर जी ने ''**जब उदकरख करा करतारा प्रजा धरत तब देह अपारा**'' की खेल रचकर जगत रचना की है, उस समय से ही माया के अज्ञान भ्रम में भटकती मानवता को अपने मूल से जुड़ने का मार्ग दर्शाने के लिए प्रभु जी ने समय-समय अवतारी पुरुषों को संसार में भेजा। उन अवतारी पुरुषों ने प्रभु जी की ओर से बख्शिश किए अपने अनुभव द्वारा या परमेश्वर जी से आकाश-वाणी के माध्यम से दिए गए ज्ञान के मार्गदर्शन से मानवता को सत्य मार्ग पर चलकर अपने मूल से जुड़ने का उपदेश प्रदान किया।

अवतारी पुरुषों को आकाशवाणी से प्राप्त हुआ ज्ञान या उनके निजी अनुभव हमेशा के लिए संसार में कायम रखने के लिए, अवतारी पुरुषों के जीवन काल समय कोई प्रयत्न नहीं हुआ या हालात ही ऐसे थे कि ईश्वर का संदेश, ईलाही फरमान अवतारी पुरुष अपनी हाज़िरी में कलम बंद नहीं करवा सके। काफी समय के बाद जो -जो ज्ञान उपदेश, अवतारी पुरुषों का संदेश, उनके अनुयायियों की याददाश्त में जमा था या जो उन्होंने अपने सामने घटित हुआ देखा था अपने कानों से श्रवण किया उसको अपनी स्मृति से निकाल कर पुस्तकों का रूप दिया। जिनको संसार के लोग धर्म ग्रंथों के रूप में पूजते, पढ़ते और मानते हैं।

समय की पर्तों के नीचे ढके रहने के कारण और एक की स्मृति को दूसरे की स्मृति तक पहुँचते ईश्वरीय ज्ञान में कितनी बढ़त या कितनी कमी हो गई, इस के विषय में कुछ कहना कठिन है पर हुआ ज़रूर है। प्रसिद्ध अंग्रेज़ विद्वान् मि. मैकालफ ने 13 फरवरी 1899 ई. को श्री अकाल बुन्गा साहिब, अमृतसर के सम्मुख श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के संबंध में बोलते हुए कहा था ''सिक्ख धर्म में एक अन्य बहुत खास गुण है कि संसार में अन्य धर्मों के जो बड़े-बड़े गुरु हो चुके हैं, उन्होंने एक पंक्ति तक अपने हाथ से नहीं लिखी थी। आप में से शायद किसी-किसी ने सुना होगा कि यूनान देश का बड़ा तत्ववेता, जिस का नाम फीथोगोरस था, जिसके बहुत सारे चेले बन गए थे

और जो इतिहास में बहुत ही प्रसिद्ध पुरुष हो गया था, उसने एक पंक्ति भी अपने हाथ से लिखकर पीछे नहीं छोड़ी जिस कारण हम भी जान लेते कि ये उसके नियम थे। इस संसार में दूसरा बड़ा उस्ताद सुकरात था, जो मसीह से पांच सौ साल पहले यूनान देश में एक बड़ा धार्मिक महात्मा प्रसिद्ध हुआ था। वह कहता था कि मुझमें परमात्मा की आकाशवाणी होती है जो मुझे अच्छे कार्यों की ओर प्रेरित करती है और बुरे कर्मों से हटाती है, पर वह भी अपने पीछे कोई ऐसी पंक्ति लिखकर नहीं छोड़ गया, जिससे उसका आशय और उसके धर्म के नियमों की स्मृति बनी रहती। जो कुछ उसकी शिक्षा प्रकट है, वह भी उसके चेले अफलातून के माध्यम से प्रसिद्ध हुई है। उपरान्त इस भारतवर्ष में बड़ा धार्मिक गुरु बुद्ध हुआ। उसने भी अपने हाथ से कोई पंक्ति नहीं लिखी थी। फिर इसके पश्चात् बड़ा प्रसिद्ध धार्मिक गुरु मसीह हुआ था, उसने भी कोई एक अक्षर स्वयं नहीं लिखा था। इसकी शिक्षाएँ भी अंजील नामक पुस्तक द्वारा ही प्रसिद्ध हुई हैं। परन्तु सिक्खों के धार्मिक गुरु इन सबसे विलक्षण हुए हैं, क्योंकि उन्होंने अपने धर्म के नियमों को स्वयं लिखा और सत्य उपदेशों का संग्रह श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी हमारे लिए रचे गए। इस बात में सिक्खों का मत सबसे ज्यादा मज़बूत है।''*

पंथ के महान् विद्वान्, नाम रसीए भाई वीर सिंह जी ने अन्य मतों के आध्यात्मिक ग्रंथों में पड़ी हुई मिलावट के संबन्ध में जानकारी देते हुए लिखा है, ''हमें पता है कि जैन धर्म के ग्रंथ लगभग 900 वर्ष पश्चात् लिखे और संकलित किए गए। इसी तरह बौद्ध धर्म के ग्रंथ भी महात्मा बुद्ध के तीन सौ वर्ष पश्चात् के संकलित हैं। वेदों की लिखावट में जो मतभेद हो चुके हैं, वह इस बात से पता चल सकता है कि इस समय ऋग्वेद की 21 शाखाएं हैं, अथर्वेद की 50, यजुर्वेद की 109, सामवेद की 1000, फिर विष्णु पुराण से 17000 श्लोक गायब हो चुके हैं। अग्नि पुराण से भी 500 गायब हैं। अन्य पुराणों की भी श्लोक गिनती में बहुत फर्क हो गया है। धर्म पुस्तकों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का वजूद ही ऐसा है, जिसका अस्तित्व अपने आदि रूप की प्रतिष्ठा में विद्यमान है।''

---

* भूमिका (ग) श्री गुरु ग्रंथ साहिब (संथ्रा पोथी पहिली) कृत-भाई वीर सिंह जी।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के सम्पादन की ज़रूरत क्यों पड़ी?

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के सम्पादन का महान् कार्य श्री गुरु अर्जुन देव जी को इसलिए करना पड़ा क्योंकि आप जी त्रिकालदर्शी थे। आपको ज्ञान था कि आने वाले समय में इलाही फरमान में काफी कमी-बढ़ौतरी हो जानी है बल्कि सतगुरु जी के जीवन काल के समय ही पृथी चंद का पुत्र मेहरबान अपनी कविता लिखकर अन्त में ''नानक'' मोहर लगाकर तुकबंदी करने लग गया था। इस तरह की कविता को पढ़कर संगत भ्रम में पड़ गई थी। उनको यह पता नहीं चलता था कि सतगुरु जी का इलाही कलाम कौन सा है और मेहरबान की कविता कौन सी। क्योंकि दोनों के अन्त में ''नानक'' छाप लगी होती थी। यहां तक कि उसने पहले चार सतगुरुओं की बाणी के साथ अन्य कविता नानक लगाकर रची और एक ग्रंथ भी बना लिया था। इसका हवाला ''बंसावली नामा'' के कर्ता ने निम्नलिखित अनुसार दिया है—

मेहरबान पुत पृथीए दा कबीशरी करे।
पारसी हिंदवी संसक्रित नाले गुरमुखी पढ़े।
तिन भी बाणी बहतु बणाई॥
भोग गुरु नानक जी दा ही पाई॥८७॥
डूम लगे शब्द मीणिआं दे गावनि॥
दुया दरबार बड़ा गुरिआई दा लगे बणावनि॥
मीणिआं भी पुसतकि इक ग्रंथ बणाइआ॥
चहु पातशाहीआ दी शब्द बाणी लिख विच्च पाइआ॥८८॥

गुरु अर्जुन देव जी ने भाई गुरदास जी को सम्बोधन करके वचन किया—

वचन कीता भाई गुरदास गुरु की बाणी जुदा करीए॥
मीणे पांदे नी रला से विचि रला न धरीए॥९३॥

शुद्ध मात्र ''खसम की बाणी'' इलाही फरमान को सुरक्षित करने और मिश्रण से बचाने के लिए श्री गुरु अर्जुन देव जी ने अपनी मौजूदगी में श्री अमृतसर साहिब में रामसर साहिब के रमणीय स्थान पर बैठकर भाई गुरदास जी के मुबारक हस्त-कमलों द्वारा आदि ग्रंथ साहिब जी की सम्पादना करवाई। जिसमें आप जी ने अपने सहित पांच सतगुरु जी की बाणी और पन्द्रह भक्तों की बाणी जो पहले सतगुरुओं और स्वयं खुद श्री गुरु अर्जुन देव जी ने जगह-जगह से एकत्रित की थी और भक्त जन जो भारत वर्ष के अलग-अलग क्षेत्रों, अलग-अलग मतों, अलग-अलग कबीलों और जातियों से सम्बन्धित थे, जो प्रेम भक्ति के कारण प्रभु से अभेद हो चुके थे, जिनका आशय गुरु नानक जी के मत से मेल खाता था उन भक्तों का अनुभव भी गुरबाणी द्वारा बिना भेदभाव श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज़ किया।

ग्यारह भट्ट जो ब्राह्मण जाति से सम्बन्धित, आत्मिक खोजी और विद्वान् थे, जिन्होंने सारे भारत वर्ष का भ्रमण किया, साधुओं की मजलिसों में शमूलीअत की। जिन्होंने संन्यासियों, त्यागियों, तपस्वियों के पास जाकर तलख तजुर्बा प्राप्त किया। ब्राह्मण विद्वानों का भी वाद-विवाद होता सुना और देखा पर मन की भटकन समाप्त नहीं हुई। आखिरकार गुरु नानक पातशाह जी के मत की शोभा सिद्धान्त सुनकर गुरमत के धारणी बने। जहां उन्होंने अपना निजी अनुभव सतगुरु जी के चरणों में रखा वहाँ उन्होंने सतगुरु जी की स्तुति लिखकर हमें जिज्ञासुओं को भी प्रेरित किया कि अगर सदीवी सुख शान्ति की इच्छा है, अगर प्रभु चरणों से मिलाप प्राप्त करने की लालसा है फिर सिदक भरोसे से गुरु शरण में आकर गुरु उपदेश की कमाई करो, बेड़ा पार हो जाएगा, हमें दृढ़ करने के लिए उन्होंने अपना जीवन तजुर्बा गुरबाणी द्वारा निम्नलिखित अनुसार अंकित किया। भट्ट भिखा फरमान करते हैं —

रहिओ संत हउ टोलि साध बहुतेरे डिठे।
संनिआसी तपसीअह मुखहु ए पंडित मिठे।
बरसु एकु हउ फिरिओ किनै नहु परचउ लायउ॥

कहतिअह कहती सुणी रहत को खुसी न आयउ॥
हरि नामु छोडि दूजै लगे तिन्ह के गुण हउ किआ कहउ॥
गुरु दयि मिलायउ भिखिआ जिव तू रखहि तिव रहउ॥२॥२०॥

सवईऐ महले तीजे के, पृष्ठ १३९५

सतगुरु जी ने इन गुरमत के धारणियों, आत्मिक विद्वान् खोजियों की बाणी को भी गुरु ग्रंथ साहिब जी में पूरा-पूरा योग्य स्थान दिया।

केवल भक्तों और आत्मिक अभिलाषी विद्वान् भट्टों की ही बाणी गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज नहीं की बल्कि गुरु घर के कीर्तनीए और सिक्ख जिन्होंने "**सिखी सिखिआ गुर वीचारि**" की कमाई की और गुरु दृष्टि में परवान चढ़ गए, उन चार गुर सिखों की बाणी भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज करके देश, कौम, मज़हब, ऊंच-नीच, गुरु-चेले की दीवार और भेदभाव की दीवारों का सदा के लिए अभाव करके "**एकु पिता एकस के हम बारिक**" के कथन को अमली जामा पहना दिया।

सारी मानवता को "**एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे**" का उपदेश देने से पहले खुद उसको अमली जामा पहनाकर दर्शा दिया कि प्रभु दर में करनी प्रधान है। करनी प्रधान वाले जीवन की बाज़ी जीत कर बेग़मपुरे के वासी बन जाते हैं। बेग़मपुरे में सभी बराबर हैं। वहाँ कोई भी दोम-सेम का भेद भाव नहीं। वहाँ पहुंच कर सभी एक रूप हो जाते हैं, कोई ऊंचा-नीचा नहीं रह जाता, वहाँ तो —

काइमु दाइमु सदा पातिसाही॥ दोम न सेम एक सो आही॥

गउड़ी रविदास जी, पृष्ठ ३४५॥

की अवस्था हो जाती है। सतगुरु जी ने केवल उपदेश ही नहीं दिया बल्कि गुरु ग्रंथ साहिब जी में सभी को समानता देकर अमली तौर पर कर के दिखा दिया।

सतगुरु अर्जुन देव जी ने सारी बाणी को तीस रागों में बहुत सुन्दर पिरोकर रागी सिंहों को, राग के घरों, तालों का ज्ञान बख्शिश किया। साथ-साथ सारी बाणी के अंक जोड़ दर्ज़ किए ताकि भविष्य में कोई इस दरगाही फरमान को अपनी मर्ज़ी से घटा-बढ़ा न सके। सारी बाणी में जहाँ सतगुरु जी स्वयं अपने

मुखारविंद से उच्चारण करके भाई गुरदास जी को लिखवाई, वहाँ भाई गुरदास जी की लिखत को आप जी ने दोबारा पढ़ा जहाँ कोई मात्रा की गलती थी उसकी सुधाई करके, संकेत के तौर पर लिख दिया ''सुध कीचे'' जिस बाणी में कोई सुधाई नहीं की गई उसके पीछे 'सुध' संकेत लिख दिया। इस धुर की बाणी की सही सम्भाल करने के लिए जितनी सावधानी श्री गुरु अर्जुन देव जी ने प्रयोग की है उसको देखकर बुद्धि हैरान रह जाती है।

साहिब श्री गुरु अर्जुन देव जी के पश्चात् श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने, धीरमलियों के आदि ग्रंथ साहिब जी को देने से मना करने पर दमदमा साहिब (गुरु की काशी) ज़िला बठिंडा के स्थान पर टिकाना करके अपने दिव्य अनुभव द्वारा सारे गुरु ग्रंथ साहिब जी की, श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की बाणी लिखवाकर भाई मनी सिंह जी के हस्तकमलों द्वारा सम्पादन करवाई। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में नौवें पातशाह जी की बाणी दर्ज करने से 6 सतगुरु, 15 भक्त जन, 11 भट्ट 4 गुरसिक्ख की 31 रागों में बाणी दर्ज है।

यह सारी गुरबाणी विशुद्ध प्रभु ज्ञान, धुर दरगाह का बिना मिलावट फरमान होने के कारण धार्मिक दुनिया में अपना अलग स्थान और पहचान रखती है। ऐसा अमूल्य ईश्वरीय ज्ञान का प्रमाणिक धर्म ग्रंथ किसी भी पीर, पैगम्बर अवतार की ओर से अपनी मौजूदगी में रचकर संसार की गोद में नहीं डाला। यह मान और ऊंचे दर्जे की प्रमाणिकता केवल गुरु ग्रंथ साहिब जी को ही प्राप्त है।

◆ ◆ ◆

गुरबाणी की महिमा

जैसे परमेश्वर की महिमा वर्णन नहीं की जा सकती, वैसे प्रभु सरूप गुरबाणी की महिमा भी अपरम्पार है। सतगुरु श्री गुरु रामदास जी ने गुरबाणी महिमा वर्णन करते हुए गउड़ी राग में फरमान किया है कि गुरबाणी सच्चे प्रभु का हुक्म होने के कारण परमेश्वर का अपना सरूप है। जो सत सरूप गुरबाणी से सांझ डालेगा उसका सम्पर्क सच्चे प्रभु से जुड़ जाएगा —

सतिगुर की बाणी सति सरूपु है गुरबाणी बणीऐ॥

गउड़ी म: ४, पृष्ठ ३०४

श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज जी ने इस गुरबाणी को ''धुर की बाणी'' कहकर सम्मानित किया है। जो इस अचिंत देश की गुरबाणी के साथ जुड़ जायेगा उसकी सभी चिताएं दूर हो जायेंगी। आप जी का फरमान है—

धुर की बाणी आई॥ तिनि सगली चिंत मिटाई॥
दइआल पुरख मिहरवाना॥ हरि नानक साचु वखाना॥२॥

सोरठि म: ५, पृष्ठ ६२८

इस गुरबाणी को श्री गुरु नानक देव जी ने ''खसम की बाणी'' कहकर सम्मानित किया है —

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो॥

तिलंग महला १, पृष्ठ ७२२

हउ आपहु बोलि न जाणदा मै कहिआ सभु हुकमाउ जीउ॥

सूही महला ५, पृष्ठ ७६३

गुरबाणी प्रति श्री गुरु अर्जुन देव जी का फरमान है; हे जिज्ञासु जनो : परमात्मा जो अथाह शक्ति का मालिक है, जो सब जगहों पर परिपूर्ण होकर रमा हुआ है, उस महान् शक्ति का हुक्म (बाणी) भी सब जगह परिपूर्ण है। इस महान् हुक्म गुरबाणी को सतगुरु जी ने स्वयं सुना और स्वयं ही अपने

मुखारबिंद से उच्चारण किया है। जिन्होंने इस दरगाही फरमान ''गुरबाणी'' को सुना और कमाया है, उनका निस्तारा हो गया है। उन भाग्यशालियों को हमेशा के लिए निश्चल अडोल अवस्था प्राप्त हो गई —

गुर की बाणी सभ माहि समाणी॥
आपि सुणी तै आपि वखाणी॥
जिनि जिनि जपी तेई सभि निसत्रे
तिन पाइआ निहचल थानां हे॥

मारु महला ५, सोलहे, पृष्ठ १०७५

तथा–

बाणी बिरलउ बीचारसी जे को गुरमुखि होइ॥
इह बाणी महा पुरख की निज घरि वासा होइ॥

रामकली महला १, पृष्ठ ९३५

सतगुरु श्री गुरु अर्जुन देव जी का गउड़ी राग में फरमान है, हे साध संगत जी! हम बहुत भाग्यशाली हैं, जिनके पास ईश्वरीय ज्ञान का अमूल्य भण्डार मौजूद है। जो भी इस अमूल्य खजाने से अपनी आत्मिक सांझ बना लेगा, वह सहज स्वाभाविक ही प्रभु से मिलाप प्राप्त कर लेगा। इस अमूल्य ब्रह्म ज्ञान के खजाने का हीरे, जवाहरात, रत्नों से मूल्य नहीं आंका जा सकता। संसार का धन जैसे जैसे खर्च करें उसमें कमी होती रहती है– पर यह गुरबाणी का खजाना न खत्म होने वाला है, न इसमें कमी आने वाली है। जैसे जैसे इसको खर्च करें इसमें कमी नहीं होती बल्कि यह बढ़ता जाता है। पर इस अमूल्य खजाने से भाग्यशाली ही लाभ प्राप्त कर सकते हैं जिस पर प्रभु की बख्शिश होती है वह गुरु प्यारा ही इस अमूल्य खजाने का सांझीदार बनकर आत्मिक लाभ प्राप्त कर सकता है। सतगुरु श्री गुरु अर्जुन देव जी ने गउड़ी राग में निम्नलिखित अनुसार फरमान किया है —

हम धनवंत भागठ सच नाइ॥
हरि गुण गावह सहजि सुभाइ॥१॥ रहाउ॥
पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना॥

ता मैरै मनि भइआ निधाना ॥१ ॥
रतन लाल जा का कछू न मोलु ॥
भरे भंडार अखूट अतोल ॥२ ॥
खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ॥
तोटि न आवै वधदो जाई ॥३ ॥
कहु नानक जिसु मसतकि लेखु लिखाइ ॥
सु एतु खजानै लइआ रलाइ ॥४ ॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५, पृष्ठ १८५

आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के लिखारी, गुरमत की पूर्ण कमाई करके गुरु में पूर्ण अभेदता को प्राप्त करने वाले भाई साहब भाई गुरदास जी ने गुरबाणी की महानता को दर्शाने के लिए अनेकों पउड़ियों, सवैयों को अपनी बाणी में रचा है। उनमें से केवल एक सवैये को पढ़ें, गुरबाणी की महानता का पता चल जायेगा। गुरबाणी की महानता दर्शाने से पहले भाई साहब जी ने सांसारिक तीन उदाहरणें दी हैं। पहली उदाहरण दी है कि जिस तरह समुद्र में अनन्त हीरे, रत्न, जवाहरात, सुच्चे मोतियों के भण्डार भरे हैं पर समुद्र की दौलत समुद्र में गहरी डुबकियां लगाने वाले मरजीवड़ों को ही प्राप्त होती है।

समुद्र की तरह पहाड़ों में भी बहुत कीमती हीरे रत्न जवाहरात, नीलम, पन्ने, सोना, चांदी और पारस पत्थर हैं पर पहाड़ों की दौलत खान खोदने वाले मेहनती लोगों को ही प्राप्त होती है। जहां खानों की खुदाई करने वाले दौलत प्राप्त करते हैं, वहां रत्नों की शोभा संसार में प्रकट करते हैं।

पहाड़ों और समुद्रों की तरह जंगल भी अमूल्य दौलत के भण्डार हैं। जंगलों में चन्दन, सौधा कपूर जैसे सुगन्धित पौधे और कीमती जड़ी-बूटियां मौजूद हैं, पर गांधी (इत्र निकालने वाले) अतार लोग ही उनको प्राप्त करके जहां दौलत प्राप्त करते हैं वहां सुगन्धित इत्रों द्वारा संसार को सुगन्धी बांटते हैं।

इसी तरह श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी लोक, परलोक के रुहानियत के खजाने से भरपूर है। गुरबाणी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की दात्री है। गुरबाणी के अमूल्य खजाने का लाभ उन गुरु प्यारों को ही प्राप्त होता है जो गुरबाणी के अमूल्य खजाने को खोजते, विचारते और इस गुरबाणी पर अमल करते हैं।

आप जी का फरमान है —

जैसे तउ सकल निधि पूरन समुद्र बिखै,
हंस मरजीवा[१] निहचै प्रसादु पावई॥
जैसे पर्वत हीरा मानक पारस सिध,
खनवारा[२] खनि जग विखे प्रगटावई॥
जैसे बन बिखै मलिआगर सौधा कपूर,
सोध कै सुबासी सुबास बिहसावई॥
तैसे गुरबाणी बिखै सकल पदारथ है,
जोई जोई खोजै सोई सोई निपजावई॥५४६॥

सवैये भाई गुरदास जी

गुरबाणी गुरु का ही असली रूप है पर ज़रूरत है गुरबाणी हुक्मों को जीवन में धारण करने की, जो गुरु हुक्मों के धारणी बन जाते हैं, वह अपना लोक सुखी परलोक सुहेला (सुविधापूर्ण) कर लेते हैं।

◆ ◆ ◆

१. समुद्र में डुबकी लगाने वाला
२. खान की खुदाई करने वाला

शबद गुरु

गुरमत के अनुसार शरीर को गुरु नहीं माना गया, गुरु केवल ज्ञान है, ज्ञान शबद के माध्यम से प्रकट होता है। शबद के प्रकट करने का माध्यम शरीर है। कई बार मनुष्य माध्यम को ही गुरु मानकर माध्यम से ही चिपका रहता है पर जो शबद ज्ञान है, वहां तक पहुँचता ही नहीं है। इस शुरु की बुनियादी भूल को दूर करने के लिए ही सतगुरु जी ने बार-बार —

सबदु गुरू सुरति धुनि चेला॥ *महला १, पृष्ठ ९४३*

की अगुवाई दी है और श्री गुरु रामदास जी ने फरमाया है कि बाणी ही सिक्ख का गुरु है। गुरु का पूर्ण अस्तित्व गुरबाणी में मौजूद है। गुरबाणी अमृत रूप है। जो सिक्ख गुरबाणी को अपने हृदय में बसा लेता है। जो गुरबाणी हुक्म करती है उसकी श्रद्धा भावना से कमाई करता है, उस सिक्ख को गुरु यकीनन संसार समुद्र से पार कर देता है —

बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे।
गुरू बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे॥५॥

नट महला ४, पृष्ठ ९८२

एक बार भाई पृथा और भाई खेड़ा, सोइनी जाति से क्षत्रीय, करतारपुर सतगुरु नानक पातशाह जी के चरणों में हाज़िर हुए। संगत में बैठते ही मन एकाग्र हो गया। साहिबां ने वचन किया, ''भाई पिृथा, और खेड़ा! अपने मन की कामना कहिए। दोनों ने हाथ जोड़कर विनती की, जी सच्चे पातशाह! सांसारिक पदार्थों की कामना खत्म हो। तेरे चरणों की शरण रहें और सदा हजूर का दीदार प्राप्त हो।'' साहिबां ने वचन किया, भाई पिृथा और भाई खेड़ा! हमारे चरण हमेशा संगत में रहते हैं। आप ने संतों-गुरमुखों की टहल करनी और दोनों समय (सुबह-शाम) धर्मशाला जाना। गुरु और परमेश्वर में

भेद नहीं समझना। शबद हमारा हृदय है, अगर शबद से जुड़ोगे फिर कभी भी बिछुड़ना नहीं पड़ेगा। शरीर सगुण है, अगर शरीर से मिलोगे फिर बार-बार बिछड़ोगे और बार-बार मिलोगे। इसलिए ज़रूरत है स्थूल माध्यम का सत्कार करते हुए, सूक्ष्म ज्ञान रूप शबद गुरबाणी से जुड़कर आत्मिक आनन्द और स्थाई मिलाप प्राप्त करें।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी मानवता के लिए आत्मिक आहारी भोजन का थाल परोसकर सतगुरु जी ने बख्शिश किया है। जिसमें सत्, संतोख, शुभ विचार और प्रभु नाम का आहार प्रदान किया है। जो जिज्ञासु हर समय "**नित नित रखु उरि धारो**" के हुक्म की निरन्तर पालना करेगा उसका सांसारिक अज्ञान भ्रम (तम) कुछ भी बिगाड़ नहीं सकेगा। उसकी आत्मा शबद गुरु से जुड़कर संसार भवजल से पार हो जाएगी और उसे सारा ब्रह्म का पसारा ही दृष्टि में आने लगेगा। सतगुरु अर्जुन देव जी का फरमान है —

थाल विचि तिंनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो॥
अंम्रित नामु ठाकुर का पइओ जिस का सभसु अधारो॥
जे को खावै जे को भुंचै तिस का होइ उधारो॥
एह वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरि धारो॥
तम संसारु चरन लगि तरीऐ सभु नानक ब्रहम पसारो॥१॥

मुंदावणी महला ५, पृष्ठ १४२९

◆ ◆ ◆

सिख धर्म का अकीदा

सिख धर्म के अकीदे के अनुसार श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दस सतगुरुओं की आत्मिक जोत हैं। जो सदा-सदा के लिए जिज्ञासुओं को आर्थिक परमार्थिक अगुवाई बख्शिश कर रहे हैं और करते रहेंगे। गुरबाणी निरोल परमेश्वर जी का शुद्ध ज्ञान है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब, वाहिगुरु जी के हुक्म की आवाज़ और निरंकारी धुन है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में रूप-रंग, चक्र-चिन्ह और वर्ण जाति से निर्लिप्त अमूर्त-मान का प्रत्यक्ष चित्रण किया है। गुरबाणी से शुभ दैवीय गुणों का चश्मा लगातार बह रहा है और जिज्ञासु को इन गुणों को धारण करने और लाभ प्राप्त करने के लिए लगातार बुलावा दे रहा है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी सदीवी सुख-शान्ति का स्रोत है जो बिना भेदभाव अभिलाषियों को शान्ति प्रदान किए जा रहा है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्रभु को मिलने के लिए विरह विनती, निर्मल भय, प्यार, निर्मल ज्ञान, श्रद्धा, भावना प्रेमा-भक्ति, सेवा-सिमरन, परोपकार, सदाचार का ईश्वरीय ज्ञान और इलाही फरमान है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब एक लगातार प्रभु संगीत काव्य का रसमयी प्रवाह चल रहा है। गुरु ग्रंथ साहिब, आत्म-मस्ती, आत्मिक रस और प्रभु लीनता के सरूर का एक अमूल्य खजाना है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब सतगुरु जी और प्यारे भक्तों और सतगुरुओं का आत्मिक अनोखा इतिहास है। जिसके मन में सतगुरु जी और भक्तों के हृदय को पढ़ने और पड़ताल करने की लालसा हो, वह प्यार श्रद्धा और भावना की आँखों से श्री गुरु ग्रंथ साहिब को पढ़े, उसको इस बाणी से सतगुरु जी और भक्तों के प्रत्यक्ष दर्शन अवश्य प्राप्त होंगे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब निरंकार का प्रत्यक्ष दर्शन है क्योंकि सतगुरुओं और भक्तों का अहम् रहित निर्मल हृदय होने के कारण निरंकार और निरंकार के ज्ञान का हू-ब-हू चित्रण उनके हृदय में हुआ है। जैसे किसी निर्मल शीशे में मूर्त साफ दिखाई

देती है। गुरु ग्रंथ साहिब, प्रभु जी का प्रत्यक्ष जहूर है, इसमें बिल्कुल भी धुंधलापन या माया का मिश्रण नहीं है बल्कि गुरबाणी तो जिज्ञासु के हृदय से माया की गन्दगी हटाकर आत्मा को पवित्र करती है। सच्ची बाणी तो प्रभु में अभेद कराने की सामर्थ्य रखती है —

वाहु वाहु पूरे गुर की बाणी॥
पूरे गुर ते उपजी साचि समाणी॥१॥ रहाउ॥

सूही महला ३, पृष्ठ ७५४

इस बाणी का जिसने जाप किया उनका निस्तारा (पार-उतारा) हो गया, वहाँ उनकी आत्मा को सदीवी अचल स्थान की प्राप्ति हो गई। साहिबां का फरमान है—

जिनि जिनि जपी तेई सभि निसत्रे तिन पाइआ निहचल थानां हे॥८॥

मारु महला ५, सोलहे, पृष्ठ १०७५

गुरबाणी तो निरंकार का अपना सरूप है, निरंकार और बाणी ओत-प्रोत हैं—

वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु अवरु न कोइ॥

सलोक महला ३, पृष्ठ ५१५

गुरसिख के लिए गुरबाणी ही उसके जीवन का आधार है —

मै गुरबाणी आधारु है गुरबाणी लागि रहाउ॥

रागु सूही म: ४, पृष्ठ ७५९

◆ ◆ ◆

सतगुरुओं ने स्वयं गुरबाणी का सत्कार किया और करने की ताकीद की

जिस समय सतगुरु ग्रंथ साहिब जी की आदि बीड़ के रूप में सम्पादन मुकम्मल हो गया, श्री गुरु अर्जुन देव जी ने निरंकार सरूप गुरबाणी —

वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु अवरु न कोइ॥
वाहु वाहु अगम अथाहु है वाहु वाहु सचा सोइ॥

सलोक महला ३, पृष्ठ ५१५

गुरबाणी का सत्कार करने के लिए ताकीद की और निरंकार सरूप बाणी का स्वयं सत्कार करके दर्शाया। भाद्रपद एकम् सम्वत् 1661 (14 अगस्त 1604 ई०) का दिन नियत करके, नगर कीर्तन के रूप में गुरु अर्जुन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का सरूप बाबा बुढ्ढा जी के सिर पर सुशोभित करके, स्वयं सारे रास्ते गुरु ग्रंथ साहिब जी को चौर करते पैदल रामसर साहिब से चलकर श्री हरिमन्दिर साहिब जी पहुँचे, जिस जगह स्वयं गुरु अर्जुन देव जी गुरता गद्दी पर विराजते हैं वहां सुन्दर पीढ़ा साहिब सुशोभित करके श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश करवाया। प्रकाश करने की सेवा बाबा बुढ्ढा जी ने निभाई। प्रकाश करते समय शबद गुरु का जो हुक्म प्राप्त हुआ संगत ने बड़े प्यार से श्रवण करके शीश झुकाया था —

संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु करावणि आइआ राम॥
धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अंम्रित जलु छाइआ राम॥
अंम्रित जलु छाइआ पूरन साजु कराइआ सगल मनोरथ पूरे॥
जै जै कारु भइआ जग अंतरि लाथे सगल विसूरे॥
पूरन पुरख अचुत अबिनासी जसु वेद पुराणी गाइआ॥
अपना बिरदु रखिआ परमेसरि नानक नामु धिआइआ॥

सूही महला ५, पृष्ठ ७८३

इस सारी वार्ता को गुरबिलास पातशाही छठी के कर्ता ने निम्नलिखित अनुसार वर्णन किया है —

बुढो को श्री गुरू कहा सीस आपने धारि॥
गुरु ग्रिंथ अति प्रेम सो मन में सांत विचारि॥२०॥
चौपाई॥ सति वचन बुढे मुखि गाइ॥
गुरू ग्रिंथ सिर लयो उठाइ॥
श्री गुर चौर आप कर[१] धारयो॥
बजे संख धुनि वार न पारयो॥

गुर बिलास पातशाही ६, पृष्ठ १२२

तथा–दोहरा॥ एक घरी निसि जब रही श्री गुर आगया पाइ॥
साहिब बुढे अदब सों खलोयो ग्रिंथ बनाइ॥२५॥
आपि चौर श्री गुरु करत बुढे लई अवाज़॥
एक चित संगति सुनै सभि मनि शांत बिराज॥२६॥

गुर बिलास पातशाही ६, पृष्ठ १२२

गुरु ग्रंथ जी से हुक्म लेने के पश्चात् श्री गुरु अर्जुन देव जी ने संगत प्रति-वचन किया कि एक समय हर एक जगह पर सतगुरु जी के शारीरिक दर्शन नहीं हो सकते। श्री गुरु ग्रंथ साहिब मेरा हृदय है, जो सब जगह और हर समय में हर जगह दर्शन और उपदेश देकर संगत का युगों युगान्तरों तक भला करते रहेंगे —

श्री गुरु केर सरीर जउ सभि थान समै सभि न दरसै॥
ग्रिंथ रिदा गुर का इह जानहु उतम है सब काल रहै॥

और साथ ही संगत को सम्बोधित करके उच्चारण किया साध संगत जी! मेरे शरीर से भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का अदब सत्कार ज्यादा करना है क्योंकि यह अकाल पुरख का रूप है —

मेरे सरुप ते याते है दीरघ॥ साहिब जानि अदाइब कै है॥

रात को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का सुखासन करते समय फरमान किया कि जिस कोठरी में हम विश्राम करते हैं, उस कोठरी में पलंग पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का सुखासन करना है —

---

१. हाथ में।

जिस कोठरी रहिन हमारा॥
तहा निवासु करहु जुतिमान॥
नवीन पलंघ गुर अपनो दीनो तबै डसाइ॥
सेजबंद कसि प्रेम सों ग्रिंथ बिसरामु कराइ॥७६॥

गुर बिलास पातशाही ६, पृष्ठ १२६

बाबा बुढ्ढा जी के पूछने पर कि आप जी किस जगह विराजोगे, सतगुरु जी ने उत्तर दिया, श्री ग्रंथ जी पास हम धरती पर विश्राम करेंगे। इसलिए सतगुरु जी का हुक्म मानकर आप का बिस्तर धरती पर कर दिया गया। सतगुरु जी उम्र भर, गुरु ग्रंथ साहिब जी के सत्कार में भूमि पर ही आसन लगाते रहे —

भूमि सैन नितप्रति करैं गुर ग्रिंथ के पासि॥
गुर ग्रिंथ भगवंत सम जानै करि अरदासि॥७७॥

गुर बिलास पातशाही ६, पृष्ठ १२७

श्री गुरु अर्जुन देव जी ने धुर की बाणी का स्वयं सत्कार करके जिज्ञासुओं के लिए गुरबाणी का सत्कार करने की नींव डाली। उपरान्त सातवें पातशाह श्री गुरु हर राय साहिब जी ने तो संगत को स्पष्ट हुक्म कर दिया था —

जिन भै बाणी अदब न धारा॥ जाणहु सो सिख नहीं हमारा॥

आप जी का हुक्म था कि बाणी अन-भय (भय-रहित) देश की है। यह बाणी गुरु का अनुभव है, गुरु का हृदय है, इसका अदब करना बहुत ज़रूरी है। गुरुबाणी संसार भवजल से पार करने के लिए जहाज़ है —

जो सिख गुरबाणी भै करै॥ बिन प्रयास भव सागर तरै॥

अदब सत्कार का रास्ता ही प्रभु दर तक पहुँचाता है। कारण कार्य की यह शृंखला है। भय बिना भक्ति नहीं हो सकती, भक्ति बिना ज्ञान सम्भव नहीं, ज्ञान बिना मुक्ति नहीं, मुक्ति बिना आनन्द नहीं, आनन्द बिना प्रभु रस प्राप्त नहीं हो सकता। आप का वचन था —

जेता अदब करीए उह थोड़ा है।
इह निज सरुप है॥ इसनूं जानण वाला मेरे पद नूं प्राप्त होवेगा॥

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने तो ज्योति जोत समाने से पहले नांदेड़ (सचखण्ड

हजूर साहिब) में 7 अक्तूबर 1708 ई० वाले दिन श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश करवा कर समूह संगत को एकत्रित कर भरे दीवान में गुरता गद्दी की रस्म श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को करते हुए, पांच पैसे और नारियल श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के आगे रख, माथा टेककर, तीन परिक्रमा कर, अपनी आत्मिक जोत गुरु ग्रंथ साहिब जी में समा दी और समूह संगत प्रति हुक्म किया कि खालसा जी !

आगिआ भई अकाल की तबै चलायो पंथ॥
सब सिखन को हुकम है गुरु मानीओ ग्रंथ॥
गुरू ग्रंथ को मानीओ प्रकट गुरां की देह॥
जो प्रभ को मिलबो चहे खोज सबद मैं लेह॥
सब गुरु परगट भए पूरन हरि अवतार॥
जगमग जोत बिराजही श्री गुरु ग्रंथ मझार॥
जो दरसयो चहि गुरु को सो दरसै गुर ग्रंथ॥
पढ़ै सुनै स्वारथ लहै परमारथ को पंथ॥
वाहिगुरु गुरु ग्रंथ जी ऊभै जहाज उदार
जो सरधा कर सेवहै सो उतरै भव पार॥11॥

पंथ प्रकाश गि० ज्ञान सिंह भाषा विभाग, पृष्ठ ३५३

मम आगिआ सब ही सुनो सति बात निरधार॥
गुरु ग्रंथ सम मानिओ भेद न कोऊ विचार॥४०९॥
गुरु ग्रंथ कलयुग भयो श्री गुरु रूप समान॥
दस पातशहीआ रूप इह गुरु ग्रंथ जी जान॥४१२॥
गुरु दरस जिह देखणा श्री गुरु ग्रंथ दरसाइ॥
बात करन गुरु जो चहे पढ़े ग्रंथ मन जाइ॥४१३॥

भाई नंद लाल जी ने कलगीधर पातशाह जी को हजूर के दर्शनों के सम्बन्ध में पूछा कि हे पातशाह ! आप जी के पावन सरूप के किस तरह दर्शन होंगे सतिगुरु जी ने बचन किया कि नंद लाल जी–

तीन रूप है मोहि के सुनहु नंद चित लाइ॥
निरगुण सरगुण गुरशब्द कहो तोहि समझाइ॥१०॥

चौपाई

एक रूप तिह[१] गुण ते परै॥ नेत नेत जिह निगम[२] उचरै॥११॥
घटि घटि बिआपक अंतरजामी॥ पूर रहिओ जिउ जल घट भानी॥१२॥
दूसर रूप ग्रंथ जी जानहु॥ उन के अंग मेरे करि मानहु॥१३॥
जो सिख मम दरशन की चाहि॥ दरशन करै ग्रंथ जी आहि॥१८॥
जो मुझ बचन सुणन की चाहि॥ ग्रंथ जी पढ़ै सुने चित लाइ॥१९॥
मेरा रूप ग्रंथ जी जान॥ इनमें भेद न रंचक मान॥२०॥
तीसर रूप सिख है मोर॥ गुरबाणी रति जिह निस भोर॥२१॥
विसाहु प्रीति गुर सबद जु धरै, गुर का दरसन नित उठ करै॥२२॥
गिआन शबद गुरु सुणै सुणाइ, जपु जी जापु पढ़े चित लाइ॥२३॥
गुरू दवार का दर्शन करै॥ पर दारा का त्याग जो करै॥२४॥
गुर सिख सेवा करे चित लाइ॥ आपा मन का सगल मिटाइ॥२५॥
इन करमन मै जो प्रधान॥ सो सिख रुप मेरा पहचान॥२६॥

सतगुरु जी ने सदा के लिए अपनी आत्मा गुरु ग्रंथ साहिब जी में और शरीर पंथ में (समो) (अभेद कर) दिया।

◆ ◆ ◆

१. तीन गुण रजो, तमों, सतो से दूर २. जिन्हें वेद भी नेती (बेअन्त-2) कहते हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब काव्य और भाषाओं का भण्डार

पुरातन जितने भी धार्मिक ग्रंथ हैं, वे अधिकतर वार्ता, कहानी के रूप में हैं। जो कविता रूप में हैं वे भी गुरु ग्रंथ साहिब जी की काव्य शैली का मुकाबला नहीं कर सकते। जहां गुरु ग्रंथ साहिब जी की अधिकतर बाणी उस समय की आम बोली संतभाषा में है, वहां गुरु ग्रंथ साहिब जी में ब्रज भाषा, हिन्दी, भट्ट भाषा, गाथा, सहसक्रिता, मराठी, लहंदी, पंजाबी, रेखता[१], अरबी, फारसी और अनन्त क्षेत्रों की भाषाओं का शब्द भण्डार है।

सतगुरु जी और भक्तों ने बिना भेदभाव जिस तरह की कोई बोली समझता था, उसी भाषा में ईश्वरीय उपदेश उसको देकर प्रभु नाम से जोड़ा। उस समय के तरह-तरह के गीत, लय, धारणाएं जो लोगों में हरमन प्यारे हो चुके थे, सतगुरुओं और भक्तों ने उन लोक-धारणाओं को ही आधार बनाकर उसमें बाणी रचकर लोकाई को सत् धर्म का उपदेश बख्शिश किया। गुरबाणी में जो उस समय की लोक-प्रिय काव्य के रूप में प्रयोग हुए उनमें से विशेष निम्नलिखित है —

आरती	अंजली	अलाहणीआ	सोहिला	सद
करहले	काफी	थिती	घोड़ियाँ	चउबोले
छंत	डखणे	दिन रैण	पहरे	पटी
बारह माहा	बावन अखरी	बिरहड़े	मंगल	रुति
वणजारा	वारां	वार सत।		

सतगुरु जी ने 22 वारां रचकर उस समय की प्रचलित लोक प्रसिद्ध सूरमों की वारों की नौ ध्वनियां देकर संगीत देकर रागी सिंहों को गुरबाणी कीर्तन करने के लिए प्रेरणा की।

◆ ◆ ◆

१. मिश्रित बोली (फारसी, अरबी-तुर्की का सुमेल।)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में रागों की महानता

सतगुरुओं और भक्तों ने सारी गुरबाणी रागों में उच्चारण की और रागों में गायन करने की हिदायत की है। संगीत मन को एकाग्रता बख्शिश करके विस्मादी दशा प्रदान करता है। संगीत-कार और नाद रसिये तो यहां तक कहते हैं कि सारे संसार का मूल नाद है। नाद से ही सारी सृष्टि पैदा हुई है। नाद (धुन) से ही अक्षर और अक्षरों से वर्ण, वर्ण से पद और पदों से बोली (भाषा) अस्तित्व में आती है। इसलिए गुरबाणी में भी कीर्तन को सर्वोत्तम मान कर ''कीरतनु निरमोलक हीरा'' फरमाया है।

सारी गुरबाणी इकतीस रागों में निम्नलिखित अनुसार श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज की गई है —

सिरीराग	माझ	गउड़ी	आसा	गूजरी
देवगंधारी	बिहागड़ा	वडहंस	सोरठ	धनासरी
जैतसरी	टोडी	बैराड़ी	तिलंग	सूही
बिलावल	गोड	रामकली	नट	माली गउड़ा
मारू	तुखारी	केदारा	भैरब	बसंत
सारंग	कानड़ा	मलार	कल्याण	प्रभाती

जय-जयवंती।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी राग कला का अनूठा और विलक्षण भण्डार है। श्री गुरु अर्जुन देव जी ने रागों को अत्यंत महानता दी है। आप जी रामकली की वार में फरमान करते हैं —

धंनु सु राग सुरंगड़े आलापत सभ तिख जाइ॥
धंनु सु जंत सुहावड़े जो गुरमुखि जपदे नाउ॥

सलोक म: ५, पृष्ठ ९५८

◆ ◆ ◆

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में विषय-वस्तु

सारे श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में विषय वस्तु न इतिहास है, न मिथिहास है, न ही कर्म काण्ड और उपासना की विधियां हैं बल्कि भ्रम, वहमों, कर्मकाण्डों का खण्डन ज़रूर है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में केवल और केवल सच है —

1. सच क्या है ?
2. सच का सरूप क्या है ?
3. सच की प्राप्ति के साधन कौन से हैं ?
4. जिन्होंने सच प्राप्त कर लिया, उनकी अवस्था क्या है ?
5. जिन्होंने सच प्राप्त नहीं किया, उनकी अवस्था क्या है ?
6. सच की प्राप्ति में क्या रुकावटें हैं ? उनको दूर करने का हल क्या है?

सारी गुरबाणी मनुष्य को सच्चा और सम्पूर्ण मनुष्य बनने के लिए प्रेरित करती और मार्ग दर्शाती है। चाहे सारी गुरबाणी लम्बी है पर लगातार गुरबाणी पढ़ते कोई आलस-थकान नहीं होती बल्कि गुरबाणी लगातार एक रस और आनन्द प्रदान करती प्रभु के नज़दीक ले जाती है। ईर्ष्या-द्वेष की जलन को मारकर मन को शान्ति प्रदान करती है। इसलिए माझ राग में साहिब गुरु अर्जुन देव जी ने फरमान किया है —

अंम्रित बाणी हरि हरि तेरी ॥ सुणि सुणि होवै परम गति मेरी ॥
जलनि बुझी सीतलु होइ मनूआ सतिगुर का दरसनु पाए जीउ ॥

माझ महला ५, पृष्ठ १०३

गुरबाणी एक अटूट अमृत का प्रवाह है। गुरबाणी प्रभु के चू -चहे रंग में रंगी हुई है। जो बाणी से जुड़ता है, उसकी आत्मा को भी रंग चढ़ा देती है।

गुरबाणी द्वारा ही कर्ता पुरख का दीदार नसीब होता है। गुरबाणी से करतार का स्पर्श मिलता है और सदीवी आनन्द, खेड़ा प्राप्त होता है। गुरबाणी प्रभु परमात्मा में अभेदता करवा देती हैं। गुरबाणी पढ़ने और नाम सिमरन करने

वाले के यमदूत भी नज़दीक नहीं आते। इसलिए गुरबाणी को हमेशा हमेशा के लिए हृदय में बसाए रखना चाहिए। श्री गुरु अर्जुन देव जी का फरमान है —

हमारी पिआरी अंम्रित धारी
गुरि निमख न मन ते टारी रे ॥१ ॥ रहाउ ॥
दरसन परसन सरसन हरसन
रंगि रंगी करतारी रे ॥१ ॥
खिनु रम गुर गम हरि दम नह जम
हरि कंठि नानक उरि हारी रे ॥२ ॥५ ॥१३४ ॥

आसा महला ५, पृष्ठ ४०४

◆ ◆ ◆

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में ब्रह्माण्ड प्रसार के संकेत

जहां सारी गुरबाणी में सच से जुड़ने की प्रेरणा है, सच्चा बनने के लिए मार्ग दर्शाया है, सच के सोहले गाए हैं। सच्चों की अवस्था बयान करके झूठों को पड़ने वाली लानतों से बचने के लिए प्रेरित किया है वहां उस समय प्रकृति के गहन भेद जानने के स्थूल साधन ईजाद न होने के कारण मनुष्य ने अज्ञानतावश अपनी सीमित बुद्धि से जो गलत धारणाएं बना ली हुई थीं, सतगुरु जी ने अपनी दिव्य दृष्टि से सहज ही असलीयत को मानवता के सामने रखकर लोकाई को अज्ञानता के भ्रम से निकालने का सार्थक उपाय किया।

जैसे कि उस समय सूर्य चन्द्रमा को देवता मानकर लोग पूजते थे। लोगों को यकीन था कि तीन या चौदह तबकों के पश्चात् कुछ भी नहीं है। धरती भी एक ही है पर गुरु नानक पातशाह जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पहली बाणी जपुजी साहिब में बहुत दिलेरी के साथ असलीयत को दर्शाया कि सूर्य चन्द्रमा एक-एक ही नहीं गिनती से बाहर पता नहीं कितने चन्द्रमा और कितने सूर्य हैं। कोई गिनती नहीं कर सकता और गिनती से परे कर्म-भूमियाँ (धरती) हैं। अनन्त की रचना अनन्त है। आप जी ने फरमान किया —

केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस॥
केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस॥

जपुजी साहिब,पृष्ठ ७

आकाश या पाताल कोई तीन या चौदह नहीं, लाखों ही पाताल और लाखों ही आकाश हैं। लाखों कहकर भी गिनती सीमित नहीं की जा सकती। अनन्त का पसारा भी अनन्त है —

पाताला पाताल लख आगासा आगास॥
ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात॥ *जपुजी साहिब ,पृष्ठ ५*

अनन्त की रचना की कोई सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। परमाणु यंत्रों के आविष्कार, मिज़ाइल, रॉकेट आदि के रूप में कल की बातें हैं। पचास साठ साल पहले परमाणु यंत्रों की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी पर सतगुरु जी ने पांच सौ साल पहले परमाणु यंत्रों का संकेत देकर फरमान किया है कि आने वाले समय में मनुष्य परमाणु के बने यंत्रों से एक आँख से झपकने से आकाशों-पातालों, दीपों लौ, मण्डलों में घूम फिर कर आने की सामर्थ्य वाला हो भी जाए, फिर भी मनुष्य सुखी नहीं हो सकता। सुख केवल गुरु की शरण प्राप्त करने से मिलना है। श्री गुरु अर्जुन देव जी का फरमान है —

परमाणो परजंत आकासह दीप लोअ सिखंडणह॥
गछेण नैण भारेण नानक बिना साधू न सिध्यते॥२॥

महला ५, गाथा, पृष्ठ १३६०

संसार की उत्पत्ति प्रति वैज्ञानिक डार्विन की थ्यौरी थोड़ा समय पहले ही लोगों के सामने आई है पर सतगुरु नानक देव जी ने पांच सौ साल पहले अपने मुखारविंद से गुरबाणी में अंकित किया है कि एक सच्चे परमेश्वर जी से धुधूंकार की अवस्था से पवन (गैस) पैदा हुई। पवन के पश्चात् पानी अस्तित्व में आया। पानी से ही सारी सृष्टि पैदा हुई है और सारी सृष्टि में प्रभु स्वयं समाया हुआ है। साहिब गुरु नानक पातशाह जी ने फरमान किया है —

साचे ते पवना भइआ पवनै ते जलु होइ॥
जल ते त्रिभवणु साजिआ घटि घटि जोति समोइ॥

सिरीरागु महला १, पृष्ठ १९

थोड़ा समय पहले वैज्ञानिक यह मानते थे कि केवल धरती घूमती है। सूर्य चन्द्रमा एक जगह ही टिके हुए हैं पर सतगुरु जी ने सूर्य चन्द्रमा, धरती, नक्षत्रों के करोड़ों मील घूमने के संकेत गुरबाणी में पहले ही दिए हैं, जिसको सांईस ने अब तसलीम किया है —

भै विचि सूरजु भै विचि चंदु॥ कोह करोड़ी चलत न अंतु॥

सलोक महला १, पृष्ठ ४६४

◆ ◆ ◆

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी प्रति विद्वानों के विचार

जहां आपने पिछले पृष्ठों पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की महानता क्यों ? श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के सम्पादन की ज़रूरत क्यों पड़ी और गुरबाणी का सत्कार क्यों करना है ? सिख धर्म का विश्वास क्या है ? आदि शीर्षक में पढ़ा है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी सुखी, सहज, सुहेला सफल जीवन जीने का मार्ग दर्शाते हैं, वहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब, राग, काव्य और भाषाओं के अद्‌भुत भण्डार हैं। गुरु ग्रंथ साहिब जी में सहज ही सतगुरुओं और भक्त जनों के प्रकृति के गहन भेदों के प्रति ज्ञान बख्शिश किया है जो आज के वैज्ञानिक युग में अपनी नई जगह रखता है। जैसे-जैसे विज्ञान तरक्की करता है, बाकी धर्म साईंस की कसौटी पर पूरे नहीं उतरते पर गुरु ग्रंथ साहिब जी को दिखा और विलक्षण और निखर कर साईंस को पड़ताल करने के लिए चैलेंज करती हैं जो कुछ तुमने देखा और पड़ताल किया है, यह समुद्र के किनारे से कौड़ियां और घोंघे ही तुम्हारे हिस्से में आए हैं, अनन्त की रचना और अनन्त है। कितनी कर्म-भूमियां, कितने सूर्य चन्द्रमा, ध्रू ब्रह्मण्ड, परे से परे जिनका संकेत तुम्हें दिया है। ढूंढने का यत्न करो पर इसे खोजने में सफलता प्राप्त नहीं कर सकोगे।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की महिमा कथन करने से बड़े-बड़े विद्वान् और धार्मिक शख्सियतें भी नहीं रह सकीं। वे लोग जिन्होंने पदार्थवाद का अध्ययन किया, फिलास्फी लिखी, जीवन को कुदरत के कानून कायदे में घड़ा, इतिहास पढ़े गौर किया और लिखे। जिन्होंने संसार के धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन किया है, आखिर निष्पक्ष होकर गुरु ग्रंथ साहिब जी की अटल सच्चाई उनको कबूल करनी पड़ी। उन्होंने आध्यात्मिक, ऐतिहासिक और उच्च कोटि के

विद्वानों, जिनका सारी लोकाई सिक्का मानती है और जिन्होंने गुरु ग्रंथ साहिब जी की गुरबाणी शिक्षा को धुर अन्दर से पड़ताल किया है, उनके निम्नलिखित विचार, राय और टिप्पणियाँ पढ़ने का यत्न करेंगे ताकि जो हमें गुरु साहिब जी के महान् सिद्धान्त प्रति कुछ ज्ञान हो सके —

प्रोफैसर पूर्ण सिंह जी

प्रो० पूर्ण सिंह जी के विचारों के अनुसार पंजाब और पंजाबी जीवन की रूह-आत्मा गुरु नानक देव जी की बाणी है। पंजाब का पत्ता-पत्ता बाणी गा रहा है। गुरबाणी पंजाब की जान है। गुरबाणी के सहारे ही सारी व्यावहारिक खेल चल रही है। हम इस बाणी से सजे हैं। यह हमारा करतार है। हमारी रगों और दिलों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पवित्र खून चलता है। सिख को गुरबाणी साधारण साहित्य रूप में नहीं दिखाई देती, हम गुरबाणी के बच्चे हैं। यह हमारा जीवन आधार है। हम इस बाणी के बिना जी ही नहीं सकते।

पूर्ण सिंह की वार्तक, संपा: म०स० रंधावा, पृष्ठ १५५

भाई वीर सिंह जी

भाई साहब भाई वीर सिंह जी जो गुरमत साहित्य के पितामह और गुरु से जुड़े आत्म रसिये थे, जिन्होंने अपने जीवन का आधार गुरबाणी और नाम को बनाया हुआ था, वह सच्चाक्षी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की भूमिका में अपना अनुभव निम्नलिखित अनुसार लिखते थे —

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दस पातशाहियों की जोत, वाहिगुरु जी का शुद्ध ज्ञान है। सारा गुरु ग्रंथ साहिब एक लगातार चाल, एक लगातार रूप, एक लगातार धुन, एक लगातार अमूर्त, मूर्ति है जिसमें विरह, निर्मल भाव, ज्ञान, सेवा श्रद्धा प्यार प्रेमा भक्ति और अनेक तरंगें हैं। इसमें निरन्तर संगीत, एक निरन्तर काव्य रस, एक निरन्तर प्रकाश, निरन्तर रस मस्ती, रस झूम, रस सरूर, रस लीनता का दर्शन है। यहीं गुरु नानक का हृदय है यही उनका इतिहास

और यही उनका इलाही ज्ञान है। गुरु का हृदय है और ऐसे उनका रूप है। (सच्चा श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी)

स्वामी रामतीर्थ दण्डी संन्यासी

स्वामी जी धर्म और भारतीय संस्कृति के महान् दार्शनिक और महान् स्कालर थे, जिन्होंने वेदों, पुराणों, स्मृतियों, उपनिष्दों की खोज करके अनेक पुस्तकें लिखीं। जब आपने गुरु ग्रंथ साहिब जी का अध्ययन किया तब आप ने फरमाया कि ''जीवन भर मैंने साधु-सन्तों की संगत की, तप साधना की और तीर्थ भ्रमण किया। अन्त में इसी निश्चय पर पहुँचा हूँ कि जो कुछ गुरु घर में है उससे उत्तम अन्य कहीं नहीं।'' आप जी ने सिख धर्म की जीवन-जाच का अध्ययन करके एक पुस्तक लिखी ''सर्वोत्तम ग्रंथ आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब''। आप जी लिखते हैं कि ''गुरु ग्रंथ साहिब जी की गुरबाणी महा कल्याणकारी बाणी है क्योंकि इसका उपदेश किसी एक वर्ग के लिए नहीं बल्कि समूह मानवता के लिए है।'' (सर्वोत्तम आदि ग्रंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ ४०)

डॉ० राधा कृष्णन

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के गहन अध्ययन के पश्चात् भारत के राष्ट्रपति डा० राधा कृष्णन् ने अपने विचार लिखते फरमाया है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब सभी पीरों, भक्तों, गुरुओं की जीती-जागती आवाज़ है। श्री गुरु अर्जुन देव जी ने सत्य फरमान किया है, ''पोथी परमेश्वर का थान'' शब्द जो ग्रंथ रूप में है, इसमें परमात्मा का निवास है। गुरु ग्रंथ साहिब रहस्यवादी वलवलों का विशाल भण्डार है। परमात्मा की प्राप्ति के अनुभव का गहरा और निजी प्रकटावा है। इसमें ईश्वर प्यार और विस्मादयुक्त शब्द हैं

(डा० राधा कृष्णन् विचार दर्पण, पृष्ठ ३५९)

डॉ० बी० आर अम्बेडकर

भारत के महान् सपूत और दलितों के मसीहा डा० अम्बेडकर ने 12.4.1934 को सर्व हिन्द शिरोमणी सिख प्रचार कांफ्रेंस में गुरु ग्रंथ साहिब जी प्रति अपनी श्रद्धा भेंट करते फरमाया था कि दो मुख्य कारणों के कारण सिख धर्म हमारा अच्छा ध्यान आकर्षित करता है। पहला यह कि सिख धर्म उन लोगों के लिए जो शान्ति और मान सत्कार चाहते हैं, एक रूहानी घर है। दूसरा गुरु ग्रंथ साहिब मेरे लिए एक रूहानी मार्गदर्शक है। मैं आशा करता हूँ कि जो चीज़ मेरे लिए अच्छी है वे मेरे शेष भाईयों के लिए भी अच्छी होगी। हम हिन्दुओं की धार्मिक और सामाजिक असमानता से बहुत परेशान हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी एक जाति-पांति से रहित समानता का समाज सृजन करने की शिक्षा प्रदान करते हैं। (गुरुद्वारा गजट १९३६, पृष्ठ १९)

श्री रणबीर (जालन्धर)

मिलाप अखबार के सम्पादक और प्रसिद्ध विद्वान् श्री रणबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी प्रति अपनी राय देते हुए लिखते हैं कि जो भी व्यक्ति श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज इलाही बाणी का पाठ करता है, उसकी अन्तरात्मा को गुरबाणी झिंझोड़ कर रख देती है। कोई भी दुनियावी क्षेत्र इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। कोई भी ऐसी गहराई नहीं जहां तक इस धुर की बाणी की पहुँच न हो सके। गुरबाणी एक ऐसी चिंगारी हमारे दिलों में प्रचण्ड करती है जो बुझे हुए दिलों को फिर से रोशन कर देती है और टूटे हुए दिलों को शक्ति प्रदान करती है। (सिख रिव्यू दिसम्बर 1981)

अखलाक हुसैन देहलवी

आप श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रति अपनी श्रद्धा भेंट करते खोज दर्पण में लिखते हैं, कि पवित्र गुरु ग्रंथ साहिब सिख धर्म का ही सत्कारयोग्य ग्रंथ नहीं

बल्कि सारे हिन्दुस्तान का सबसे पहला सैकुलर ग्रंथ है। गुरु ग्रंथ साहिब जी से निजी पहचान और ईश्वरीय पहचान की बहुमूल्य दात प्राप्त होती है। गुरु ग्रंथ साहिब से रुहानियत की मस्ती का सरूर हासिल होता है जिससे मनुष्य इन्सान बन जाता है। (खोज दर्पण, जनवरी 1986)

डा० मुहम्मद यूसफ अब्बासी

पाकिस्तान के कायदे-आज़म यूनिवर्सिटी के इतिहास विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष अपनी निष्पक्ष राय गुरु ग्रंथ साहिब प्रति फरमान करते लिखते हैं कि गुरु ग्रंथ साहिब विश्व ज्ञान का खजाना है। गुरबाणी विशाल समुद्र की तरह है जहां से हर किसी अभिलाषी को मन वांछित हीरे-जवाहरात प्राप्त हो सकते हैं।

डा० धर्मपाल मैणी

डा० धर्मपाल मैणी ने पंजाबी दुनिया मैगज़ीन में लिखा था कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब मध्यकालीन भारतीय आध्यात्मिक विचारधारा का सच्चा प्रतिनिधि है। भारतीय परम्परा के अनुसार इसमें उसी मानवीय धर्म के तत्व मिलते हैं जिनको अपनाने से किसी को कोई विरोध नहीं हो सकता। इसका प्रचार करने से किसी की भी इज्जत की निरादरी नहीं हो सकती। इसको किसी विशेष सम्प्रदाय के घेरे मे बंद नहीं किया जा सकता। सारी मानवता गुरु ग्रंथ साहिब जी से प्रेरणा ले सकती है और लेती आई है। कई सौ सालों के धार्मिक साहित्य का यह प्रकाश स्रोत है। आज के वैज्ञानिक और बौद्धिक युग में भी यह आने वाली पीढ़ियों को धर्म से विमुख होने से बचाता रहेगा। क्या यह कम महत्त्व की बात है कि जीवन और जगत् ही उन सभी समस्याओं के समाधान इसमें अपने ढंग से मिलते हैं जिन की ज़िन्दगी के किसी-न-किसी मोड़ पर हर एक को ज़रूरत पड़ती है। गुरु ग्रंथ साहिब लौकिक धरातल और पारलौकिक जीवन जाच की चिंगारी हमारे दिलों में चमका देते हैं।

(पंजाबी दुनिया, जनवरी 1965)

पर्ल एस बक (नोबल पुरस्कार विजेता)

डॉ० पर्ल एस बक जो नोबल पुरस्कार विजेता हैं, लिखते हैं कि गुरु ग्रंथ साहिब मनुष्य के अकेलेपन, उसकी इच्छाएं और अकाल पुरख से मिलाप की भूख प्रकट करने का स्रोत है।

जिस-जिस ने भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब को पढ़ा-सुना और समझा है उसको अवश्य ही एक सहज सुहेला आर्थिक-परमार्थिक नया जीवन जीने की सेध गुरु की बाणी से प्राप्त हुई। पश्चिमी विद्वान् जिनके अन्दर सच की खोज-लग्न प्रबल है वे भी सच्चाई कहने से रह नहीं सके।

मैंने अन्य बड़े-बड़े धर्मों की धार्मिक रचनाएं पढ़ी हैं पर मुझे उनमें से दिल और मन को प्रभावित करने वाली इतनी शक्ति नहीं मिली जितनी कि गुरु ग्रंथ साहिब जी से हुई है। यह बाणी लम्बी होने के बावजूद भी बहुत गुंथी है। प्रभु का सबसे उत्तम और पवित्र संकल्प उभारती है। गुरबाणी मनुष्य शरीर की अमली जरूरतों के बिल्कुल अनुकूल है। इन वाणियों में हैरानीजनक आधुनिकता मौजूद है।

डक्कन गरीनलीज़

प्रसिद्ध विद्वान् डक्कन गरीनलीज़ अपनी राय लिखते है कि यह बिल्कुल ठीक कहा जा सकता है कि गुरु ग्रंथ साहिब भारतीय विचारधारा की क्रीम है। जितना ज्यादा मैंने गुरु ग्रंथ साहिब का अध्ययन किया उतनी ही मेरी प्यार भावना इसके प्रति और बढ़ी और बलवान् हुई। जो प्रेरणा और भावनात्मक खूबसूरती श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में मिलती है, शायद ही दुनिया की किसी अन्य धार्मिक रचना में मिलती हो।

(सिख रिवियू 1981)

मिस्टर त्यानबी (प्रसिद्ध इतिहासकार)

मिस्टर त्यानबी जो अमेरिका के प्रसिद्ध इतिहासकार हैं, अपनी पुस्तक ''धर्म ऐतिहासिक दृष्टिकोण से'' में लिखते हैं कि जब सारा जगत् कोई धर्म अपनाएगा, वह धर्म आज के रस्मी कर्मकाण्ड और वहमी प्रभावों वाला कदाचित् नहीं होगा। बल्कि उसका मूल आधार सेवा और सिमरन होंगे। सेवा का संकल्प ईसाईयों ने बहुत सुन्दर अपना लिया है। गुरसिखी जीवन में सेवा को ही महान् स्थान प्राप्त है। शबद का प्रयोग सिख धर्म के गुरु ग्रंथ पूजा से पूरी तीव्रता में देखी जा सकती है।

गुरु ग्रंथ साहिब मानव भाईचारे का सांझा आत्मिक खजाना है। इसलिए यह ज़रूरी है कि गुरु ग्रंथ साहिब जी की शिक्षा को जितना ज़्यादा अधिक से अधिक लोगों के सम्पर्क में लाया जा सके, लाया जाए। जितने भी धर्म ग्रंथ उपलब्ध हैं, उनमें से श्री गुरु ग्रंथ साहिब सबसे अधिक सत्कार रखते हैं। जितना कुरान शरीफ मुसलमानों को प्यारा है, जितना बाइबल ईसाईयों को प्यारा है, जितना तौराह यहूदियों को प्यारा है, श्री गुरु ग्रंथ साहिब सिखों के लिए उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि गुरु ग्रंथ साहिब सिखों के सदीव काल गुरु है, आध्यात्मिक रहबर हैं।

आप लिखते हैं कि हम देख रहे हैं कि मानवता का धार्मिक भविष्य धुंधला है पर फिर भी इसके बावजूद एक चीज़ देखी जा सकती है, वह यह है कि जीवित ऊँचे धर्म पहले की जगह अब एक दूसरे के नजदीक हो रहे है। भविष्य में होने वाली धर्मों के बारे में चर्चा में सिख धर्म और श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी के पास कुछ ऐसी विशेष और कीमती बात ज़रूर है जो बाकी सारी दुनिया को दर्शाई जा सकती है।

Sacred Writings of the Sikhs (A UNESCO Publication)

मिस्टर एच. एल. बराडशाह

पश्चिमी विद्वान श्री बराडशाह सिख धर्म के प्रति लिखते हैं कि सिख धर्म साईंस की कसौटी पर पूरा उतरता है। इसलिए भविष्य में मनुष्य के लिए सिख धर्म ही आखिरी आशा और सहारा होगा।

एक अन्य जगह बराडशाह लिखता है कि सिख धर्म सम्पूर्ण विश्व का धर्म है जिसमें हर प्रकार के मनुष्य के लिए सन्देश मौजूद है। यह बात सिख गुरु साहिबान की लिखतों में बहुत अच्छी तरह रूपमान हुई है। सिखों को यह सोचना बन्द कर देना चाहिए कि उनका धर्म दूसरे धर्मों की तरह एक अच्छा धर्म है। उनको ऐसे सोचना शुरु करना चाहिए कि सिख धर्म एक नए युग का धर्म है। गुरु नानक देव जी द्वारा प्रचारित किया धर्म निस्सन्देह एक नए युग का धर्म है। यह पुराने धर्मों के सभी गुणों को अपने में समाकर बैठा है और उनके गुणों को पूरा करता है। बाकी धर्मों में सत्य का अंश है पर सिख धर्म में निरोल सच ही सच है। भरपूर रूप में सच है। यह धर्म सारी की सारी सच्चाई है।

फिलास्फर रसल

इग्लैंड के प्रसिद्ध दार्शनिक रसल ने एक बार कहा था, अगर तीसरी विश्व जंग के दौरान चलने वाले एटम और हाइड्रोजन की मार से कोई खुशकिस्मत बच जाए तो उसको सेध देने के लिए सिख धर्म एक मात्र वसीला होगा।

श्री रसल से यह भी पूछा गया कि आप तीसरे विश्व युद्ध के पश्चात् की बात करते हो क्या यह धर्म तीसरी जंग से पहले मनुष्यता को कुछ अगुवाई देने की क्षमता नहीं रखता ?

रसल ने इस प्रश्न के उत्तर में यही कहा, कि क्षमता तो पूरी रखता है, पर सिखों ने इस धर्म के बेहतरीन उसूलों को, जो शायद सारी मानवता के लिए अस्तित्व में आए हैं, हवा ही नहीं लगवाई। सिखों का सबसे बड़ा कसूर है, जिससे वे कभी भी मुक्त नहीं हो सकते। रसल का कहा हुआ है भी अक्षर-अक्षर सच।

◆ ◆ ◆

अगले पृष्ठों पर हम छः सतगुरुओं, पन्द्रह भक्तों, ग्यारह भट्ट और चार गुरसिखों के जीवन के प्रति संक्षेप जानकारी प्राप्त करने का यत्न करेंगे, जिनके महान् आत्मिक उपदेश श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज़ हैं, जो सदा-सदा के लिए जिज्ञासु जनों को सहज सफल जीवन व्यतीत करने और संसार भवजल से पार उतरने के लिए प्रेरणा देते रहे, दे रहे हैं और देते रहेंगे।

श्री गुरु नानक देव जी

जीवन वृत्तांत

नाम	: श्री गुरु नानक देव जी
प्रकाश समय	: 20 अक्तूबर 1469 ई० 1526 बि० कार्तिक की पूर्णिमा
प्रकाश स्थान	: राए भोए की तलवंडी (ज़िला शेखूपुरा, पाकिस्तान) आज कल ननकाणा साहिब
पिता जी	: श्री कल्याण दास मेहता जी
माता जी	: माता तृप्ता जी
गुरु के महल	: माता सुलखणी जी।
संतान	: बाबा श्री चन्द और बाबा लखमी दास जी।
गुरता गद्दी	: धुर से (आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ)
ज्योति जोत समाने का समय	: 7 सितम्बर 1539 ई० (असू वदी 1596 बि०)
कुल आयु	: लगभग 70 साल
जगह	: करतारपुर (पाकिस्तान)
गुरबाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज	: 974 शब्द, (17 रागों में)
प्रमुख यात्राएं	: 4 उदासियों के रूप में 24 साल का समय सारे हिन्दुस्तान, बंगला देश, पाकिस्तान, बर्मा,

		श्री लंका, भूटान, तिब्बत, सिक्किम, नेपाल, मंगोलिया, तुर्की, रूस, इटली, अफ़गानिस्तान, ईरान, इराक, सउदी अरब, आदि में संसार को सच का मार्ग दर्शाया।
मुख्य उपदेश	:	एक की आराधना, एक की उपासना, सच्चा हुए बिना प्रभु मिलाप संभव नहीं। भ्रमों, वहमों का त्याग करके, सच्चा बनने के लिए किरत करो, बांट कर खाओ और नाम जपो, सरबत का भला करो और मांगों, **''विचे ग्रिह सदा रहै उदासी जिउ कमलु रहै विचि पाणी हे''** के धारणी बनो।

◆ ◆ ◆

श्री गुरु नानक देव जी

जोति रूपि हरि आपि गुरु नानकु कहायउ॥

जिस समय श्री गुरु नानक देव जी ने इस संसार में प्रकाश किया, उस समय हिन्द वासियों की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक दशा बहुत दयनीय थी। राजनीतिक तौर पर सारा हिन्दुस्तान अलग-अलग क्षेत्रों में बंटा हुआ था। एक क्षेत्र का रजवाड़ा दूसरे को देखना पसन्द नहीं करता था। आपसी फूट के कारण हिन्दुस्तान गुलामों का गुलाम हो गया था। हर तरफ बेचैनी ही बेचैनी फैली हुई थी। ठगी-चोरी, फरेब, धोखा-धड़ी, चालाकी, मक्कारी का बोल-बाला था। हर ओर पाप के गहरे बादल छाए हुए थे। जिन राजाओं ने प्रजा की रखवाली करनी थी, वे स्वयं शेरों का रूप धारण करके अपनी ही प्रजा को खा रहे थे। अहलकारों की वृत्ति कुत्तों जैसी हो चुकी थी। सतगुरु नानक पातशाह जी ने उस समय की दशा का वर्णन गुरबाणी में स्वयं किया है —

राजे सीह मुकदम कुते॥ जाइ जगाइन्हि बैठे सुते॥
चाकर नहदा पाइन्हि घाउ॥ रतु पितु कुतिहो चटि जाहु॥

मलार वार १, पृष्ठ १२८८

रखवाले अपनी जिम्मेदारी का त्याग करके दिन रात ऐश परस्ती में गलतान थे। प्रजा बिल्कुल बेसहारा होकर बेबसी की दशा में जूझ रही थी। इन्साफ करने वाले रिश्वत लेकर, सच्चे का हक झूठे को दे देते थे। सतगुरु गुरु नानक पातशाह जी के फरमान अनुसार उस समय ऐसा अधोगति का बर्ताव हर तरफ हो रहा था। आप फरमाते हैं, राजाओं ने कसाईयों का रूप धारण किया हुआ था। धर्म नाम की कोई चीज़ ही नहीं दिखाई देती है। जैसे धर्म मानो पंख लगाकर आसमान में उड़ गया हो।

हर तरफ झूठ की काली रात छाई हुई थी। सच तलाश करने पर भी दिखाई नहीं देता था। हर तरफ मैं मेरी प्रधान थी, जिस कारण हर मनुष्य अत्यन्त दु:खों में ग्रसित था —

कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ॥
कूडु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ॥
हउ भालि विकुंनी होई॥ आधैरै राहु न कोई॥
विचि हउमै करि दुखु रोई॥ कहु नानक किनि बिधि गति होई॥१॥

सलोक महला १, पृष्ठ १४५

जिन लोगों ने लोकाई की रक्षा करना अपना धर्म माना था वे ही अपना धर्म छोड़कर दिल हार बैठे थे और मलेच्छों की बोली बोलते थे—

खत्रीआ त धरमु छोडिआ मलेछ भाखिआ गही॥
स्रिसटि सभ इक वरन होई धरम की गति रही॥३॥

धनासरी म: १, पृष्ठ ६६३

धार्मिक गिरावट यहां तक हो चुकी थी कि माया के लिए अपने आपको गुरु कहलाने वाले, चेलों के घरों में जाकर उनके कानों में उपदेश बेचते थे। स्त्री-पुरुष का सती-पति का प्यार नहीं रहा था, केवल माया के कारण ही सम्बन्ध थे। माया के लिए कोई किसी जगह, कहां चल पड़े, कोई पूछता नहीं था। हर समय हर तरफ पाप का ही बर्ताव था। भाई गुरदास जी ने उस समय की दशा को पहली बार की तीसवीं पउड़ी में इस तरह बयान किया है —

कलि आई कुत्ते मुही खाजु होइआ मुरदार गुसाई॥
राजे पापु कमांवदे उलटी वाड़ खेत कउ खाई॥
परजा अंधी गिआन बिनु कूड़ कुसतु मुखहु आलाई॥
चेले साज वजाइंदे नचनि गुरू बहुचु बिधि भाई॥
चेले बैठनि घराँ विचि गुरि उठि घरीं तिनाड़े जाई॥
काज़ी होए रिश्वती वढी लै के हकु गवाई॥

स्त्री पुरखै दाम हित भावै आइ किथाऊ जाई॥

वरतिआ पाप सभस जग मांही॥३०॥

वार १, पउड़ी ३०

सारी लोकाई जाति-पांति में बंटी हुई थी, एक मनुष्य दूसरे से नफरत करता था। एक फिरका दूसरे को काटता था। धार्मिक कर्म-काण्ड केवल दिखावे के लिए रह गए थे —

आंट सेती नाकु पकड़हि सूझते तिनि लोअ॥

मगर पाछै कछु न सूझै एहु पदमु अलोअ॥२॥ *धनासरी म: १, पृष्ठ ६६२*

सारा धर्म कर्म माया के लिए होता था। धर्म बिल्कुल प्राणहीन लाश बनकर रह गया था। धर्म के ठेकेदार कहलाने वालों की दशा कैसी हो गई थी। सतगुरु जी ने स्वयं धनासरी राग में अंकित किया है —

कादी कूडु बोलि मलु खाइ॥ ब्राहमणु नावै जीआ घाइ।

जोगी जुगति न जाणै अंधु॥ तीने ओजाड़े का बंधु॥२॥

धनासरी म: १, पृष्ठ ६६२

ऐसे कूड़ कुसत के अन्धकारमय समय —

सतिगुरु नानक प्रगटिआ मिटी धुंध जग चानण होआ॥

जिउ कर सूरज निकलिआ तारे छपे अंधेर पलोआ॥

भाई गुरदास वार १, पउड़ी २

तथा **—आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ॥**

सवैये महले तीजे के, पृष्ठ १३९५

परमेश्वर सरूप गुरु नानक पातशाह जी ने ऐसी अधोगति की हालत से जनमानस को छुटकारा दिलाने के लिए 20 अक्तूबर 1469 ई० कार्तिक की पूर्णिमा, 1526 विक्रमी को) रायभोए की तलवंडी (ननकाणा साहिब, जिला शेख़ूपुरा, पाकिस्तान) में अवतार धारा।

आप जी ने छोटी आयु से ही जिस कार्य के लिए आगमन किया था, उस काम को करने का बीड़ा उठा लिया। खोखले रीति-रिवाज़ों को मानने से इन्कार कर दिया और बहुत दिलेरी से सच की आवाज़ को बुलंद किया।

मानवता को **''एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे॥''** का सबक दृढ़ कराने के लिए दाने मिरासी को भाई मरदाना बनाकर संसार तारने के लिए साझीदार बनाया —

विचे ग्रिह सदा रहै उदासी जिउ कमलु रहै विचि पाणी हे॥

मारु महला ४, पृष्ठ १०७०

की नींव डालने के लिए आपजी ने स्वयं गृहस्थ धर्म को धारण किया। आप जी ने —

घालि खाइ किछु हथहु देइ॥ नानक राहु पछाणहि सेइ॥

सलोक महला १, पृष्ठ १२४५

की नींव डालने के लिए पहली उम्र में मोदीखाने की बहुत तन-देही से नौकरी की और आखिरी उम्र करतारपुर खेती करने की किरत करके बांट कर खाने और नाम जपने के उसूलों पर बहुत दृढ़ता से पहरा दिया।

भरपेटों के पेट भरने की परम्परा तो पहले से ही चल रही थी। पर आप जी ने भूखों और ज़रूरतमन्दों की ज़रूरत पूरी करके खरा सौदा करने की विधि सिखाई। चाहे इस खरे सौदे को करने के लिए आपको पिता जी के कोप का शिकार होना पड़ा।

आप जी ने सारे भारतवर्ष और देशों विदेशों का 24 साल पैदल यात्रा करके जगह-जगह पर पहुँच कर सच्चे धर्म का पैगाम जनमानस को बख्शिश किया। आप जी हरिद्वार, जगन्नाथ, बौद्ध, गया, द्वारिका, कुरुक्षेत्र, आदि सभी हिन्दू तीर्थों पर गए। ब्राह्मणों को खोखले कर्मों का त्याग कर अमली जीवन जीने और सच्चे ब्राह्मण बनने की अगुवाई की कि मात्र अन्न का त्याग करके भूखे रहने से कुछ नहीं होगा। अगर प्रभु दर में मंजूर होना है, झूठ के त्यागी बनो। शारीरिक स्नान करो, पर साथ ही संतोषी भी बनो। मात्र शारीरिक स्वच्छता करने से आत्मा पवित्र नहीं होगी। दया और क्षमा को जीवन आधार बनाकर सुरत प्रभु चरणों से जोड़कर श्रेष्ठ सदाचारी गुणों के धारणी बनो तब आप ब्राह्मण कहलाने के हकदार हो —

सचु वरतु संतोखु तीरथु गिआनु धिआनु इसनानु॥
दइआ देवता खिमा जपमाली ते माणस परधान॥
जुगति धोती सुरति चउका तिलकु करणी होइ॥
भाउ भोजनु नानका विरला त कोई कोइ॥

सलोक महला १, पृष्ठ १२४५

ब्राह्मण कहलाने के लिए सभी में ब्रह्म की जोत देखो। कठिन जप तप करने की बजाय श्रेष्ठ कर्मों के धारणी बनकर, मीठा बोलो और संतोषी जीवन बनाओ। प्रभु दर में मंजूर होने के लिए मोह माया की फांसी तोड़कर माया से निर्लिप्त जीवन व्यतीत करके ही ब्राह्मण कहला सकोगे —

सो ब्रहमणु जो बिंदै ब्रहमु॥ जपु तपु संजमु कमावै करमु॥
सील संतोख का रखै धरमु॥ बंधन तोड़ै हौवै मुकतु॥
सोई ब्रहमणु पूजण जुगतु॥ *महला १, पृष्ठ १४११*

सतुगरु जी मुसलमानों के गढ़, मक्के में गए। आपजी ने वहां भी "**सचु सुणाइसी सच की बेला**" की नींव डाली। मुसलमानों के पूछने पर कि हिन्दू बड़े हैं कि मुसलमान ? आपजी ने उनको उत्तर दिया, बड़ा वह है जिसके कर्म अच्छे हैं। जिसके अमल अच्छे नहीं उसको इस लोक में फटकारें और परलोक में उसके पल्ले रोना ही नसीब होगा। भाई गुरदास जी के कथन अनुसार —

बाबा आखे हाजीआं सुभि अमलां बाझहु दोनो रोई॥
हिंदू मुसलमान दुइ दरगह अदंरि लहनि न ढोई॥

वार १, पउड़ी ३३

अगर सच्चे मुसलमान बनना है, अल्लाह की दृष्टि में परवानगी प्राप्त करनी है, फिर पाँच नमाजों के साथ-साथ पाँच शुभ गुण भी धारन करो, सच्चे नाम की कमाई करो, हक हलाल की किरत करो और सन्तुष्ट रहो, बांट के खाने का स्वभाव धारण करके मन को पवित्र करने का यत्न करो। जब श्रेष्ठ करनी का कलमा पढ़ोगे, खुदा तुम्हें रहमत की निगाह से नवाजेगा —

पहिला सचु हलाल दुइ तीजा खैर खुदाइ॥
चउथी नीअति रासि मनु पंजवी सिफति सनाइ॥
करणी कलमा आखि कै ता मुसलमाणु सदाइ॥

महला १, पृष्ठ १४१

गुरु नानक पातशाह, सुमेर पर्वत पर सिद्धों से मिले, सिद्धों को भी संतोष के धारणी बनने के लिए प्रेरित किया। मौत को याद रखते हुए ध्यान हमेशा प्रभु से जोड़कर रखने की शिक्षा प्रदान की, क्योंकि जिसको अपना अन्त याद रहता है, वह अनन्त को कभी नहीं भूलता। सच्चा योगी बनने के लिए प्रभु पर अटल विश्वास के धारणी बनना लाज़मी है। विकारों से वृति तोड़कर हमेशा मन को अपने काबू में रखकर जो नाम में सम-वृत्ति विचरण करता है, ऐसा योगी हर किसी को नमस्कार नहीं करता। वह बेपरवाह होकर आदि अनिल अविनाशी युगों युगान्तरों से एक रस प्रभु को हमेशा नमस्कार करता है। उसकी प्रभु-दर रसाई हो जाती है—

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति॥
खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति॥
आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु॥
आदेसु तिसै आदेसु॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति
जुगु जुगु एको वेसु॥२८॥

जपुजी साहिब, पृष्ठ ६

गुरु नानक पातशाह मलिक भागो, दुनी चंद, हमीद कारु जैसों के पास भी गए। उनका भी मार्ग दर्शन किया कि ज़िन्दगी का मनोरथ केवल माया एकत्रित करना नहीं है, जिन्दगी का मनोरथ अपने मूल से जुड़ना है। संसार के व्यवहार के लिए माया चाहिए पर ज़रूरत से ज्यादा दु:खों का कारण बनती है। मनुष्य पाप कर्मों द्वारा माया एकत्रित करता है, पर अन्त समय माया यहीं रह जाती है और मनुष्य के हिस्से में पछतावा ही आता है। माया उसके जीवन पथ में रुकावट नहीं बनती जो माया के लालच का त्याग कर देता है।

जहां सतगुरु जी माया धारियों के पास उनको माया के चंगुल से निकालने गए वहीं गुरुदेव माया से अतीत सिद्धों, योगियों, उदासियों, ब्राह्मणों और मुसलमान

साधकों के पास भी गए। सज्जन ठग, भूमिए चोर, कौडे राक्षस जैसों के पास जाकर उनको भी कूड़, कुसत्तु, ठगी, चोरी, छल-कपट का त्याग करके सच्ची शिक्षा प्रदान कर श्रेष्ठ जीवन के धारणी बनाया।

सारी मानवता के रहबर गुरु नानक पातशाह जी सबसे पहले सिख किरती भाई लालो के घर गए। वहां समूह किरतियों को उपदेश किया, कि सारी उम्र पेट पूर्ति के लिए किले ही नहीं घड़ने, प्रभु दरगाह में परवानगी के लिए मन को भी घड़ने की अत्यन्त ज़रूरत है। काम-काज से समय निकालकर और किरत करते-करते नाम जप से मन को शबद की टकसाल से घड़ना है और **''घड़ीअै सबदु सची टकसाल''** के धारणी बनना है।

''जाहर पीर जगतु गुर बाबा॥'' अनुसार जगत गुरु बाबे ने उत्तर से लेकर दक्षिण, पूर्व से लेकर पश्चिम तक —

''जीती नउखंड मेदनी सतिनाम दा चक्र फिराइआ'' की कार करते हुए सच का ढिंढोरा घर-घर, जगह-जगह देशों विदेशों में पहुँचाया। आपने आचार, व्यवहार, किरदार, सदाचार को सच के सांचे में ढालने के लिए —

''सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचार॥'' का सिद्धान्त जनमानस को बख्शिश किया। आप जी के द्वारा प्रचारित सच को आप जी के जीवन काल में ही करोड़ों लोगों ने धारण किया, जिसके कारण पंजाब और भारतवासी गुरु नानक पातशाह जी को सतगुरु सच्चे पातशाह के लकब से सत्कार करते थे, वहां अरब देशों में पीर बाबा नानक शाह के नाम से आपको याद किया जाता है। तिब्बती लोग नानक लामा या भदरा गुरु कहते है। लंका के वासी आप की शख्सियत को नानक बुद्धा कहकर अपनी श्रद्धा भेंट करते हैं। रूस आदि देशों में आपको वली हिंद बाबा नानक शाह कहकर सम्मानित किया जाता है। वियतनाम मंगोलिया, चीन आदि देशों में आप जी को नानक भुसा कह कर सम्मान करते हैं। भूटान, नेपाल, सिक्किम में लोग आपको अथाह श्रद्धा प्यार से 'रिमपोजे' लकब से याद करके अपने दिल की अकीदत भेंट करते हैं—

जिथै जाइ जगति विचि बाबे बाझु न खाली जाई॥

भाई गुरदास जी - वार १ पउड़ी ३४

उस समय से आप जी के सत्कार में स्थानीय लोगों ने झीलों, तालाबों, कुण्डों, सरोवरों, चश्मों, जगहों और शहरों के नाम भी आप जी के नाम पर रखकर यादगारी कायम की हुई है।

आप जी सबके सांझे, सम्पूर्ण मानवता के रहबर थे। आप सबसे प्यार करते और सब का भला चाहते थे। जिस कारण सम्पूर्ण मानवता गुरु नानक पातशाह जी को अपना रहबर, अपना गुरु, अपना पीर, अपना मुर्शिद मानती थी। इसकी उदाहरण उस समय की है जब आप जी ने अपनी आत्मिक जोत बाबा लहणा जी में रखकर फरमाया **''बाबा मढी न गोर गुर अंगद के हीए में''** अपना शरीर अलोप करने से पहले अपने जीते जी —

थापिआ लहिणा जींवदे गुरिआई सिरि छत्रु फिराइआ''।

भाई गुरदास जी, वार १, पउड़ी ४५

की कार कर दी और आपजी 7 सितम्बर 1539 ई० (असू वदी 1596 विक्रमी)को अपने हाथों से बसाए करतारपुर (पाकिस्तान) के स्थान में ज्योति-जोत समा गए। आप जी के श्रद्धालु हिन्दुओं और मुसलमानों में झगड़ा हो गया। दोनों अपने-अपने अकीदे अनुसार आप जी के शरीर की आखिरी रस्में करना चाहते थे।

गुरु नानक पातशाह शरीर तो थे नहीं, वे तो जोत थे। आखिर दोनों ने उस चादर को जो उन्होंने आखिरी समय पर ओढ़ी हुई थी, आधी-आधी करके मुसलमानों ने कब्र में दफना दी और हिन्दू श्रद्धालुओं ने संस्कार करके देहरा बना लिया।

आज भी संसार में एक जगह करतारपुर पाकिस्तान में ऐसी है, जहां एक दरवाज़े से गुज़र कर दोनों अकीदों पर श्रद्धालु जाते हैं। मुसलमान अपने अकीदे अनुसार गुरु नानक देव जी को नानक शाह वली कहकर इबादत करते हैं और लोक परलोक की दातों के लिए दुआएँ करते हैं। नानक शाह पीर जी की कब्र से थोड़ा आगे जाएँ, वहां केसरी निशान झूल रहा है, आगे धर्मशाला में (गुरुद्वारा है) जहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश और गुरु की बाणी का कीर्तन होता

है, आज भी सम्पूर्ण मानवता को गुरु नानक देव जी का सन्देश दे रहा है कि गुरु नानक देव जी किसी एक फिरके, किसी एक जाति, किसी एक देश के ही रहबर नहीं थे बल्कि वे समूची मानवता के पैगम्बर थे।

आप जी ने सम्पूर्ण मानवता को उपदेश दिया कि किरत करो, नाम जपो और बांट कर खाओ–सभी का भला मांगो, अंहकार मैं मेरी के त्यागी बनो, सारी मानवता को परमात्मा का रूप जानकर सेवा और प्यार करो। एक अकाल पुरख से जुड़ने के लिए अनेकता का त्याग करके एक को हृदय में बसाओ। दया और क्षमा के धारणी बनकर, अपने आचार में सच, अपने व्यवहार में सच, अपने सदाचार में सच, अपने किरदार में सच, अपने बोलने में सच, अपनी दृष्टि में सच और अपने सुनने में सच को धारण करो। सच के धारणी बनने से ही सच से अभेद हो सकोगे। तभी बलवंड जी ने गवाही दी है कि श्री गुरु नानक देव जी ने प्रभु परमेश्वर जी की पातशाही कायम की और सच का किला निर्मित किया, जिसकी नींव बहुत मज़बूत रखी, जिस सच को सारे ही नमस्कार करते हैं —

नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै॥ *पृष्ठ ९६६*

केवल सतगुरु जी ने उपदेश ही नहीं किया, अपने सम्पूर्ण जीवन में जनमानस को दिए उपदेश और सच को जीवन में करके दिखाया है। बाबर को उसके सामने ज़ाबर और अहलकारों को कुत्ते कहकर पाप की जंझ (बारात) कहना कैसा **''सचु सुणाइसी सच की बेला''** का कमाल है।

ऐसे कह लें तो कोई अतिकथनी नहीं होगी कि जहाँ गुरु नानक पातशाह जी ने मरी हुई ज़मीर वाले जनमानस में नई रुह डाली, वहां खोखले कर्म काण्ड बनकर रह गए धर्म की लाश को नया जीवन प्रदान किया। अन्त में श्री गुरु रामदास जी के गुरबाणी वचन ही गुरु नानक देव जी प्रति पूर्णतया लागू होते हैं —

तेरे कवन कवन गुण कहि कहि गावा तू साहिब गुणी निधाना॥
तुमरी महिमा बरनि न साकउ तूं ठाकुर ऊच भगवाना॥१॥

सूही म: ४, पृष्ठ ७३५

समर्थ गुरु की महिमा, उपदेश, बख्शिशें, शब्दों द्वारा कलम बंद नहीं की जा सकती। इसी लिए प्रिंसीपल सतबीर सिंह जी ने श्री गुरु नानक देव जी प्रति लिखा है कि ''गुरु नानक देव जी कैसी शख्सियत के मालिक होंगे जो मायाधारी दुनीचंद को दीन, लालो को लाली भागो के ऊँचे भाग्य, ठग को सज्जन, अहंकारी को वली, मनुष्य भक्षियों को मनुष्य और नूरी को नूर प्रदान कर गए।''

आज ज़रूरत है कि गुरु बाबे जी के उपदेशों को अपने जीवन में लागू करें और गुरु उपदेशों को दूसरों तक पहुँचाए ताकि सम्पूर्ण मानवता सतगुरु नानक जी के दर्शाये मार्ग से लाभ प्राप्त कर सके।

सभ ते वडा सतिगुरु नानकु जिनि कल राखी मेरी॥

सूही म: ५, पृष्ठ ७५०

श्री गुरु अंगद देव जी

जीवन वृत्तांत

नाम	:	भाई लहणा जी
	:	गुरुता गद्दी के पश्चात् श्री गुरु अंगद देव जी
प्रकाश समय	:	31 मार्च 1504 ई०, (5 वैसाख 1561 विक्रमी)
प्रकाश स्थान	:	मत्ते की सराय (ज़िला मुक्तसर)
पिता जी का नाम	:	श्री फेरु मल जी
माता जी का नाम	:	माता दया कौर जी (सभराई जी)
गुरु के महल	:	माता खीवी जी
संतान	:	श्री दासू जी, श्री दातू जी, बीबी अमरो जी और बीबी अनोखी जी।
गुरु शरण में आने का समय	:	1531 ई० करतारपुर (पाकिस्तान में)
गद्दी नशीनी का समय	:	7 सितम्बर 1539 ई० 13 साल गुरता गद्दी की सेवा।
ज्योति जोत समाने का समय	:	29 मार्च 1552 ई०
कुल आयु	:	48 वर्ष
ज्योति जोत समाने का स्थान	:	खडूर साहिब ज़िला अमृतसर

गुर बाणी वृतान्त	:	62 श्लोक (सारे श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज हैं।
मुख्य कार्य	:	आप जी ने जहां गुरु नानक पातशाह जी के पंथ का प्रचार बहुत लग्न और तनदेही से किया, वहीं गुरु नानक देव जी की जन्म साखी लिखवा कर गुरु इतिहास की सम्भाल करने की नींव रखी। गुरमुखी लिपि का सुधार करके अक्षरों को प्रामाणिक रूप दिया। शारीरिक शक्ति को सम्भालने के लिए मल्ल अखाड़ों की परम्परा चालू की। रूहानी विद्या के प्रचार के साथ-साथ सांसारिक विद्या को प्रचलित करने के लिए आपजी ने पाठशालाएं खोलीं।

◆ ◆ ◆

श्री गुरु अंगद देव जी

बाबाणै घरि चानणु लहणा

श्री गुरु अंगद देव जी का प्रकाश (जिनका पहले नाम लहणा था) 31 मार्च 1504 ई० को माता दया कौर जी के गर्भ में बाबा फेरू मल जी के घर में गाँव मत्ते की सराए ज़िला मुक्तसर में हुआ। आप जी बचपन से ही धार्मिक रुचियों के धारणी थे। बचपन में आपजी छबील लगाकर आए गए राहगीरों को जल पिलाते, भूखे साधु महात्माओं को प्रसाद छकाकर प्रसन्नता प्राप्त करते। दुकान में भी अपने पिता जी का हाथ बंटाते।

बचपन से ही आपके अन्दर **'कोई आणि मिलावै मेरा प्रीतमु पिआरा'** की तीव्र इच्छा थी। प्रभु मिलाप की कसक को पूरा करने के लिए आपजी हर साल सनातन मत के प्रभाव अधीन ज्वाला देवी की यात्रा करने के लिए संग के आगू बनकर जाते क्योंकि सनातनी प्रभाव के कारण धारणा बनी हुई थी कि देवी माता से जो मांगे, माता अपने भक्तों की मुरादें पूरी करती है।

एक बार आप जी ने गुरु नानक देव जी की महिमा सुनकर करतारपुर से होकर, देवी माता के दर्शनों को जाने का मन बना लिया। सतगुरु नानक पातशाह जी की रुहानी शख्सियत का ऐसा प्रभाव आप जी ने कबूल किया कि आप जी सदा के लिए गुरु नानक देव जी के ही बनकर वहां ठहर गए और संग को विदायगी दे दी।

भाई लहणा जी ने श्री गुरु नानक देव जी की हज़ूरी में रहकर आठ साल ऐसी सेवा की कठिन कमाई की जिसकी मिसाल कही नहीं मिलती। एक कामल उस्ताद के नाते श्री गुरु नानक देव जी ने भाई लहणा जी को रुहानियत की विद्या सिखाई, उसको करणी में ढलवाया फिर उन्नीस बार कामल उस्ताद

गुरु नानक देव जी ने परीक्षाएं ली। जब बाबा लहणा जी को गुरता गद्दी देकर, नमस्कार करके अपनी जगह गुरु स्थापित कर दिया जिसको बलवंड जी ने गुरबाणी में निम्नलिखित अनुसार अंकित किया है —

गुरि चेले रहरासि कीई नानकि सलामति थीवदै॥
सहि टिका दितोसु जीवदै॥१॥
तथा — सिखां पुत्रां घोखि कै सभ उमति वेखहु जि किओनु॥
जां सुधोसु तां लहणा टिकिओनु॥

रामकली की वार पृष्ठ ९६६-६७

तथा — थापिआ लहिणा जीवदे गुरिआई सिरि छत्रु फिराइआ॥
जोती जोति मिलाइकै सतिगुर नानकि रूपु वटाइआ॥

वार १, पउड़ी ४५

श्री गुरु नानक देव जी की दिव्य पारखी आँख ने तो पहले मिलाप के समय ही अपने जानशीन थापने के संकेत देने आरम्भ कर दिए थे, पुरखा ! तेरा नाम क्या है ? जी ! लहणा। सतगुरु कहने लगे, लहणे दार (लेनदार) हमेशा घोड़ों पर चढ़कर ही आते हैं, तूने लेना और हमने तेरा देना है।

इसके पश्चात् जब आपजी अपने घर से नमक की खिट्ी सिर पर उठाकर करतारपुर पहुँचे, धर्मसाल गुरु नानक जी के दर्शन न हुए तो आप सीधे खेतों में पहुँच गए। नमस्कार कर के जो गुरु पातशाह कर रहे थे, वैसे ही खेती से नदीन उखाड़ना शुरु कर दिया। नदीन के साथ धान के पौधे भी उखाड़ कर बाहर फेंकते गए। सतगुरु जी यह कार देखकर मुस्कुराए और कहने लगे, पुरखा! तुमने पौधे उखाड़ने नहीं, तुम ने तो पौधे लगाने हैं। घर जाते समय नदीण (घास) की गठड़ी जिसमें से कीचड़ निचुड़ रहा था, आपके सिर पर गुरु नानक देव जी ने रख दी। सारी कीमती पोशाक कीचड़ के छीटों से सन गई। माता सुलखणी जी के पूछने पर कि यह भला पुरुष है, इसने कभी भार नहीं उठाया। तुमने इतनी बड़ी भारी गांठ इसको क्यों उठवा दी ? साथ ही इसकी कीमती पोशाक कीचड़ के छीटों से खराब हो गई है। माता जी के इस सवाल के उत्तर में श्री गुरु नानक देव जी ने फरमाया, सुलखणीए! यह गांठ नहीं, यह तो दीन दुनिया का छत्र है। जामे पर कीचड़ के छींटे नहीं, यह तो

केसर के छींटे हमने इस पर डाले हैं। इसको ऊपर से नहीं, अन्दर से देख। ये संकेत थे जो समय पाकर साकार हुए।

गुरू पदवी के बाद आप जी जहाँ अमृत वेला से दिन चढ़ने तक और सायंकाल दीवान में सुशोभित जिज्ञासुओं को प्रभु जी से जुड़ने के लिए अमृतमयी वचनों की वर्षा करते, वहां शारीरिक तन्दुरुस्ती के लिए ढलते पहर बच्चों के मल्ल-अखाड़े रचते, जिसमें बच्चों और जवानों की कुश्तियाँ होतीं। जहाँ आप जी मल्ल-अखाड़ों की देख-रेख करते, वहाँ आप स्वयं भी बच्चों के साथ खेलते।

सारा दिन शारीरिक आहार के लिए लंगर चलता जिसमें बिना किसी भेद एक पंक्ति में सबको बिठाकर, बिना भेदभाव लंगर बांटा जाता। लंगर में सुन्दर भोजन और घी वाली खीर और कड़ाह प्रसाद हर रोज़ बंटता था, जिसका संकेत सत्ते बलवंड जी की वार में मिलता है। लंगर की सारी देखभाल और सेवा माता खीवी जी (गुरु के महल) करते —

बलवंड खीवी नेक[१] जन जिसु बहुती छाउ पत्राली[२]॥
लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंम्रितु खीरि घिआली[३]॥

पृष्ठ ९६७

और — **नित रसोई तेरीऐ घिउ मैदा खाणु[४]॥** *पृष्ठ ९६८*

आप जी ने गुरबाणी और इतिहास की मातृ भाषा में सम्भाल करने के लिए, पैतींस गुरमुखी अक्षरों की स्थापना की। खाली समय आपजी जहां गुरमुखी लिपि का ज्ञान शिक्षार्थियों को देते थे, वहाँ इतने व्यस्तता भरे जीवन से समय निकाल कर बच्चों को गुरमुखी बाल-बोध लिखकर बांटते रहते थे, ताकि मातृ-भाषा का प्रसार ज्यादा से ज्यादा जनमानस तक हो सके। भाई बाला जी को पास बुलाकर उनसे गुरु नानक पातशाह जी की जन्म साखी लिखवाई।

आप जी इतने बेपरवाह थे, एक बार हुमायूं बादशाह दर्शनों को आया पर आप जी ने उसकी ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। जब उसने अपनी हेठी समझकर गुरु महाराज जी पर वार करने के लिए तलवार म्यान से निकाली तो

१. स्त्री, २. घने पत्तों की छांवे, ३. घी वाली खीर, ४. चीनी।

आप ने मुस्कुरा कर उत्तर दिया, हुमायूं! जहां तलवार निकाल तुम्हें लड़ना चाहिए था, वहां से तो बुजदिल होकर भाग आया है, अब फकीरों पर रौब जमाना चाहता है ? हुमायूं को शर्मसार होकर माफी मांगनी पड़ी।

जिस पंथ की नींव श्री गुरु नानक देव जी ने रखी और अपने निर्मल पंथ की रहनी, कहनी, सहनी, सभी धर्मों से अलग करके, उसके नए नियम निर्मित कर दिए थे, जिसका संकेत भाई गुरदास जी ने अपनी बाणी में दिया है —

मारिआ सिका जगत्ति विचि नानक निरमल पंथु चलाइआ॥

वार १, पउड़ी ४५

शबदि जिती सिधि मंडली कीतोसु आपणा पंथु निराला॥

वार १, पउड़ी ३१

वहां पंथ का प्रचार और प्रसार, श्री गुरु अंगद देव जी ने बहुत तनदेही से स्वयं किया और आगे अपने जानशीन श्री गुरु अमरदास जी को करने की ताकीद की और श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गुरु रामदास जी के जिम्मे पंथ के प्रचार की सेवा सौंपी —

लहणै पंथु धरम का कीआ॥ अमरदास भले कउ दीआ॥

तिनि स्त्री रामदासु सोढी थिरु थप्यउ॥ हरि का नामु अखै निधि अप्यउ॥

सवईए महले ४ के, पृष्ठ १४०१

आप जी की संगत में अनेकों गुरमुख प्यारे जीवन मुक्ति की दात के अधिकारी बनकर, अनेकों को तारने का वसीला बन गए जिनका ज़िक्र भाई गुरदास जी ने निम्नलिखित अनुसार दिया है —

पारो जुलका परमहंसु पूरै सतिगुर किरपा धारी॥

मलू साही सूरमा वडा भगतु भाई केदारी॥

दीपा देऊ नराइण दासु बूले दे जाईऐ बलिहारी॥

लाल सु लालू बुधिवान दुरगा जीवंदा परउपकारी॥

जगा धरणी जाणीऐ संसारु नाले निरंकारी॥

खानू माईआ पिउ पुतु है गुण गाहक गोविंद भंडारी॥

जोधु रसोईआ देवता गुर सेवा करि दुतरु तारी॥

पूरै सतिगुर पैज सवारी॥२५॥ *भाई गुरदास जी वार ११, पउड़ी १५*

ऐसी मनमोहनी, करणी प्रधान, सूरत श्री गुरु अंगद देव जी थे, जो एक बार दर्शन कर लेता, कुर्बान होने के लिए तैयार हो जाता। आप जी का पवित्र दर्शन की झलक जन्म जन्मान्तरों की मैल काटने की सामर्थ्य रखता था। तभी बलवंड जी ने फरमाया है —

तुधु डिठे सचे पातिसाह मलु जनम जनम दी कटीऐ॥

पृष्ठ ९६७

टल भट्ट ने भी अपना निजी तज़ुर्बा गुरु की बाणी में दर्ज़ किया है। जिसको पढ़ने से श्री गुरु अंगद देव जी की नूरानी शख़्सियत का पता सहज ही चल जाता है —

अमिअ द्रिसटि सुभ करै हरै अघ पाप सकल मल॥
काम क्रोध अरु लोभ मोह वसि करै सभै बल॥
सदा सुखु मनि वसै दुखु संसारह खोवै॥
गुरु नव निधि दरीआउ जनम हम कालख धोवै॥
सु कहु टल गुरु सेवीऐ अहिनिसि सहजि सुभाइ॥
दरसनि परसिऐ गुरू कै जनम मरण दुखु जाइ॥१०॥

सवईऐ म: दूजे के, पृष्ठ १३९२

आपजी ने 62 श्लोकों द्वारा परमेश्वरी ज्ञान मानवता को प्रदान किया जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज़ है।

आप जी नम्रता की मूर्त थे। जब योगी आपजी के दर्शन करने खडूर साहिब आए, उन्होंने सवाल किया कि आप जी में कौन सा गुण था जिस कारण गुरु नानक देव जी जिनके सामने सारा संसार झुका, वह आपके सामने कैसे झुके हैं? उन्होंने आपको गद्दी देकर माथा टेका है। आप जी ने सिद्धों के सवाल के जवाब में फरमाया सिद्धो! मुझमें कोई गुण नहीं था, न ही है। गुरु नानक देव जी का झुकना तो एक मां का झुकना था जो मिट्टी से सने बच्चे को गोद में लेने के लिए बच्चे की ओर झुकती है। ऐसे नम्रता, हलीमी, अगम की शक्तियों के नूर, मृदु-भाषी, सहनशीलता और धैर्य के सागर 48 वर्ष महान्

सेवा सिमरन और परोपकार की नींव डालकर 29 मार्च 1552 ई० को खडूर साहिब में ज्योति जोत समा गए। ज्योति जोत समाने से पहले अपनी जगह श्री गुरु अमरदास जी को गुरता गद्दी के वारिस टिककर गुरु नानक देव जी के पंथ की बागडोर सौंप दी बलवंड जी के कथानुसार —

सो टिका[१] सो बैहणा[२] सोई दीबाणु॥
पियू[३] दादे[४] जेविहा पोता[५] परवाणु॥६॥ *पृष्ठ ९६८*

और —

अंगदि किरपा धारि अमरु सतिगुरु थिरु कीअउ॥ *सवईए पृष्ठ १४०८*

अब श्री गुरु अगंद देव जी की जोत श्री गुरु अमरदास के रूप में दर्शन होने लग पड़ी।

---

१. तिलक, २. तख्त, ३. पिता दादा गुरु अंगद देव जी, ४. गुरु अमरदास जी, ५. गुरु नानक देव जी।

श्री गुरु अमरदास जी

जीवन वृत्तान्त

नाम	:	श्री गुरु अमरदास जी
प्रकाश समय	:	5 मई 1479 ई० (14 वैसाख 1536 विक्रमी सम्वत्)
प्रकाश स्थान	:	गाँव बासरके (ज़िला अमृतसर)
पिता जी	:	श्री तेज भान जी
माता जी	:	माता सुलखणी जी
गुरु के महल	:	बीबी रामो जी
संतान	:	बाबा मोहन जी, बाबा मोहरी जी, बीबी दानी जी, बीबी भानी जी
गुरुता गद्दी का समय और स्थान	:	26 मार्च 1552 श्री खडूर साहिब
गुरुता गद्दी काल	:	22 साल
ज्योति जोत समाने का समय व स्थान	:	30 अगस्त 1574 गोइंदवाल साहिब
कुल आयु	:	95 साल
गुरबाणी रचना	:	18 रागों में लिखे 907 शबद सारी बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज है।
विशेष कार्य	:	आपने सिखी प्रचार की ओर विशेष ध्यान दिया और ऊँचे जीवन वाले 22 प्रचारक, जिनको मंजी का लकब देकर सम्मानित किया। दूर-

दूर प्रचार की सेवा के लिए भेजे। बीबियों को भी प्रचार का काम सौंपा और 52 पीढ़े बख्शिश करके धर्म प्रचार की सेवा में सांझीदार बनाया। गोइंदवाल साहिब में पानी की कमी को दूर करने के लिए बाउली साहिब का निर्माण कराया। संगत में भाईचारे को मज़बूत करने के लिए दीवाली और वैसाखी पर जोड़-मेलों की प्रथा चलाई। ऊंच-नीच का भ्रम भेद दूर करने के लिए **''पहले पंगत पाछै संगत''** का सिद्धान्त चालू किया। पर्दे की रस्म और सती प्रथा को बन्द कराया। आपजी ने मरने पर होने वाले व्यर्थ के रस्मों-रिवाज़ों को बंद करने का प्रचार किया। जिसका संकेत रामकली सदु (पृष्ठ-९२३) में बाबा सुन्दर जी ने दिया है।

◆ ◆ ◆

श्री गुरु अमरदास जी

भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै॥

श्री गुरु नानक देव जी की इलाही जोत जिस तीसरे जामे में विचरण की, उस जामे का नाम श्री गुरु अमरदास जी था। आप जी का प्रकाश 5 मई 1479 ई० को गाँव बासरके ज़िला अमृतसर में पिता तेजभान जी के गृह में माता सुलखनी जी की कोख से हुआ। आप जी के मन में बचपन से ही प्रभु प्राप्ति की लालसा थी। इस प्रभु मिलाप की लालसा के अधीन आप आए गए साधु महात्मा की संगत करते। कई-कई दिन उनको अपने पास रखकर उनकी सेवा करते। इसी लग्न के अधीन ही आपजी रास्ते पर ठिकाना बनाकर राही मुसाफिरों को जल छकाते और यथा योग्य उनकी सेवा करके आशीर्वाद प्राप्त करते। 24 साल की उम्र में आपजी का विवाह बीबी रामो जी से हो गया। आप जी के गृह दो सपुत्र बाबा मोहन जी और बाबा मोहरी जी और दो सपुत्रियाँ बीबी भानी जी और बीबी दानी जी ने जन्म लिया। आप जी पूरी तन-देही से सभी सांसारिक ज़िम्मेदारियाँ निभाते, पर अन्दर जो प्रभु मिलाप का खिंचाव था वह भी समय के साथ और प्रबल होता गया। इसी खिंचाव को पूरा करने के लिए आप जी ने 20 बार गंगा स्नान और तीर्थ यात्रा की।

समय की ही बात थी, प्राप्ति और गुरता गद्दी की सेवा तो धुर से ही लिखी हुई थी। जब आप जी बीसवीं बार गंगा स्नान करके लौट रहे थे तो आप जी ने रात का पड़ाव गांव मेहड़े किया। इस गांव में सराय का प्रबन्ध एक पण्डित दुर्गा दत्त करता था, जो रेखा गणित का माहिर था। आप जी जब आराम करते थे, पण्डित दुर्गा दत्त ने आपजी के पांव में पदम रेखा देखी तो बहुत हैरान हुआ और मन में विचार की कि यह कोई महान् चक्रवर्ती राजा या

१. इस गाँव खडूर साहिब से 16 मील तथा बासरके से 40 मील से स्थित है।

रुहानी ताकतों का मालिक बनेगा। जब आप अगले दिन वापस चलने लगे तो आपने पं० दुर्गादत्त को कुछ माया देनी चाही पर उसने यह कहकर लेने से इन्कार कर दिया कि —

अब नही कछु लेहु बचन मुहि देवो॥ जब बिभो[१] होइ माग सो लेवो॥

महिमा प्रकाश

आप जी पण्डित जी के वचन सुनकर मुस्कुरा दिए जिनका भाव था, जैसे उसकी इच्छा। ये संकेत थे जो दर्शा रहे थे कि आप ज़रूर एक दिन दीन-दुनिया के पातशाह बनेंगे, जब आपजी गुरता गद्दी के वारिस बन गए, उस समय प० दुर्गा दत्त ने आपजी पास से लोक-परलोक की बख्शिशें यह कहकर प्राप्त कीं, हे सतगुरु —

नाम देह धन देह न जन को॥ धन बिहून जन जग न सुहाइ॥
जे धन देह नाम नह देवहि॥ नाम विनां नर नरके जाइ॥
तुहि पहि कही नही बन आवै॥ जिउ भावै तिउ बनत बनाइ॥
गुरु अमरदास तेजो के नंदन॥ दोनों निरमल पंथ चलाइ॥

आप जी अभी वैरागी अवस्था में ही विचरण कर रहे थे, कि वैरागी साधु के निगुरा कहने पर आपके मन को और चोट लगी। आप की नींद और भूख हराम हो गई। अमृत वेला में अपने ही घर बीबी अमरो[२] जी के मुखारविंद से निम्नलिखित शब्द सुना —

मारू महला १

करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए॥
जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ तउ गुण नाही अंतु हरे॥१॥
चित चेतसि की नही बावरिआ॥ हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ॥१॥ रहाउ॥
जाली रैनि जालु दिनु हूआ जेती घड़ी फाही तेती॥
रसि रसि चोग चुगहि नित फासहि छूटसि मूड़े कवन गुणी॥२॥

१. जब मेरा दिल चाहे। २. गुरु अगंद देव जी की सपुत्री, आप जी के भाई की पुत्र वधु थी जो कि अर्मत वेले दूध रिड़कते हुए बाणी पढ़ रही थी।

काइआ आरणु मनु विचि लोहा पंच अगनि तितु लागि रही॥
कोइले पाप पड़े तिसु ऊपरि मनु जलिआ संन्ही चिंत भई॥३॥
भइआ मनूरु कंचनु फिरि होवै जे गुरु मिलै तिनेहा॥
एकु नामु अंम्रितु ओहु देवै तउ नानक त्रिसटसि देहा॥४॥३॥

पृष्ठ ९९०

शबद सुनते ही मन को शान्ति प्राप्त हुई। दिन चढ़े आप जी बीबी अमरो को साथ लेकर खडूर साहिब गुरु चरणों में पहुँचे। रिश्तेदारी का मान ताण छोड़कर गुरु अंगद देव जी को अपना गुरु मानकर 12 साल ऐसी कठिन सेवा करके गुरु अंगद देव जी की प्रसन्नता प्राप्त की कि गुरु अंगद देव जी ने 26 मार्च 1552 ई० को गुरता गद्दी पर वारिस गुरु अमरदास जी को थाप कर बारह वर बख्शिश करके नवाजा (सम्मानित किया)। आपने फरमान किया —

तुम हो निथावन थान॥ करहो निमानहि मान॥
निताणिआ का तान॥ निओटिआ की ओट॥
निआसरिआ का आसरा ॥ निधरिआ की धिर॥
निधीरन की धीर॥ पीरां दे पीर॥
दिआल गई बहोड़॥ जगत बंदी छोड़॥
भंनण घड़न समरथ॥ सभ जीवका जिस हथ॥

श्री अमरदास जी ने अपनी देख-रेख में जरनैली सड़क पर ब्यास नदी के किनारे बहुत रमणीय नगर बसाया जिसका नाम गोइंदवाल रखा। इसी स्थान पर सुबह शाम दीवान सजाते, जहां से हर-एक जिज्ञासु को आत्मिक शान्ति का रास्ता प्राप्त होता। पेट की पूर्ति के लिए बिना भेद-भाव सर्व-सांझी लंगर प्रथा जारी की और आपने इस सर्व-सांझी लंगर प्रथा को लागू करने के लिए "**पहले पंगत पाछै संगत**" का हुक्म दे रखा था, कि जिस किसी ने भी हमारे दर्शन करने हो, वह पहले पंक्ति में बैठकर लंगर छके, फिर उसको दर्शन होंगे। उस समय का सम्राट अकबर आप जी के दर्शनों को आया, उसको भी कोई छूट नहीं दी गई। पहले उसने पंगत में बैठकर प्रशादा छका, फिर सतगुरां के पास बैठकर वचन बिलास किए।

जहां सांझे लंगर-पंगत की सांझ बनाई, वहाँ पर सांझा तीर्थ श्री बाउली साहिब तैयार किया और सिखों में भाईचारे की सांझ डालने और आपसी प्यार और तालमेल को बढ़ाने के लिए जोड़-मेलों की प्रथा कायम की। गोइंदवाल तिजारती और रौनक से भरपूर आबादी वाला शहर था, जहाँ आपसी प्यार प्रेम और शान्ति वाला सतोगुणी व्यवहार हर ओर था। जिसको देखकर भट्ट नल जी ने गोइंदवाल की उपमा गोबिंदपुरी से दी है। आपजी का फरमान है —

गोबिंद वालु गोबिंद पुरी सम जल्यन तीरि बिपास बनायउ॥
गयउ दुखु दूरि बरखन को सु गुरू मुखु देखि गरू सुखु पायउ॥६॥१०॥

सवईए महले चउथे के, पृष्ठ १४००

आप जी अत्यन्त दयालु, धैर्य के पुञ्ज, क्षमा के धारणी थे, पर आप जी से गोइंदवाल निवासी तपा और उसके अनुयायी, मरवाहे खत्री और सनातनी लोग अत्यन्त ईर्ष्या और विरोध करते रहे, पर आप जी ने हमेशा उनका बुरा चाहने की बजाय भला ही किया।

आप जी ने चल रही सती-प्रथा को रोका और लोगों को समझाया कि —

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ[1] लगि जलन्हि॥
नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे[2] चोट मरन्हि॥१॥

सलोक महला ३, पृष्ठ ७८७

आप जी ने विधवा विवाह प्रचलित किया और पर्दे की रस्म से स्त्रियों को छुटकारा दिलाया। सिखी के प्रचार के लिए आपने 22 धर्म प्रचारक स्थापित किए। स्त्री जाति में प्रचार द्वारा जागृति लाने के लिए आपजी ने गुरमुख बीबीयों को 52 पीढ़े देकर घरों-घरों और देशों-विदेशों में प्रचार करने के लिए सम्मानित किया और ज़िम्मेदारी सौंपी।

जहां आप जी ने योजनाबद्ध तरीके से गुरसिखी का प्रचार पक्के तौर पर किया, वहीं आप जी ने 18 रागों में 907 शबद उच्चारण करके आत्मिक, उपदेश बख्शिश करके प्रभु मिलाप का और सच्चा बनने का मार्ग दर्शन किया, जो सारा उपदेश गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज है।

---

१. लाश, २. विरह के शूल से।

आप जी ने धर्म प्रचार हेतु तीर्थों का भ्रमण भी किया। पहले आप जी अन्य भावना से तीर्थ यात्रा करते थे, अब भट्टों के फरमान अनुसार ''**सभ लोक उधरण अरथा**'' के मिशन की पूर्ति के लिए तीर्थों पर गए, वहां व्यर्थ के कर्मकाण्डों और कृत की पूजा से हटाकर सच के मार्ग पर चलने और ''**मन मेरे करते नो सालाहि**'' की ताकीद करने गए।

आप जी ने 22 साल जगत् कल्याण का महान् कार्य किया और 95 साल की आयु सम्पूर्ण करके सारे परिवार और सिख सेवकों को अपने पास बुलाया और हुक्म किया कि धुर से खसम मालिक का हमें बुलावा आ गया है, अब हमने प्रभु चरणों में लीन होना है। आप जी ने फरमान किया —

तुसी पुत भाई परवारु मेरा मनि वेखहु करि निरजासि[२] जीउ॥
धुरि लिखिआ परवाणा[३] फिरै[४] नाही गुरु जाइ हरि प्रभ पासि जीउ॥३॥

रामकली सदु, पृष्ठ ९२३

और सबको हुक्म किया कि मेरे शरीर छोड़ने के पश्चात् किसी ने रोना नहीं है। जो रोयेगा वह मुझे अच्छा नहीं लगेगा। मेरे शरीर त्यागने के पश्चात् करना क्या है ? सारा कुछ परिवार और संगत को समझा दिया जिसको बाबा सुन्दर जी ने ''**रामकली सद**'' में अंकित किया है —

सतिगुरि भाणै आपणै बहि परवारु सदाइआ॥
मत मै पिछै कोई रोवसी सो मै मूलि न भाइआ॥
अंते सतिगुरु बोलिआ मै पिछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ॥

रामकली सदु, पृष्ठ ९२३

आप जी ने गुरता गद्दी की ज़िम्मेदारी श्री गुरु रामदास जी को सौंप कर 30 अगस्त 1574 ई० को गोइंदवाल साहिब के स्थान पर —

सूरज किरणि मिले जल का जलु हूआ राम॥
जोती जोति रली संपूरनु थीआ राम॥

बिलावलु महला ५, पृष्ठ ८४६

की अवस्था प्राप्त कर गए।

---

१. लोगों के उधार के लिए, २. कृपा करके, ३. हुकम, चिट्ठी, ४. नहीं टलता।

आप जी ने संसार को नाशवान दर्शा कर सदा स्थिर रहने वाले प्रभु से जुड़ने की हिदायत की कि —

ए मन पिआरिआ तू सदा सचु समाले॥

एहु कुटंबु तू जि देखदा चलै नाही तैरै नाले॥

रामकली मः ३, पृष्ठ ९१८

मन को असलीयत से जानकार कराया कि —

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु॥

मन हरि जी तैरै नालि है गुरमती रंगु माणु॥

राग आसा मः ३, पृष्ठ ४४१

निंदा और माया के प्रभाव से बचने के लिए सचेत किया —

निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करंनि॥

राग सूही महला ३, पृष्ठ ७५५

माइआ ममता मोहणी जिनि विणु दंता जगु खाइआ॥

मनमुख खाधे गुरमुखि उबरे जिनी सचि नामि चितु लाइआ॥

सलोकु मः ३॥ पृष्ठ ६४३

लोभी मनुष्य से बचने के लिए आपने सावधान किया और फरमाया —

लोभी का वेसाहु न कीजै जे का पारि वसाइ॥

सलोकु महला ३, पृष्ठ १४१७

पराई अमाण किउ रखीऐ दिती ही सुखु होइ॥

सलोक महला ३, पृष्ठ १२४९

हरि के निवास का स्थान दर्शाते आपने फरमाया —

हरि मंदरु एहु सरीरु है गिआनि रतनि परगटु होइ॥

मनमुख मूलु न जाणनी माणसि हरि मंदरु न होइ॥

प्रभाती महला ३, पृष्ठ १३४६

मन को सम्बोधित करके असलीयत से परिचित करवाया —

ए मन पिआरिआ तू सदा सचु समाले॥
एहु कुटंबु तू जि देखदा चलै नाही तैरै नाले॥

रामकली महला ३, पृष्ठ ९१८

आप जी ने अपनी बाणी द्वारा जीवन के हर पहलू पर मार्गदर्शन किया है। मन को जोत सरूप दर्शाकर अपने धुरे से मिलने के लिए प्रेरित करते परमेश्वर अंग संग का उपदेश दृढ़ करवाया है। झूठे नशों से हटाकर नाम के रंग से अपनी आत्मा को रंगने की ताकीद की है। निंदा के वज्र भार से रोका है। पराई अमानत पर अपना हक जमाने से रोका। शरीर के अंदर ही सब कुछ दर्शा कर उस की गुरु अगवाई में प्राप्ति करने की प्रेरणा दी है और साथ ही यह हिदायत की है कि माया के प्रभाव अधीन, अन्धे, बहरे नहीं बनना बल्कि माया के प्रभाव से सचेत होकर गुरु उपदेश सुनकर उसके धारणी बनकर अपने लोक सुखी और परलोक सुहेले करने हैं।

आप जी की शख्सियत और दैवीय गुणों को दर्शाता एक सवैया भट्ट भल्ह जी ने लिखा है, जिसको पढ़ लें, सतगुरु अमरदास जी के महान् जीवन दर्शन की झलक ज़रूर मिलेगी। आप ने फरमाया है कि चाहे वर्षा के बादलों की बूंदे, धरती की वनस्पति, बसंत ऋतु में फूलों की गिनती, सूर्य और चन्द्रमा की किरणें, समुद्र का पेट और गंगा की लहरों की कोई गिनती नहीं कर सकता। शिव जी जैसी समाधि लगाकर गुरु के बख्शिश किए ज्ञान द्वारा ऊपर लिखे पदार्थों को चाहे कोई गिनकर वर्णन कर दे, पर भल्लों की कुल में प्रकट हुए गुरु अमरदास जी, आप जी की महिमा, आप जी के गुण वर्णन नहीं हो सकते। आप जैसे आप स्वयं ही हो—

सवईए महले तीजे के

घनहर बूंद बसुअ रोमावलि कुसम बसंत गनंत न आवै॥
रवि ससि किरणि उदरु सागर को गंग तरंग अंतु को पावै॥
रुद्र धिआन गिआन सतिगुर के कबि जन भल्य उनह जो गावै॥
भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै॥१॥ २२॥

पृष्ठ १३९६

भट्ट जालप जी का अनुभव देखें, आप जी फरमान करते हैं —

सवईए महले तीजे के

- गुरु अमरदासु परसीऐ[१] पुहमि[२] पातिक[३] बिनासहि॥
- गुरु अमरदासु परसीऐ सिध साधिक आसासहि[४]॥
- गुरु अमरदासु परसीऐ धिआनु लहीऐ[५] पउ 'मुकिहि'॥
- गुरु अमरदासु परसोऐ अभउ लभै[६] गउ[८] चुकिहि॥
- इकु बिंनि[९] दुगण[१०] जु तउ रहै जा सुमंत्रि मानवहि लहि[११]॥
- जालपा[१२] पदारथ इतड़े गुर अमरदासि डिठै मिलहि॥ ५॥ १४॥

पृष्ठ १३९४॥

◆ ◆ ◆

१. गुरु अमरदास जी के चरण परसने से २. धरती के ३. पाप ४. चाहते हैं ५. ध्यान लग जाता है ६. आवागमन का चक्र खत्म हो जाता है ७. और परमात्मा मिल जाता है ८. आवागमन ९. दिखाई देता है। १०. द्वैत ११. प्यार करने लग जाते हैं १२. भट्ट जी का नाम है।

श्री गुरु रामदास जी

जीवन वृत्तान्त

नाम	:	भाई जेठा जी, गुरु पदवी प्राप्त होने के पश्चात् सोढी सुल्तान गुरु रामदास जी।
प्रकाश समय	:	24 सितम्बर 1534 ई० (कार्तिक वदी 2 1591 विक्रमी सम्वत्)
प्रकाश स्थान	:	चूना मण्डी लाहौर (पाकिस्तान)
पिता जी	:	श्री हरदास जी (सोढी कुल)
माता जी	:	माता दया कौर जी (अनूपी जी)
गुरु के महल	:	बीबी भानी जी
संतान	:	श्री पृथी चन्द, श्री महादेव जी, श्री (गुरु) अर्जुन देव जी।
गुरता गद्दी प्राप्ति	:	30 अगस्त 1574 ई०, गोइंदवाल साहिब
गुरता गद्दी का समय	:	लगभग 7 साल
ज्योति जोत समाने का समय और स्थान	:	1 सितम्बर 1581 ई० गोइंदवाल साहिब
कुल आयु	:	47 वर्ष
गुरबाणी रचना	:	30 रागों में, 679 शबद, (सारी बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज है।)
विशेष कार्य	:	आप जी ने श्री अमृतसर शहर की स्थापना की और अमृतसर सरोवर का निर्माण किया। माया

के खर्चों को पूरा करने के लिए मसंद परम्परा कायम की और योजना-बद्ध तरीके के सिखी प्रचार का कार्य, पंजाब से बाहर भी शुरु किया। सिखों में अलग रस्म-रिवाज़ प्रचलित करने के लिए आप जी ने लावां की बाणी रचकर आनंद विवाह की प्रथा प्रचलित की। सिखों को आर्थिक तौर पर अपने पैरों पर निर्भर करने के लिए आप जी ने अलग-अलग किस्मों के 52 किरती कामगरों को अमृतसर शहर में बसाकर रोज़गार के साधन पैदा किए।

◆ ◆ ◆

श्री गुरु रामदास जी

सोढी स्रिसट सकल तारण कउ
अब गुर रामदास कउ मिली बडाई॥

श्री गुरु रामदास जी (बचपन का नाम जेठा जी) का प्रकाश 24 सितम्बर 1534 ई० को चूना मण्डी लाहौर में, पिता हरिदास जी ने गृह में माता अनूपी (दया कौर) जी की कोख से हुआ। बचपन से ही आप जी उदास स्वभाव के मालिक थे। अडोल, धैर्यवान् धर्म की मूर्त और बांटने की रुचि के धारणी थे। आप जी ने अभी बचपन से पांव निकाले ही नहीं थे कि सात साल की उम्र में ही आप जी की माता जी और थोड़े समय पश्चात् पिता जी प्रभु को प्यारे हो गए। माता-पिता का साया सिर से उठ जाने के कारण आप जी यतीमों की तरह दिन काटने लगे। सगे चाचे ताये भी आपको मदद या प्यार देने से पीछे हट गए। आप जी के नानी जी अपने दोहते भाई जेठा जी को लाहौर से बासरके अपने पास ले आए। आप जी के एक भाई हरदयाल और एक बहन जिसका नाम रामदासी था, जो आप से छोटे थे, उनकी ज़िम्मेदारी भी आप पर थी। किसी के सामने हाथ फैलाने की जगह आप जी ने अपने परिवार के गुज़ारे के लिए घुघणियों (उबले चने) का छाबा लगाना आरम्भ कर दिया। कुछ समय पश्चात् आप जी बासरके से गोइंदवाल साहिब आ गए। उस समय आप जी की आयु 16 साल की हो चुकी थी। थोड़ा समय आप जी किरत में लगाते, बाकी सारा समय गुरु घर की सेवा में सफला करते।

निष्काम और कठिन सेवा करने के कारण आप जी गुरु अमरदास जी की दृष्टि में परवान चढ़ चुके थे। एक समय माता रामो[१] जी ने सतगुरु गुरु अमर

१. गुरु अमर दास जी के महल

दास जी से विनती की, पातशाह! बीबी भानी वर प्राप्त करने लायक हो चुकी है। योग्य वर की तलाश करने के लिए ध्यान दो। श्री गुरु अमरदास जी ने स्वाभाविक ही पूछा कि वर कैसा होना चाहिए? माता रामो जी ने भाई जेठा जी, जो अपने सिर पर सेवा की टोकरी लेकर जा रहे थे, की ओर इशारा करके कहा, पातशाह! इस जैसा वर होना चाहिए। सतगुरु जी ने उत्तर दिया, रामो! इसके जैसा तो यही है। माता रामो जी की सलाह से बीबी भानी[१] जी का रिश्ता भाई जेठा जी से हो गया। रिश्ता होने के पश्चात् भी आप जी पहले की तरह गुरु घर की निरन्तर सेवा करते रहे। सेवा में बिल्कुल फर्क नहीं आने दिया और न ही रिश्तेदारी का अहंकार मन में होने दिया।

बंसावली नामे के कथन अनुसार–

साक ना जाता हिरदे रखिआ सेवकी भाउ॥
चचलाई चतराई न खेडण हसण दा चाउ॥
प्रीत चरना दी सेवकी रखी॥
बिना सतगुरु होर न देखण अखी॥
बरस अठाई सेव की कीती सहुरे न जाते॥

बसावली नाभा

अकबर जब 1566 ई० को लाहौर आया, सनातनी लोगों ने सतगुरु के खिलाफ बहुत सारी अर्जियां महजरनामे के रूप में अकबर बादशाह के सामने डाली कि इन्होंने वर्ण आश्रम वाला धर्म त्याग दिया है। राम-राम की जगह वाहिगुरु का सिमरन करते हैं। गायत्री के पाठ और त्रैकाल संध्या नहीं उच्चारण करते। ब्राह्मणों को नहीं पूजते, गुरबाणी पढ़ते और सभी वर्णों को इकट्ठा प्रशाद छकाते है। इस तरह की फिजूल शिकायतों का निपटारा करने के लिए अकबर का सन्देश जब गुरु अमरदास जी को मिला, तब आप जी ने जेठा जी को सब उत्तर देने के लिए लाहौर भेजा।

आप जी ने निवास चूना मण्डी किया। हरकारा आदर से लेने आया। आप जी राज दरबार पहुँचे, ब्राह्मणों के प्रश्नों के उत्तर में सबसे पहले आप जी ने

१. बीबी भानी जी इतिहास में ऐसी विलक्षण शख्सीयत है जिनको गुरु पुत्री, गुरु पत्नी और गुरु जननी होने गर्व प्राप्त है।

गायत्री मंत्र प्रति फरमाया कि गायत्री मंत्र वेद-रीति अनुसार किसी मलेच्छ के सामने नहीं पढ़ सकते पर गुरु की बाणी और उपदेश सभी के लिए सांझा है। गायत्री केवल द्विज ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य ही पढ़ सकता है। दूसरा गायत्री केवल सूर्य की पूजा का लखायक है पर गुरु नानक देव जी ने उस दर की समझ दी है जहाँ अनेको सूर्य चांद सिर झुका रहे हैं और उसका यश गायन करते हैं। ओंकार से पहले भी १ एक पहले कहा है कि गुरु नानक का मत एक अल्लाह वाहिद, ला-स्रीक का पुजारी है।

संस्कृत भाषा का त्याग तभी किया है क्योंकि इस भाषा को आम लोग समझ नहीं सकते। गुरु नानक देव जी ने संसार के लोगों की बोली में प्रभु का ज्ञान बख्शिश किया है ताकि सारे जन साधारण की कल्याण हो सके। आप ने जाति-पांति, एक श्रेणी का जूला दूसरी श्रेणी पर पक्का करने के लिए रची थी। गुरमत जाति पाति जन्म से नहीं कर्म से मानती है —

सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ॥ *प्रभाती म: १ पृष्ठ १३३०*

तीर्थ किसी जल या वनस्पति करके पवित्र नहीं। महापुरुषों के जप सिमरन के कारण पवित्र हुए हैं। जहाँ भी नामी बसता है, वही तीर्थ स्थान है। गुरु का सन्देश है —

तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है॥

तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु है॥

धनासरी महला १, पृष्ठ ६८७

गुरु घर, अल्लाह से और अल्लाह द्वारा रचित जनमानस से प्रेम सिखाता है, जहाँ एक-दूसरे से प्रेम बढ़ता है, वहाँ प्यार द्वारा आत्मा को प्रसन्नता मिलती है। आप लोग तीन काल संध्या को मानते हो, गुरमत हर समय सांई की हजूरी सिखलाती है। हर समय नाम जप द्वारा उस मालिक की हजूरी का आनन्द प्राप्त करना है। गुरु नानक देव जी ने मूर्ति पूजा का खण्डन किया है। मूर्ति एक जगह स्थित है। परमेश्वर खुदा सर्व-व्यापक है, मूर्ति कृत है। गुरमत कृत की पूजा से हटाकर करता की इबादत दृढ़ कराती है।

मन मेरे करते नो सालाहि॥

सभे छडि सिआणपा गुर की पैरी पाहि॥१॥ रहाउ॥

सिरीरागु महला ५, पृष्ठ ४३

दया के धारणी होना ही देव पूजा है। सच के धारणी बनकर झूठ का त्याग करना ही व्रत है। गुरु से ज्ञान प्राप्त करके उस अनुसार चलना, यह आत्मा को पवित्र करता है। हर एक में अल्लाह का नूर देखना किसी की आत्मा को न दुखाना ही सबसे बड़ी पूजा है।

गुरु घर सभी को मान सत्कार देता है पर ब्राह्मण सब को तुच्छ और हीन समझते हैं। स्वार्थी और लोभी माया के पीछे दौड़ते हैं पर गुरु जी तो दूसरे समय के लिए भी कुछ बचाकर नहीं रखते। हमेशा परमेश्वर और प्रारब्ध पर यकीन रखते है।

इन सभी प्रश्नों के उत्तर सुनकर सभी शान्त हो गए। किसी को कोई उत्तर नहीं आया। अकबर बादशाह ने भरे दरबार में हुक्म किया —

परमेश्वर दरवेश जि दोऊ॥ नही भेद एको इह सोऊ॥

सबको मुखातिब करके कहा कि इनसे चर्चा करना नहीं शोभा देता —

यह फकर मौला जात॥ नहीं चले इनसो बात॥

मौला वली नहीं भेद॥ किआ होइ पड़ीऐ बेद॥

गुरु हुक्म में भाई जेठा जी सबको निरुतर करके वापिस गोइंदवाल पहुँचे। सतगुरु जी ने आशीर्वाद बख्शिश करके नवाजा और अब **''धंनु धंनु रामदास गुरु जिनि सिरिआ तिनै सवारिआ''** की बख्शिशें मिलनी आरम्भ हो गईं।

आप जी ने लोक इच्छा, देह इच्छा, कुल इच्छा का मन से ही त्याग कर दिया था। आप जी को अनेकों ताने सहने पड़े पर आप जी ने रंचक मात्र भी मन नहीं डगमगाया। 24 साल तन मन से सेवा करके श्री गुरु अमरदास जी को रिझाया, सतगुरु गुरु अमर दास जी ने आप जी की सेवा पर प्रसन्न होकर 30 अगस्त 1574 ई० को गुरता गद्दी की ज़िम्मेदारी सौंप दी और ज्योति जोत समा गए।

श्री गुरु रामदास जी के कन्धों पर सारी ज़िम्मेदारियां आ गईं। अनेक तरह की विरोधता का सामना भी आप जी को करना पड़ा पर आप जी ने क्षमा और धैर्य में रहते सहनशीलता की नींव रखी और फरमाया —

बदले नहीं लैणे, धैर्य से बड़ा कोई तप नहीं॥
संतोख से बड़ा कोई सुख नहीं॥
लालच से बड़ी कोई बुराई नहीं॥
दया से बड़ी कोई नेकी नहीं॥
क्षमा से बड़ा कोई शस्त्र नहीं।
जो बीज रहा है अवश्य काटेगा।

आप जी ने फरमाया, अगर हम भी उनकी विरोधता करेंगे तो हममें और उनमें फर्क क्या है ? सभी का भला मांगना है। जो निरवैरौं से वैर करता है, मानो वह सारे संसार का पाप अपने सिर पर उठाता है, आपने फरमाया है —

निरवैरै नालि जि वैरु रचाए सभु पापु जगतै का तिनि सिरि लइआ॥

गउड़ी महला ४, पृष्ठ ३०७

निरवैरा नालि जि वैरु चलाइदे तिन विचहु तिसटिआ न कोइ॥
सतिगुरु सभना दा भला मनाइदा तिस दा बुरा किउ होइ॥

महला ४, पृष्ठ ३०२

आप जी ने गुरता गद्दी पर सुशोभित होकर 679 शबदों द्वारा रुहानी उपदेश प्रदान किया जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज है। आप जी ने लावां की बाणी रचकर आनंद विवाह की परम्परा पक्की की। गउड़ी राग में शबद रचकर गुरसिख की नित करणी को निरुपण किया —

गुर सतिगुरु का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु धिआवै॥
उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अंम्रित सरि नावै॥
उपदेसि गुरू हरि हरि जपु जापै सभि किलविख पाप दोख लहि जावै॥
फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै॥

जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि सो गुरसिखु गुरू मनि भावै॥
जिस नो दइआलु होवै मेरा सुआमी तिसु गुरसिखु गुरू उपदेसु सुणावै॥
जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की जो आपि जपै अवरह नामु जपावै॥२॥

महला ४, पृष्ठ ३०५-६

आप जी ने सुल्तान विंड जूह से ज़मीन खरीद कर 13 जून 1577 ई० को अमृतसर साहिब शहर की नींव रखी और अपनी देख-रेख में जहां सभी वर्णों और व्यवसायों के लोगों का निवास कराया, वहां कथित नीची जात वालों को शहर की चढ़ती ओर बसाकर एक क्रान्तिकारी कदम उठाया और गुरु नानक देव पातशाह जी के गुरु वाक्यों को सफल किया —

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस॥
जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस॥४॥३॥

सिरीरागु महला १, पृष्ठ १५

आप जी लोक परलोक की दातें प्राप्त करके भी अत्यन्त नम्रता में रहकर पुकारते थे —

जो हमरी बिधि होती मेरे सतिगुरा सा बिधि तुम हरि जाणहु आपे॥
हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे॥
धंनु धनुं गुरू नानक जन केरा जितु मिलिऐ चूके सभि सोग संतापे॥

गउड़ी बैरागणि, महला, ४, पृष्ठ १६७

आप जी की नम्रता अति की थी, केवल कहा ही नहीं करके दिखाया। जिस समय बाबा श्री चन्द जी आप जी की महिमा सुनकर अमृतसर पहुँचे। जब आप जी को बाबा श्री चन्द जी के आने का पता चला तो आप जी आगे होकर उनको लेने के लिए पहुँचे और बहुत आदर किया। बाबा श्री चन्द जी ने आपका लम्बा दाहड़ा देखकर वचन किया, पुरखा : इतना लम्बा सुन्दर दाहड़ा किस लिए बढ़ाया है ? नम्रता की मूरत गुरु रामदास जी बोले कि आप जैसे महापुरुखों के चरण झाड़ने के लिए और बाबा जी के चरण झाड़ने के लिए आगे बढ़े, बाबा श्री चन्द जी ने गले से लगा कर वचन किया कि गुरु अंगद

देव जी गुरु गद्दी सेवा करके ले गए और आपने नम्रता के कारण पाई है, तुम्हारी महिमा पहले ही बहुत है जो भी पापी आपके सरोवर में स्नान करेगा उसकी भी गति हो जाएगी —

देखि निम्रता गुरु की श्री चंद भए प्रसन्न॥
अगंद लीन सेवा कर तुमरो प्रेम अनंन॥
और —
इस तौर घर लूटिऔ हमारा॥ जो बाकी थी अब कछ मो पै॥
छीन लई योही तुम सो पै॥

तवारीख गुरु खालसा

आप जी बहुत उदार चित थे। क्षमा और धैर्य की आप मिसाल थे। जो शुरु से ही गुरु नानक निरंकारी की और गुरु अंगद देव जी की विरोधता और निंदा करते रहे, फिर सतगुरु अमरदास जी के समय भी उन्होंने अपनी हठ धर्मी का त्याग न किया। चाहे सतगुरु जी ने उनको-माफ करके संगत से मिलाने का यत्न किया, पर वह अभागे ही रहे। अब चौथी पातशाही सोढी सुल्तान गुरु रामदास जी ने फराख दिली से गुरु घर के दोषियों और निन्दकों का निस्तारा कर दिया। ऐसे थे गुरु रामदास जी। आप जी ने गउड़ी राग में फरमान किया है —

गुरि बाबै फिटके से फिटे गुरि अंगदि कीते कूड़िआरे॥
गुरि तीजी पीड़ी वीचारिआ किआ हथि एना वेचारे॥
गुरु चउथी पीड़ी टिकिआ तिनि निंदक दुसट सभि तारे।

सलोक महला ४, पृष्ठ ३०७

माया और सांसारिक पदार्थों से आप को बिल्कुल भी लगाव नहीं था। जब अकबर आपके दर्शनों को अमृतसर आया उसने एक सौ एक मोहरें आप जी की नज़र भेंट कीं तो आपने उसी वक्त गरीबों और ज़रूरतमंदों को बांट दीं। बारह गाँव की जागीर का पट्टा लिखकर देना चाहा, आपने फकीरों की जागीर चारों चक्क, कहकर लेने से इन्कार कर दी।

आप जी के समय आप जी की शिक्षा के धारणी बड़े-बड़े करनी वाले गुरसिख हुए हैं, जिनकी बदौलत सिखी का प्रचार चारों चक्क में हुआ। कुछ नाम जो इतिहास के अक्षरों में संभाले हुए हैं, वे हैं भाई अदली[१] जी, भाई संगतिया, भाई कल्याणा, भाई हरबसं तपा, भाई परागा, भाई सभाया, भाई जगता, भाई दरसा, भाई पूरन, भाई काला, भाई कंठा, भाई कृपा, भाई करमा, भाई गुरा, भाई भगवान, भाई बैरागा, भाई मंगल, भाई मोहना, भाई नछत्रा इत्यादि करनी वाले गुरसिख जो स्वयं जीवन मुक्त थे और अनेकों को तारने का माध्यम बने।

आप जी ने गुरबाणी में प्रभु सिमरन करने पर बहुत ज़ोर दिया और फरमाया— प्रभु सिमरन जहाँ आधि-व्याधि और उपाधियों का नाश करता है वहां भवजल से पार करता है —

जह हरि सिमरनु भइआ तह उपाधि गतु कीनी
वडभागी हरि जपना॥

धनासरी महला ४, पृष्ठ ६७०

इसलिए प्रभु सिरमन करते समय देरी नहीं करनी चाहिए, पता नहीं अगला श्वास आता है कि नहीं, जीवन क्षण-भंगुर है।

हरि जपदिआ खिनु ढिल न कीजई मेरी जिंदुड़ीए
मतु कि जापै साहु आवै कि न आवै राम॥

बिहागड़ा महला ४, पृष्ठ ५४०

गुरु जी की महानता को दर्शाते हुए आप बार-बार दृढ़ कराते हैं —

धनु धनु सत पुरखु सतिगुरू हमारा जितु मिलिऐ हम कउ सांति आई॥
धनु धनु सत पुरखु सतिगुरू हमारा जितु मिलिऐ हम हरि भगति पाई॥
धनु धनु हरि भगतु सतिगुरू हमारा जिस की सेवा ते हम हरि नामि लिव लाई॥

महला ३, पउड़ी पृष्ठ ५९४

---

१. जिन्हों की संगत से बाबा बिधी चन्द जी का जीवन बदला।

आप ने एक की टेक, एक का सिमरन, एक से मांगने की ताकीद की है —

हरि इको दाता सेवीऐ हरि इकु धिआईऐ॥

हरि इको दाता मंगीऐ मन चिंदिआ पाईऐ॥ *पउड़ी, पृष्ठ ५९०*

आत्मिक उच्चता के लिए एक गुरु, एक बाणी, एक ही शबद जो ओतप्रोत है के धारणी बनने के लिए ताकीद की है —

इका बाणी इकु गुरु इको सबदु वीचारि॥

सोरठि वार महला ३, पृष्ठ ६४६

संसार के मित्रों दोस्तों की असलियत दर्शाते आप जी एक सच्चे मित्र वाहिगुरु से जुड़ने की ताकीद करते हैं —

जो संसारै के कुटंब मित्र भाई दीसहि मन मेरे ते सभि अपनै सुआइ मिलासा॥

जितु दिनि उन्ह का सुआउ होइ न आवै तितु दिनि नेड़ै को न ढुकासा॥

गोंड महला ४, पृष्ठ ८६०

सतगुरु रामदास जी की पारखी आँख ने गुरु गद्दी का वारिस तो पहले ही गुरु अर्जुन देव जी को मान लिया था, क्योंकि गुरु अमरदास जी ही अपने समय संकेत कर गए थे कि बहुत भारी गुरु होगा **''दोहिता बाणी का बोहिथा''** वर आप जी को प्राप्त हो चुका था। पर फिर भी हुक्म मानने के पूरनों पर गुरु अर्जुन देव जी को चलाकर सभी सिख सेवकों की सन्तुष्टि कराके आप जी ने गुर गद्दी की ज़िम्मेदारी 28 अगस्त 1581 ई० को गुरु अर्जुन देव जी को सौंप दी।

दो दिन आप जी अमृतसर रहे, तीसरे दिन आप जी संगत और गुरु अर्जुन देव जी सहित गोइंदवाल आ गए। अमृत वेला में बाउली साहिब में स्नान कर आसा जी की वार का कीर्तन श्रवण किया और संगत को धैर्य और उपदेश देते आप जी 1 सितम्बर 1581 ई० को ज्योति जोत समा गए। गुरता गद्दी का छत्र और सिंहासन श्री गुरु अर्जुन देव जी को बख्शिश कर दिया और आप प्रभु जी के पास अटल-अडोल सिंहासन पर जा विराजे। भट्ट हरबंस जी ने अपने मुखारबिंद से फरमान किया है —

सवईए महले पंजवें के

देव पुरी महि गयउ आपि परमेस्वर भायउ॥
हरि सिंघासणु दीअउ सिरी गुरु तह बैठायउ॥
रहसु कीअउ सुर देव तोहि जसु जय जय जंपहि ॥
असुर गए ते भागि पाप तिन्ह भीतरि कंपहि॥
काटे सु पाप तिन्ह नरहु के गुरु रामदासु जिन्ह पाइयउ॥
छत्रु सिंघासणु पिरथमी गुर अरजुन कउ दे आइअउ॥

पृष्ठ १४०९

◆ ◆ ◆

श्री गुरु अर्जुन देव जी

जीवन वृत्तान्त

नाम	:	श्री गुरु अर्जुन देव जी
प्रकाश समय	:	15 अप्रैल 1563 ई०
प्रकाश स्थान	:	गोइंदवाल साहिब
पिता जी का नाम	:	श्री गुरु रामदास जी
माता जी का नाम	:	माता भानी जी
गुरु के महल	:	बीबी गंगा जी
संतान	:	श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी
गुरता गद्दी प्राप्ति	:	28 अगस्त 1581 ई. अमृतसर साहिब में
गुरता गद्दी समय	:	25 वर्ष
ज्योति जोत समाने का समय और स्थान	:	30 मई 1606 ई० रावी के किनारे लाहौर (पाकिस्तान)
कुल आयु	:	43 वर्ष
गुरबाणी रचना	:	30 रागों में 2218 शबद, (सारी बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में सुशोभित है)।
महान् कार्य	:	अपनी हाज़िरी में भाई गुरदास जी की मुबारक कलम द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का सम्पादन करना कर आदि ग्रंथ जी की रचना की। श्री हरिमन्दिर साहिब जी का नींव पत्थर एक मुसलमान दरवेश सांई मियां मीर जी से रखवाकर, मानवता के लिए सर्व-सांझे हरिमन्दिर

का निर्माण कराया। अमृत सरोवर को पक्का कराया। तरनतारन साहिब नगर की निर्माण और कुष्ठ रोगियों के लिए अमृत सरोवर की रचना और दवाखाने कायम किए। करतारपुर जालन्धर की नींव रखकर निर्माण किया। हरिमन्दिर साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश करके मर्यादा स्थापित की। जहाँ आप जी ने रुहानियत का श्रेष्ठ उपदेश गुरबाणी द्वारा बख्शिश किया, वहाँ धर्म की आन-शान को बरकरार रखने के लिए आप जी ने शहीदी परम्परा की नींव डालकर स्वयं प्रथम शहीद कहलाए।

◆ ◆ ◆

श्री गुरु अर्जुन देव जी

धरम धुजा अरजुनु हरि भगता।

श्री गुरु अर्जुन देव जी का जन्म 15 अप्रैल 1563 ई० को श्री गुरु रामदास जी के गृह में माता भानी जी की कोख से गोइंदवाल साहिब में हुआ। आप जी ने अपने बचपन के ग्यारह साल गोइंदवाल में बहुत धार्मिक माहौल में बिताए। आप जी को अपने नाना गुरु अमरदास जी की प्यारी मीठी गोद का आनन्द प्राप्त हुआ और समय-समय गुरु अमरदास जी ने आत्मिक आशीर्वाद **''दोहिता बाणी का बोहिथा''** देकर आप जी के होनहार भविष्य के बारे में **''किहड़ा बडा पुरख है भारी॥ जिस मंजी हिलाई साडी सारी॥''** के संकेत दिए॥

आप जी ने सांसारिक विद्या गुरमुखी, संस्कृत और देवनागरी में पूर्ण महारत प्राप्त कर ली। आप जी को घुड़सवारी का भी बहुत शौक था। नेजा-बाजी में आप जी निपुण थे।

आप जी का 11 साल की आयु में ही विवाह माता गंगा जी सपुत्री भाई कृष्ण चन्द जी गाँव माउ से हो गया, जिनकी कोख से 2 जून 1595 को गुरु हरिगोबिंद साहिब जी का प्रकाश हुआ।

भट्टों के कथनानुसार —

तै जनमत गुरमति ब्रहमु पछाणिओ॥

सवईए महले पजवें के, पृष्ठ १४०७

और —

भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख्य हरि॥

सवईए महले पंजवें के,पृष्ठ १४०९

धुर से प्रभु परमेश्वर जी ने जो जगत् तारने की ज़िम्मेदारी लगाई थी, उसको पूरी करने के लिए श्री गुरु रामदास जी ने आप जी को 28 अगस्त 1581 ई० को गुरता गद्दी सौंप दी। पृथी चन्द ने काफी ज़्यादा विरोध किया और सारी उम्र करता रहा। पर आप जी शांत चित अडोल रहकर पृथी चंद की सारी ज्यादतियाँ सहन करते रहे —

निरहंकार शांत चित धीर॥ हरख शोक नहि लेश गंभीर॥

पृथी चंद हर समय आप जी को परेशान करने की तरकीबें सोचता रहता था। जब उसका अपना कोई बल नहीं चला, तो वह कभी बीरबल के सामने और कभी सुलही खां के सामने फरियाद करने गया। एक समय सुलही खां को काफी ज्यादा माया का लालच देकर आप जी पर हमलावर बनने के लिए रज़ामंद कर लिया।

जब आप जी को पृथी चंद की कपटी चाल जो उसने सुलही खां से मिलकर बनाई थी, का पता चला तो आप जी ने सिखों को इक्ट्ठा करके उनकी सलाह पूछी। सिखों ने तीन मते पास करके सतगुरु जी की परवानगी लेनी चाही, पर आप जी ने दुनियावी तीनों मतों को ही परवान नहीं किया।

पहला मता था, कि सुलही खां को राज़ीनामे के लिए पत्र लिखा जाए। दूसरा मता था कि, अगर आपने लिखती समझौता सुलही खां से नहीं करना फिर दो गुरसिखों (भाई गुरदास जी, बाबा बुढ्ढा जी) को सुलही खां से बातचीत करने के लिए भेज दिया जाए। सतगुरु जी ने दोनों मतों को मंजूर नहीं किया। फिर सिखों ने विनती की कि पातशाह हमें हुक्म करो, हम जैसे भी हैं, सुलही खां का मुकाबला करें पर धैर्य-धर्म सतगुरु जी ने तीसरे मते को भी मंजूर नहीं किया।

गुरसिखों ने साहिबा के चरणों में विनती की, पातशाह! फिर करना क्या है? सतगुरु जी ने हुक्म दिया, गुरसिखो! उस कर्ता पुरख सर्व-समर्थ मालिक का सिमरन करो, जिसने सुलही खां को भेजा है, समर्थ प्रभु-स्वयं ही उसका उपाय कर देंगे। कितना यकीन था अपने मालिक प्रभु पर आप जी को —

प्रथमे मता जि पत्री चलावउ॥

दुतीए मता दुइ मानुख पहुचावउ॥

त्रितीए मता किछु करउ उपाइआ॥

मै सभु किछु छोडि प्रभ तूही धिआइआ॥१॥

आसा महला ५, पृष्ठ ३७१

जब दृढ़ यकीन से —

तिसु साहिब की टेक नानक मनै माहि॥

जिसु सिमरत सुखु होइ सगले दूख जाहि॥२॥

रागु गूजरी महला ५, पउड़ी पृष्ठ ५१७

प्रभु जी की टेक लेकर पुकारा, दाता —

तुधनो छोडि जाईऐ प्रभ कैं धरि[१]॥ आन[२] न बीआ तेरी समसरि[३]॥

आसा महला ५, पृष्ठ ३७१

सुलही खां जो गुरु घर पर अकारण हमलावर बनकर अहंकार युक्त आ रहा था, प्रभु भाग्य से आवे[४] में जलकर राख हो गया। इसका संकेत भी गुरबाणी में साहिबां ने दिया है और प्रेरणा दी है कि जो मनुष्य, सर्व-समर्थ प्रभु की चित में टेक (आसरा) रखकर उसको याद करता है, मालिक प्रभु

जिथै हरि आराधीऐ तिथै हरि मितु सहाई॥ *सूही महला ४, पृष्ठ ७३३*

की लाज रखता है। प्रभु सहायता के उपरान्त आप जी ने शब्द उच्चारण किया—

बिलावल महला ५

सुलही ते नाराइण राखु॥

सुलही का हाथु कही न पहुचै सुलही होइ मूआ नापाकु॥१॥ रहाउ॥

काढि कुठारु खसमि सिरु काटिआ खिन महि होइ गइआ है खाकु॥

मंदा चितवत चितवत पचिआ जिनि रचिआ तिनि दीना धाकु॥१॥

---

१. किस पास, किस तरफ, २. कोई दूसरा, ३. बराबर

४. जहाँ ईंटें पकाई जाती हैं, ईंटों का भट्ठा।

पुत्र मीत धनु किछू न रहिओ सु छोडि गइआ सभ भाई साकु ॥
कहु नानक तिसु प्रभ बलिहारी जिनि जन का कीनो पूरन वाकु ॥२ ॥

पृष्ठ ८२५

आपको अपने मालिक प्रभु पर अत्यन्त भरोसा था और हमेशा एक अकाल पुरख की टेक भरोसा रखने के लिए ही आप जी उपदेश करते थे।

अत्यधिक मुखालफत होने के बावजूद भी आप जी ने जहाँ गुरसिखी के प्रचार के लिए दौरे करके संगत को प्रभु चरणों से जोड़ा, वहाँ सिखों के लिए धार्मिक केन्द्र की स्थापना करने के लिए बीड़ा उठाया, ताकि सारी कौम को एक जगह पर केन्द्रित किया जा सके। आप जी ने इस महान् केन्द्र की नींव उस समय के पहुँचे हुए फकीर साई मियां मीर, (मीर. मुअईन-उल-असलम) जी पास से जनवरी 1588 ई० को रखवाई। थोड़े समय में ही हरिमन्दिर साहिब जी की सम्पूर्णता हो गई। मन्दिर तो उस समय, और अब भी बहुत हैं, जो देवी-देवताओं, अवतारों के मन्दिर कहलाते हैं। हरि के मन्दिर की केवल श्री गुरु अर्जुन जी ने ही सृजना की। जैसे हरि सबका सांझा है वैसे हरिमन्दिर के चारों दिशाओं में चार दरवाजें स्थापित करके, चारों वर्ण, चारों चक्कों के लिए सर्व-सांझी मानवता को बिना भेद-भाव, चारों पदार्थ प्राप्त करने और चार अक्षरों का जाप करने के लिए सर्व-सांझा तीर्थ स्थान प्रदान किया।

जहाँ सतगुरु जी ने हरिमन्दिर साहिब का सृजन और अमृत सरोवर को पक्का करने का कार्य किया वहाँ सतगुरु जी ने तरनतारन, करतारपुर (जालन्धर) के नगर स्वयं बसाए। अनगिनत कुएँ, तीन हरटे और छः हरटे, गुरु का बाग, अनेकों दवाखाने और कुष्ठ आश्रम ज़रूरतमंदों के लिए स्थापित किए।

सबसे बड़ा कार्य जो आप जी ने किया, वह अपनी हाज़री में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का सरूप जिसमें पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे सतगुरां और आप जी ने अपनी बाणी अंकित करके पन्द्रह भक्तों, ग्यारह भट्टों, चार गुरसिखों की बाणी भाई गुरदास जी पास से सम्पादित करवा कर इलाही फरमान रूपी गुरबाणी को मिश्रित होने से बचा लिया।

संसार में कोई भी ऐसा धर्म ग्रंथ नहीं है, जिसको उस समय के पीरों,

अवतारों ने अपनी मौजूदगी में सम्पादित कराया हो। सैंकड़ों वर्षों के पश्चात् उनके अनुयायियों ने अपनी स्मृति द्वारा लिखे हैं, जिनमें काफी से ज्यादा अन्तर हो चुका है।

केवल और केवल संसार में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का ही सरूप है, जिसको सतगुरु जी ने अपनी देख-रेख में अपने अनन्य गुरसिख भाई गुरदास जी के मुबारक हस्त कमलों से संपादित कराया और फिर स्वयं आप सारी लिखत का सुधार किया। यह सारा कार्य 1661 विक्रमी भाद्रों वदी एकम को सम्पूर्ण हुआ। पन्द्रह दिनों में जिलद बांधने का कार्य सम्पूर्ण होने के पश्चात् आप जी ने बहुत अदब और सत्कार से रामसर साहिब जी के स्थान से बाबा बुढ्ढा जी के शीश पर सुशोभित करके स्वयं चौर करते सारी संगत सहित नगर कीर्तन के रूप में (गुरु) ग्रंथ साहिब जी का सरूप, श्री हरिमन्दिर साहिब में सुशोभित किया और बाबा बुढ्ढा जी को गुरु ग्रंथ साहिब जी की सेवा सौंपी। सुबह से शाम तक की सारी मर्यादा कायम करके —

पोथी परमेसर का थानु॥
साधसंगि गावहि गुण गोबिंद पूरन ब्रहम गिआनु॥१॥ रहाउ॥

सारंग महला ५, पृष्ठ १२२६

और —

बाणी गुरु गुरु है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे॥
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरु निसतारे॥

नट महला ४, पृष्ठ ९८२

के हुक्मों को मानने की ताकीद की। परमेश्वर सरूप गुरबाणी का मन, चित से अदब सत्कार करने की हिदायत की, वहां स्वयं आप जी ने गुरु ग्रंथ साहिब जी के अदब सत्कार की नींव डाली और फरमान किया —

मेरे सरूप ते याते है दीरघ॥ साहिब जानि अदाइब कै है॥

आप जी ने अपने थोड़े समय के जीवन काल में महान् कार्य करके जनमानस पर महान् परोपकार किये। आपने भ्रमों, वहमों और खोखले कर्म-काण्डों से

निकाल कर सच का मार्ग रोशन किया। जैसे श्री गुरु रामदास जी का गउड़ी राग में फरमान है —

विचि सचे कूडु न गडई मनि वेखहु को निरजासि॥

गउड़ी सलोक महला ३, पृष्ठ ३१४

और —

जिना अंदरि कूड़ु वरतै सचु न भावई॥

जे को बोलै सचु कूड़ा जलि जावई॥ *सोरठ वार महला ४, पृष्ठ ६४६*

सच कहना, सच सुनना, सच में ढलना बहुत मुश्किल है, फिर खास तौर पर जिसके पास ताकत हो, उसको सच की आवाज़ सुननी और सहन करनी बहुत कठिन है। खास तौर पर राजनीतिक व्यक्ति को उतना खतरा फौजों या अपने दुश्मनों से नहीं होता जितना खतरा उसको सच से महसूस होता है। राजसी लोग हमेशा सच को दबाने का यत्न करते हैं। इसलिए दिन-प्रतिदिन सच की बढ़त उस समय के शासक जहाँगीर को नहीं अच्छी लगती थी। वह महसूस करता था कि यह बढ़ रही सच की आवाज़ किसी दिन उसके तख़्त के लिए खतरा बन सकती है। उसने अनेकों बहाने इकट्ठे करके गुरु अर्जुन देव जी को यासा की सजाएँ देकर शहीद करने का हुक्म जारी कर दिया। चंदू और मुरतज़ा खान ने आप जी को अत्यन्त कष्ट देकर 30 मई 1606 ई० को शहीद कर दिया।

गुरु अर्जुन देव जी ने अमृतसर में गिरफ्तारी देने से पहले गुरता गद्दी की ज़िम्मेदारी बाबा बुढ्ढा जी के माध्यम से गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी को सौंप कर पहले ही ताकीद कर दी थी **''बेटा, शरीर है छूटना, सहसा नहीं कोई''**, कठिन समय आ रहे हैं। बदी की ताकतें मानवता को निगलने के लिए तैयार हैं। गुरु नानक के घर ने प्रेम अणख और आज़ादी की रखवाली करनी है। अगर जरवाणे शांतमयी ढंग से न समझें तो जो बोली (शस्त्र की) वह समझते हैं, उसी से उनको सीधे रास्ते डालना। श्री गुरु हरिगोबिन्द जी ने मीरी और पीरी की दो तलवारें पहनीं और जुल्म का सामना शस्त्रों से करने की परम्परा को चलाते हुए गुरु नानक के तख्त के वारिस बने —''

पंजि पिआले पंज पीर छठमु पीरु बैठा गुरु भारी॥
अरजनु काइआ पलटि कै मूरति हरिगोबिंद सवारी॥

वार१, पउड़ी ४८

गुरु अर्जुन देव जी की महान शख्सियत प्रति बलवंड जी ने फरमान किया है कि गुरु नानक देव जी की जोत श्री गुरु अर्जुन देव जी के रूप में विराज रही है। सूर्य उदय से अस्त होने तक भाव सारे संसार और चारों लोकों में आप जी ने गुरु नानक देव जी के ज्ञान का प्रकाश कर दिया है —

तखति बैठा अरजन गुरू सतिगुर का खिवै चंदोआ॥
उगवणहु तै आथवणहु चहु चकी कीअनु लोआ॥

पृष्ठ ९६८

भट्ट मथरा जी ने आप जी की शख्सियत की जहाज से तुलना की है —

कलजुगि जहाजु अरजुनु गुरू सगल स्रिस्ट लगि बितरहु॥२॥

सवईए महले पंजवें के, पृष्ठ १४०८

और —

ततु बिचारु यहै मथुरा जग तारन कउ अवतारु बनायउ॥
जप्यउ जिन्ह अरजुन देव गुरू फिरि संकट जोनि गरभ न आयउ॥

सवैये महले पंजवें के, पृष्ठ १४०९

जहाँ भट्टों की दृष्टि में कलयुग के घोर भवजल से गुरु अर्जुन देव जी जीवों के निस्तारे के लिए जहाज तुल्य हैं, वहां गुरु अर्जुन देव जी का सिमरन करने से गर्भ योनियों से छुटकारा प्राप्त हो जाता है, क्योंकि गुरु अर्जुन देव जी और प्रभु हरि में बिल्कुल भी भेद नहीं है। मथरा जी फरमान करते हैं —

धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरुपी रहिओ भरि॥
भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख्य हरि॥१॥

सवईए महले पंजवें के, पृष्ठ १४०९

श्री गुरु अर्जुन देव जी के गुरबाणी में मुख्य उपदेश

संसार में हर मनुष्य सुख चाहता है। श्री गुरु अर्जुन देव जी ने सुख की प्राप्ति का साधन केवल नाम ही दर्शाया है। नाम सिमरन द्वारा जहाँ शारीरिक दुख दूर होते हैं, वहां परिवार में शान्ति और आत्मा स्थाई आनन्द की अवस्था को प्राप्त करती हैं। सुखमनी साहिब जी की बाणी का आरम्भ ही आप जी ने सिमरन से किया है —

सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ॥
कलि कलेस तन माहि मिटावउ॥

तथा —

सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु॥
भगत जना कै मनि बिस्त्राम॥ रहाउ॥

गउड़ी सुखमनी महला ५, पृष्ठ २६२

नाम ही लोक-परलोक में सहायता करने वाला है —

जह मात पिता सुत मीत न भाई॥
मन ऊहा नामु तेंरै संगि सहाई॥

गउड़ी सुखमनी महला ५, पृष्ठ २६४

नाम जपने में सफलता प्राप्त करने के लिए —

बारं बार बार प्रभु जपीऐ॥

गउड़ी सुखमनी महला ५, पृष्ठ २८६

का संदेश है। जहां एक अकाल पुरख का नाम जपने की ताकीद है, वहां :-

तिसु साहिब की टेक नानक मनै माहि॥
जिसु सिमरत सुखु होइ सगले दूख जाहि॥

रागु गूजरी वार म : ५, पृष्ठ ५१७

आसरा भी एक मालिक का लेना है, क्योंकि मनुष्य की टेक स्थायी नहीं है–

मानुख की टेक ब्रिथी सभ जानु।।

गउड़ी सुखमनी महला ५, पृष्ठ २८१

सभी दु:खों का मूल और प्रभु से बिछुड़ने का कारण केवल प्रभु को भूल जाना ही आप जी ने गुरबाणी में दर्शाया है —

परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग॥

वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग॥

बारह माहा माझ महला ५, पृष्ठ १३५

आप जी की दृष्टि में जो सच्चे के नाम का व्यापार करता है, वही असली शाह है —

सेई साह भगवंत से सचु संपै हरि रासि।

गउड़ी बावन अखरी महला ५, पृष्ठ २५०

आप जी की दृष्टि में जिस मनुष्य ने संसार में आकर अपने जीवन के मनोरथ को नहीं जाना, उसमें और पशुओं में कोई अन्तर नहीं —

आवन आए स्रिसटि महि बिनु बूझे पसु ढोर॥

गउड़ी बावन अखरी महला ५, पृष्ठ २५१

मनुष्य जीवन का प्रयोजन क्या है ? गोबिंद से मिलना —

भई परापति मानुख देहुरीआ॥

गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ॥

आसा महला ५, पृष्ठ १२

संसार में आना किनका सफल है ? जो अपनी रसना से प्रभु का नाम जपता है —

आइआ सफल ताहू को गनीऐ॥

जासु रसन हरि हरि जसु भनीऐ।

गउड़ी बावन अखरी महला ५, पृष्ठ २५२

आप जी की दृष्टि में सुन्दर कौन हैं ? जो सत्संगत में बैठकर नाम जपते हैं—

सेई सुंन्दर सोहणे ॥ साधसंगि जिन बैहणे ॥

माझ महला ५, पृष्ठ १३२

सभी समझदारियों का त्याग करके की सिफत सलाह करनी है —

मन मेरे करते नो सालाहि ॥

सभे छडि सिआणपा गुर की पैरी पाहि ॥१ ॥

सिरीरागु महला ५, पृष्ठ ४३

संसार में बड़ा कौन है ? संसार में मायाधारी बड़ा नहीं है, बड़ा वह है, जिसने अपनी सुरत प्रभु नाम में जोड़ी है —

कउन वडा माइआ वडिआई ॥ सो वडा जिनि राम लिव लाई ॥१ ॥

गउड़ी महला ५, पृष्ठ १८८

जो गरीबों, लाचारों पर क्रोध करता है, परमेश्वर उसको सजा देकर अग्नि में जलाता है, इसलिए हमेशा ज़रुरतमंद गरीबों पर दया करनी चाहिए —

गरीबा उपरि जि खिंजै दाड़ी ॥ पारब्रहमि सा अगनि महि साड़ी ॥१ ॥

गउड़ी महला ५, पृष्ठ १९९

◆ ◆ ◆

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी

जीवन वृत्तान्त

नाम	:	त्याग मल जी, युद्ध में तेग से जौहर दिखाने से आपका नाम तेग बहादुर रखा गया।
प्रकाश समय	:	1 अप्रैल 1621 ई०
प्रकाश स्थान	:	गुरु के महल, अमृतसर साहिब
पिता जी	:	श्री गुरु हरि गोबिन्द साहिब जी
माता जी	:	माता नानकी जी[१]
गुरु के महल	:	माता गुजरी जी
संतान	:	(श्री गुरु) गोबिंद सिंह साहिब जी
गुरता गद्दी दिवस	:	11 अगस्त 1664 ई० बाबा बकाला में।
गुरता गद्दी समय	:	11 वर्ष
ज्योति जोत समाना	:	11 नवंबर 1675 ई० दिल्ली, चांदनी चौक में शहीद कर दिए गए।
कुल आयु	:	54 वर्ष
गुरबाणी रचना	:	116 शबद और श्लोक, जिनको श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने तलवंडी साबो (गुरु की काशी) दमदमा साहिब में आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मलित करके, दमदमी बीड़ का रूप दिया, जिसको श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने अपने ज्योति

१. सपुत्री श्री हरिचंद बकाला निवासी।

जोत समाने से पहले 7 अक्तूबर 1708 ई० को नांदेड़ (महाराष्ट्र) में गुरता गद्दी बख्शिश करके सारे संसार को युगों युग अटल श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बख्शिश की।

महान् कार्य : आप जी ने शिवालिक की पहाड़ियों के पांवों में दरिया सतलुज के किनारे 2200 रुपये को माखोवाल गांव की धरती खरीद कर चक नानकी की नींव 19 जून 1665 को रखी, जिसका नाम बाद में श्री आनन्दपुर साहिब रखा गया। इसी स्थान पर ही श्री कलगीधर पातशाह जी ने खालसा पंथ की साजना की। जिस स्थान पर आपजी ने यह कार्य सम्पन्न किया वह जगह आजकल खालसा पंथ का तख्त श्री केसगढ़ साहिब कहलाती है। दूसरे आप जी ने **''भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन''** के सिद्धान्त बनाकर इसका प्रचार किया और इस सिद्धान्त पर चलकर स्वयं नींव डाली। दूसरे धर्म की आन-शान के लिए जिसके आप न धारणी थे और न ही उस धर्म पर यकीन रखते थे, फिर भी गरीबों मज़लूमों और शरण में आए की लाज पालने के बिरद अधीन आप जी ने अपने शरीर का बलिदान दिया। तभी आपजी को **'हिंद की चादर'** कहकर सम्मानित किया जाता है।

◆ ◆ ◆

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी

तेग बहादर सिमरीऐ घर नउ निधि आवै धाइ॥

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी का प्रकाश 1 अप्रैल 1621 ई० को पिता गुरु हरगोबिंद साहिब जी के घर माता नानकी जी की कोख से श्री अमृतसर साहिब में हुआ। आप जी जन्म से ही अतीत वृति के धारणी थे, आप जी पास जो जरूरतमंद आता था, ज़रूरतमंद देखते, जो कुछ भी आप पास माया या वस्त्र होते, आप उसको दे देते।

आप जी का पहला नाम त्याग मल था। एक समय फगवाड़े पास पलाही के स्थान पर मुग़लों ने श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब पर अचानक हमला बोल दिया। आप जी मुग़ल सिपाहियों से ऐसी सूरमगति से जूझे, आप की तेग ने मुग़लों को भगा दिया। गुरु हरगोबिन्द साहिब जी, आप की बहादुरी देखकर प्रसन्न हुए और फरमाया, आप त्याग मल नहीं, आप तो तेग बहादुर हो। उस समय से आप का नाम तेग बहादुर प्रचलित हो गया।

आप जी ने सारी आयु वही उपदेश दिया, जिसकी आप जी ने अपने जीवन में कमाई की। अपने बचपन के एक साथी को आपने तब तक गुड़ खाने से मना नहीं किया जब तक आपने खुद गुड़ खाना छोड़ नहीं दिया।

तेरह साल की उम्र में आपका विवाह भाई लाल चंद, करतारपुर जालन्धर निवासी की पुत्री (माता) गुजरी जी से हुआ।

श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी ने गुरता गद्दी का सौंपना, जब गुरु हर राय जी को कर दिया तो आप जी को सतगुरु जी ने बाबे बकाले जाकर रहने के

लिए हुक्म कर दिया। आप जी, माता नानकी जी और श्री गुजरी जी सहित अपने नानके गाँव बकाले आ गए। गुरु हरगोबिन्द साहिब जी ने बकाले को जाते समय आप जी को एक कटार और पोथी बख्शिश की और हुक्म किया, समय से गुरता गद्दी आपके ही घर आ जाएगी।

आप जी ने बकाले जाकर धरती में भोरा (गुफा) बना लिया। उसमें बैठकर 26 साल, 9 महीने 13 दिन ऐसी प्रभु सिमरन की कमाई की, जिसकी मिसाल कहीं ढूंढने से नहीं मिलती।

जब दिल्ली में श्री गुरु हरिकृष्ण साहिब जी ने शरीर अलोप करने से पहले तीन बार गोलकार हाथ घुमाया और हुक्म दिया, ''**बाबा बकाले**'' और साथ ही शीश झुकाया। इधर बाबे बकाले सोढियों ने अपने आपको गुरु प्रकट करने के लिए 22 मंजियां लगा लीं और अपने-अपने मसंदों के माध्यम से लोगों को गुमराह करने लगे।

भाई मखण शाह जो बहुत बड़ा व्यापारी था उसका माल से लादा जहाज़ सूरत की बन्दरगाह पर बरेती में फँस गया। सारे प्रयत्न करने के पश्चात् भी किनारे न लगा। उसने गुरु नानक देव जी की गद्दी का ध्यान करके दसवंध और 500 मोहर की सुखणा की। गुरु कृपा से बेड़ा किनारे लग गया। माल बेचने के पश्चात् मखण शाह दसवंध और सुखणा की माया लेकर दिल्ली पहुँचा। श्री गुरु हरिकृष्ण जी के ज्योति जोत समाने और उनकी ओर से गुरु का बाबे बकाले का इशारा सुनकर भाई मखण शाह बाबे बकाले पहुँचा। वहां 22 गुरु देखकर उसका चित डांवाडोल हो गया। सच्चे गुरु की परख करने के लिए उसने दो-दो मोहरें रखकर सबको माथा टेका पर किसी से मन की तसल्ली नहीं हुई। आखिर पता करके भोरे के अंदर गुरु तेग बहादुर साहिब जी पास पहुँचा। वहां भी मखण शाह ने दो मोहरें रखकर माथा टेका पर अन्तर्यामी सतगुरु जी ने मखण शाह को सम्बोधित करके फरमाया, मखण शाह! सुखणा तो पांच सौ मोहरें और दसवंध की थी, पर अर्पण दो कर रहा है। सतगुरु जी के वचन सुनकर मखण शाह गुरु जी के चरणों में गिर पड़ा। क्षमा मांगी और

दसवंध की और सुखणा की सारी माया गुरु चरणों में अर्पण करके ऊँची-ऊँची पुकारता हुआ छत पर चढ़कर कहने लगा —

भुलीए संगति सुनहु सकान॥ सतिगुर लधा मरद महान॥

गुरु लाधो रे॥ गुरु लाधो रे॥

जब सारी सच्चाई संगत के सामने प्रकट हो गई, उसी समय गुरु दर्शनों की प्यासी संगत गुरु तेग बहादुर साहिब जी की ओर उमड़ पड़ी और दीवान सज गया।

उधर धीरमल ने शीहें मसंद को कहकर आपजी के शरीर को नुक्सान पहुँचाने के लिए गोली भी चलवाई पर आप जी बाल-बाल बच गए। फिर भी धीरमल के मन की ईर्ष्यालु अग्नि शान्त नहीं हुई। गुरु तेग बहादर साहिब जी के घर का सारा सामान मसंदों को साथ लेकर लूट गया। पर धैर्य मेराण (पर्वत) क्षमा के पुंज श्री गुरु तेग बहादुर जी ने बिल्कुल भी बुरा नहीं माना। जब मखण शाह को इस घटना का पता चला, उसने अपने साथियों सहित धीरमल को सबक सिखाने के लिए, उस पर हमला बोल दिया और उसका सारा सामान बीड़[१] के साथ ले आए पर धैर्य ध्वज सतगुरु जी ने सारा धीरमल का लूटा हुआ सामान वापिस कर दिया और संगत को हुक्म दिया —

करणी छिमा महा तप जान॥ छिमा सकल तीरथ इशनान॥

बदले नहीं लैणे, दरब के काज गुरु महाराज ने नहीं इह बैठ दुकान पाई॥

गुर बिलास पातशाही १०

सतगुरु तेग बहादुर साहिब जी ने बकाले से प्रस्थान करना ही मुनासिब समझा। आप अमृतसर, तलवंडी साबो, धमधाण, कीरतपुर साहिब आदि। यहां सतलुज दरिया के किनारे शिवालिक की पहाड़ियों के चरणों में बसे गाँव माखोवाल की सारी ज़मीन 2200/- रुपये में खरीद कर चक्क नानकी (आनन्दपुर साहिब) का शुभारम्भ 19 जून 1665 ई. को किया।

---

१. श्री (गुरु) ग्रंथ साहिब जी की आदि बीड़

आप ने सिख समुदाय के प्रचार पर विशेष ध्यान दिया। आप इसी प्रचार के अन्तर्गत आनन्दपुर साहिब से धनौली, बहादुरगढ़, नौलख बछोआहणा, सधेड़ी, धमधाण, कुरुक्षेत्र, वांगर देश पार कर मथुरा पहुंचे। यहां श्रद्धालुओं को गुरु उपदेश से दृढ़ता प्रदान करवाते हुए आप कानपुर, इलाहाबाद होते हुए पटना साहिब पहुँचे। माता गुजरी जी और परिवार को सालस राय जेहरी की हवेली में आश्रय करवा कर आप ने ढाका, आसाम, बंगाल में सिख समुदाय का प्रचार करने के उद्देश्य से आगे प्रस्थान किया।

जिज्ञासुओं की तरफ से प्रभु भक्ति के प्रश्न के उत्तर में आप जी ने फरमाया कि हर उस वस्तु से चित तोड़ना चाहिए जो प्रभु (वाहिगुरु) से चित जोड़ने से रुकावट बनती है। दूसरा असली भक्ति यह है कि प्रभु से इतना स्नेह बन जाए कि बाकी सब कुछ भूल ही जाए। आप ने अपने मुखारविंद से 116 शबदों और श्लोकों की रचना की। जिन्हें श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने आदि ग्रन्थ साहिब में अंकित करके सम्पूर्ण गुरु ग्रन्थ साहिब जी का मौजूदा रूप दिया।

धन्ने नामक जिज्ञासु को जो प्रभु प्राप्ति के लिए जंगल में संन्यासी बनकर जा रहा था, सतगुरु जी ने उसे घर पर रह कर बन्दगी करने का उपदेश दिया और उसे वाहिगुरु का अस्तित्व उस के भीतर ही दृढ़ करवाया। आप ने गुरबाणी का उच्चारण उसे रास्ता दिखाया–

काहे रे बन खोजन जाई॥
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई॥१॥ रहाउ॥
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई॥
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई॥१॥
बाहरि भीतरि ऐको जानहु इहु गुर गिआनु बताई॥
जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई॥१॥

धनासरी म: ९, पृष्ठ ६८४

मन क्यों नहीं लगता ? प्रश्न के उत्तर में आप ने उखड़ेपन का मूल कारण तृष्णा को ही बताया–

साधो इहु मनु गहिओ न जाई॥

चंचल त्रिसना संगि बसतु है या ते थिरु न रहाई॥१॥ रहाउ॥

गउड़ी म: ९, पृष्ठ २१९

सुख की प्राप्ति नाम सिमरन द्वारा प्रकट की–

हरि को नामु सदा सुखदाई॥

जा कउ सिमरि अजामलु उधरिओ गनिका हू गति पाई॥१॥ रहाउ॥

मारु महला ९, पृष्ठ १००८

तथा–

सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहिन कोइ॥

श्लोकु म: ८, पृष्ठ १४२६

जोगी भूलक दास के दर्शन प्राप्ति और शान्ति के लिए निवेदन करने पर आप ने कहा, **''गुरबाणी पढ़ने से दर्शन प्राप्त होगें। शान्ति सिमरन के द्वारा मिलेगी॥''**

संसार की नाशवानता को प्रकट करते हुए गुरु तेग बहादुर जी ने दुनिया को पानी का बुलबुला, रेत की दीवार और स्वप्न के उपनाम प्रयोग करके सच्चाई को दृढ़ किया है।

जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि॥

इन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान॥२३॥

श्लोक म: ६, पृष्ठ १४२७

जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत॥

कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति॥१६॥

श्लोक म: ९, पृष्ठ १४२९

जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत॥

जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत॥२५॥

श्लोक म: ६, पृष्ठ १४२७

मनुष्य जन्म बहुमूल्य है इस से परमेश्वर का भजन करके मानव जन्म को सफल कर लेना चाहिए :-

साधो गोबिंद के गुन गावउ॥ मानस जनमु अमोलकु पाइओ

बिरथा काहि गवावउ॥१॥ रहाउ॥

गऊड़ी म: ९, पृष्ठ २१९

सब कुछ प्रभु मालिक के ही हाथ में है। वह सर्व सामर्थ्य का मालिक है। भिखारियों को राजा और राजाओं को भिखारी, भरे को खाली और खाली को भरना उस के लिए पल भर का काम है :-

छिन महि राउ रंक कउ करई राउ रंक करि डारे॥

रीते भरे भरे सखनावै यह ता को बिवहारे॥

बिहागड़ा महला ९, पष्ठ ५३७

संसार के सम्बन्धियों की असलियत दर्शाते आप जी फरमाते हैं कि सारे सज्जन, मित्र, रिश्तेदार अपने सुख और गर्ज़ के लिए ही प्यार करते हैं। जब गर्ज़ पूरी नहीं होती, रिश्ता और दोस्ती तोड़ लेते हैं। कोई किसी का नहीं होता यह तो—

दारा मीत पूत सनबंधी सगरे धन सिउ लागे॥

जब ही निरधन देखिओ नर कउ संगु छाडि सभ भागे॥१॥

सोरठि महला ९, पृष्ठ ६३३

तथा —

प्रीतम जानि लेहु मन माही॥

अपने सुख सिउ ही जगु फांधिओ को काहू को नाही॥१॥ रहाउ॥

सोरठि महला ९, पृष्ठ ६३४

मनुष्य के लिए माया की नींद से जागना बहुत ज़रूरी है। अज्ञान भय की नींद से जागने के लिए प्रभु सिमरन ज़रूरी है —

जाग लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइआ।
जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइआ॥१॥ रहाउ॥

तिलंग महला ९, पृष्ठ ७२६

असली ज्ञानी कौन है ? जो न किसी को भय दे और न ही खुद किसी के डर अधीन जीवन व्यतीत करे, ऐसा स्वतंत्र ज़मीर वाला असली ज्ञानी है। आप का फरमान है —

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन॥
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि॥१६॥

सलोक महला ९, पृष्ठ १४२७

आप जी की दृष्टि में जो मनुष्य दिन रात प्रभु चिंतन करता है, उसमें और परमात्मा में बिल्कुल भी फर्क नहीं, वह परमात्मा का ही रूप होता है —

जो प्रानी निसि दिनु भजै रूप राम तिह जानु॥
हरि जन हरि अंतरु नही नानक साची मानु॥२९॥

सलोक महला ९, पृष्ठ १४२७

असली जीवन का राज़ उस समय ही खुलता है जब गुरु कृपा और नाम सिमरन से समता वाली वृति बन जाती है पर यह अवस्था है बहुत कठिन —

सोरठि महला ९

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै॥
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै॥१॥ रहाउ॥
नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना॥
हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना॥१॥
आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा॥
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा॥२॥
गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी॥
नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी॥३॥११॥

पृष्ठ ६३३-३४

संसार को शान्ति का उपदेश देते आपजी आसाम में विचर रहे थे। आप जी के गृह में माता गुजरी जी की कोख से पटना साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का प्रकाश 22 दिसम्बर, 1666 ई० को हुआ। आप जी आसाम से पटना पहुँचे। गोबिन्द राय जी से मिलकर पंजाब आनन्दपुर साहिब आ गए।

इस समय औरंगज़ेब ने अपने ज़बर का कुल्हाड़ा हिन्दुओं के धर्म को मिटाने क लिए चलाना शुरु कर दिया था। एक तरफ ज़बरदस्ती मन्दिर गिराए जा रहे थे, दूसरी ओर हिन्दुओं पर ज़ज़िया लगा दिया। धार्मिक मेलों पर पाबन्दी और इस्लाम में लाने के लिए लालचों का दौर चला दिया।

कश्मीरी पण्डितों ने एकत्रित होकर शिव मन्दिर अमरनाथ की गुफा में शिव जी की आराधना की। आकाशवाणी हुई कि आप पंजाब में सिखों के नौंवे गुरु तेग बहादुर की शरण में जाओ, वह तुम्हारी बांह पकड़ेंगे। पण्डित कृपा राम की अगुवाई में 500 ब्राह्मणों का वफद आनन्दपुर साहिब पहुँचा और धर्म की रक्षा के लिए विनती की। सतगुरु जी ने उनको भरोसा दिया कि जाओ शाह को कह दो कि हमारे आगू (मार्गदर्शक) गुरु तेग बहादुर जी हैं, अगर आप उनको दीन इस्लाम में ले आओ तो हम सभी इस्लाम के धारणी बन जाएंगे।

आप जी **'बाह जिना दी पकड़ीअै सिर दीजै बाह न छोड़ीअै'** के वचन को पूरा करने के लिए आनन्दपुर साहिब से दिल्ली को चल पड़े। आप जी समाना, कैथल, लखनमाजरा होते हुए आगरा पहुँचे। वहां आप जी को मुग़ल सिपाही गिरफ्तार करके दिल्ली ले गए। आप जी के साथ भाई मती दास, भाई सती दास, भाई दयाल दास जी ने भी गिरफ्तारी दी। तीन सिख भाई जैता, भाई गुरदित्ता और भाई ऊदा जी को सतगुरु ने पहले ही अपने से जुदा कर दिया था।

आप जी के सामने तीन शर्तें रखी गईं; मुसलमान बनो या करामात दिखाओ, या शहीद होना मंजूर करो। आप जी के सामने भाई मति दास जी को आरे से चीर कर,भाई सती दास जी को रुई में लपेट आग लगा कर और भाई दयाल

दास जी को देग में उबाल कर शहीद कर दिया। आपजी अडोल चित —

चित चरन कमल का आसरा चित चरन कमल संगि जोड़ीऐ॥

और—

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन॥

सलोक महला ९, पृष्ठ १४२७

के सोहिले गाते 11 नवम्बर 1675 ई० को चांदनी चौक दिल्ली में शहादत प्राप्त कर गए।

आप जी का शीश भाई जैता जी ने सम्भाल लिया और पांचवें दिन आनन्दपुर साहिब पहुँचा दिया। भाई गुरदित्ता जी, भाई ऊदा जी ने भाई लखीशाह से मिलकर शरीर की सम्भाल करके अपने घर पहुँच सतगुरु जी के शरीर को चिता पर रखकर अपने घर को आग लगा दी, इस जगह अब गुरुद्वारा रकाब गंज सुशोभित है जहां सतगुरु तेग बहादुर साहिब जी के शीश का संस्कार किया गया, वहाँ गुरुद्वारा शीश गंज (आनंदपुर साहिब) सुशोभित है।

इस विचित्र अनोखी शहादत प्रति श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबारी कवि सेनापति जी ने बहुत सुन्दर लिखा है —

प्रगट भए गुरु तेग बहादर॥ सगल सृष्ट पै ढापी चादर॥

करम धरम की जिनि पति राखी॥ अटल करी कलयुग मै साखी॥

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने मुखारविंद से श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की शहादत का वर्णन आगे लिखे दोहरों में इस प्रकार किया है —

तिलक जंझू राखा प्रभ ता का॥ कीनो बडो कलू महि साका॥

साधन हेति इती जिनि करी॥ सीसु दीआ पर सी न उचरी॥

धरम हेत साका जिनि कीआ॥ सीस दीआ पर सिररू[१] न दीआ॥

नाटक[२] चेटक कीए कुकाजा[३]॥ प्रभ लोगन कह आवत लाजा॥[४]१॥।

---

१. हठ २. करामातें ३. बुरा कर्म (कुकर्म) ४. शर्म

ठीकर[१] फोरि दिलीस[२] सिरि प्रभ पुर कीआ पयान॥
तेग बहादर सी क्रिआ करी न किनहूं आन[३] ॥१५॥
तेग बहादर के चलत भयो जगत को सोक[४]॥
है है है सभ जग भयो जै जै जै सुर लोक॥१६॥ ४१०॥

पा: १०वीं, बचित्र नाटक

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी ने शहादत के लिए जाने से पहले गुरता गद्दी की ज़िम्मेदारी श्री गुरु गोबिंद सिंह जी को सौंप दी थी, जिनकी उम्र अभी नौ साल की ही थी।

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने ज्योति जोत समाने से पहले गुरु नानक पातशाह जी की गुरता गद्दी युगों युग अटल श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को सौंप दी जो सदा के लिए जिज्ञासुओं को प्रभु से जुड़ने की प्रेरणा देते रहे हैं, दे रहे हैं और देते रहेंगे।

◆ ◆ ◆

१. शरीर रूपी बर्तन २. दिल्ली तख्त के सिर। ३. ओर ४. अफसोस

भक्त कबीर जी

जीवन वृत्तान्त

नाम	:	भक्त कबीर जी
जन्म	:	1398 ई०
जन्म स्थान	:	काशी (बनारस) नज़दीक लहर तलाउ
पालक पिता	:	नीरू अली जी
पालक माता	:	श्री मति नीमा जी
सुपत्नी	:	माता लोई जी
संतान	:	पुत्र : कमाला जी, पुत्री : कमाली जी
गुरु दीक्षा	:	भक्त रामानन्द जी के पास
पेशा	:	जुलाहा : कपड़ा बुनना
समय का हुक्मरान (नवाब)	:	सिकन्दर लोधी
श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज बाणी	:	17 रागों में 541 शबद और श्लोक (इसमें 6 श्लोक सतगुरु जी के उच्चारण किए हुए हैं)
खास स्थान	:	कबीर चौरा (काशी में)
परलोक गमन	:	1518 ई० हड़म्बा (जिसको मगहर भी कहा जाता हैं। गोरखपुर से पश्चिम की ओर 15 मील पर, प्रान्त उत्तर प्रदेश में।
कुल आयु	:	120 वर्ष
मुख्य उपदेश	:	सारा संसार एक प्रभु की कृत है और एक का

रूप है। ऊँच-नीच का भेदभाव मनुष्य के पैदा किए हुए हैं; जो परमात्मा से दूरी पैदा करते हैं। प्रभु किसी का खरीदा नहीं हुआ। परमात्मा से प्यार करके नाम जपकर जुड़ा जा सकता है, प्रभु से जुड़ने से मनुष्य मौत से निर्भय हो जाता है और पुकार कर कह देता है, "**कबीर जिसु मरने ते जग डरै मेरे मनि आनंदु**" और वह "**कबीर मुहि मरने का चाउ है**" के सोहिले गाने लग जाता है। यह अवस्था मिलती है, प्रभु के गुण गायन करने से —

"**कबीर तूं तूं करता तू हुआ**
मुझ महि रहा न हूँ
जब आपा पर का मिटि गइआ
जत देखउ तत तू॥२०४॥"

सलोक कबीर जी, पृष्ठ १३७५

◆ ◆ ◆

भक्त कबीर जी

बाबा कबीर जी का जन्म 1398 ई० में काशी (बनारस) के नज़दीक लहर तलाउ में हुआ। आप जी का पालन-पोषण पिता नीरु अली और श्रीमति नीमा ने बहुत प्यार से किया। आप जी धुर परमेश्वर जी की ओर से **''जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए''** की कार करने के लिए भेजे गए।

आप जी का आगमन उस समय हुआ जिस समय मुसलमानी अत्याचार शिखर पर था और ब्राह्मणी मत के अधीन जनमानस खोखले कर्मकाण्डों की, गहराई में फँसा हुआ था। मनुष्य, मनुष्य की परछाई पड़ने पर अपवित्र हो जाता था। आप जी के पिता ने काजी और मौलवी के पास पढ़ने के लिए भेजा। मौलवी आपको मुसलमानी शरह अनुसार चलता देखना चाहता था। पर आप जी की निगाह में चाहे अल्लाह और राम में कोई फर्क नहीं था पर आप जी की रुचि शुरु से राम-राम के जाप में ज्यादा थी। आप जी अपनी मौज में कभी अल्लाह कभी राम कहते पर मुसलमान इस समदृष्टि को कैसे बर्दाशत कर सकते थे। ब्राह्मण आप को मुसलमानी घर में परवरिश होने के कारण नफरत करते थे।

आप जी थोड़े बड़े हुए, आप जी का विवाह बाबा नेती जी की पुत्री माता लोई जी से हो गया। माता लोई जी नेक शील स्वभाव और परमेश्वर के भय-भावना वाली थीं। बाबा कबीर जी अपने पिता जी के साथ कपड़ा बुनने का कार व्यवहार करने लग पड़े। बहुत तन-देही के साथ परिवार के रोज़गार के लिए आप जी हाथों-पांवों से कर्म करते और मन के साथ निरंकार का सिमरन हर समय करते रहते। समयानुसार आप के घर दो बच्चे पैदा हुए। आप जी ने पुत्र का नाम कमाल और पुत्री का नाम कमाली रखा।

आप जी चाहे हर समय राम-नाम का सिमरन करते रहते थे पर मन में प्रभु प्राप्ति की लालसा के अधीन गुरु वाले बनने की अत्यन्त आकांक्षा[१] थी। उस समय छुआ-छूत, जात-पात की बीमारी शिखर पर थी। उस समय रामानन्द जी बहुत करनी वाले महापुरुष थे। आप जी की लालसा रामानन्द जी को गुरु धारण करने की थी। इस विचार अधीन कि मुझे निम्न जाति से समझकर शायद, भक्त रामानन्द जी अपना शिष्य न बनाएँ। आप जी उनकी चरण-स्पर्श प्राप्त करने के लिए प्रभात के समय मनीकरण घाट पर जहां रामानन्द जी हर रोज़ नियम से स्नान किया करते थे, जाकर लेट गए। अपने नियम अनुसार जब रामानन्द जी स्नान करने घाट पर आ रहे थे, तो आपका पांव कबीर से टकराया। आप जी ने महसूस किया कि कोई मनुष्य सोया हुआ है। रामानन्द जी ने स्वाभाविक सम्बोधिक शब्द उच्चारण किए, ''उठ, राम के राम कहु, अमृत वेला है, क्यों गफलत में सोया पड़ा है।'' आप जी ने उठकर रामानन्द जी को नमस्कार की और घर लौट आए। गुरु के चरण-स्पर्श से रोम-रोम में राम के नाम का जाप आरम्भ हो गया। भाई गुरदास जी ने इस घटना को इस प्रकार बयान किया है —

होइ बिरकतु बनारसी रहिंदा रामा नंदु गुसाईं॥
अंम्रतु वेले उठि कै जांदा गंगा नाहवण ताईं॥
अगो ही दे जाइ कै लंमा पिआ कबीर तिथाईं॥
पैरीं टुंबि उठालिआ बोलहु राम सिख समझाई॥
जिउ लोहा पारसु छूहै चंदन वासु निंमु महकाई॥
पसू परेतहु देव करि पूरे सतगुर दी वडिआई॥
अचरज नो अचरजु मिलै विसमादै विस्मादु मिलाई॥
झरना झरदा निझरहुं गुरमुखि बाणी अघड़ घड़ाई॥
राम कबीरै भेदु न भाई॥१५॥ *वार दसवीं पउड़ी १५*

नाम सिमरन की रौं (लय) इतनी प्रबल चल पड़ी कि एक क्षण मात्र भी

---

१. इच्छा

आप उसको छोड़ना नहीं चाहते थे। कई बार आप जी कार-व्यवहार भी छोड़ देते। जब परिवार पूछता, कि आपने काम क्यों छोड़ा है ? आप उत्तर देते कि जिस कार्य को करने से मुझे क्षण मात्र भी प्रभु भूल जाए, मैं उस काम को करने के लिए कभी तैयार नहीं। बुनने के काम में धागा बार-बार टूटता है। जब नली में फूंक मारकर धागा डालता हूँ तो मेरा ध्यान परमेश्वर के नाम से टूट जाता है। आप जी ने अपनी आप बीती गूजरी राग में वर्णन की है —

मुसि मुसि रोवै कबीर की माई॥
ए बारिक कैसे जीवहि रघुराई॥१॥
तनना बुनना सभु तजिओ है कबीर॥
हरि का नामु लिखि लीओ सरीर॥१॥ रहाउ॥
जब लगु तागा बाहउ बेही॥
तब लगु बिसरै रामु सनेही॥२॥ *गूजरी घर ३, कबीर जी, पृष्ठ ५२४*

जो भी आप जी के पास आता, आपजी बिना भेदभाव उसको प्रभु प्राप्ति का उपदेश देते क्योंकि आप जी को सम-वृत्ति प्राप्त हो चुकी थी। आप जी का फरमान था कि सारी सृष्टि एक अकाल पुरख की पैदाइश है, हर एक जीव को पांचों तत्वों की मिट्टी लगी हुई है। सभी में एक परमात्मा का नूर ही जलवे मार रहा है। ऊंच-नीच भेदभाव केवल मनुष्यों ने अपने निजी स्वार्थों के लिए डाला है। जब कोई आप जी से पूछता है कि आपने जाति-वर्ण सब एक कर दिया है तो आप जी उसको समझाते कि सारा पसारा एक का ही है। तुम कैसे भ्रम में हो। असलियत यह है —

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे॥१॥
लोगा भरमि न भूलहु भाई॥
खालिकु खलक खलक महि खालिकु
पूरि रहिओ स्त्रब ठांई॥१॥ रहाउ॥

माटी एक अनेक भांति करि साजी साजनहारै॥

ना कछु पोच[१] माटी के भांडे ना कछु पोच कुंभारै॥२॥

प्रभाती कबीर जी,पृष्ठ १३४९-५०

कथित जाति के अभिमान वालों पर चोट करते आप जी उनको निरुत्तर कर देते हैं, कि परमात्मा ने किसी के साथ भेदभाव नहीं किया। जैसे ब्राह्मण माता के उदर में से जन्म लेता है, उसी तरह शूद्र संसार में जन्म लेता है। फिर फर्क किस बात का —

जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ॥

तउ आन[२] बाट[३] काहे नही आइआ॥ *गउड़ी कबीर जी, पृष्ठ ३२४*

हे ब्राह्मण! अगर परमात्मा ऊंच-नीच का फर्क करता तो, फिर ब्राह्मण की रगों में खून की जगह दूध होना चाहिए था, पर ऐसा नहीं है। आप ने फरमाया —

तुम कत ब्राहमण हम कत सूद॥

हम कत लोहू तुम कत दूध॥ *गउड़ी कबीर जी, पृष्ठ ३२४*

आप जी की सच्ची और अकाट्य दलीलों के सामने ब्राह्मण निरुत्तर तो हो जाते थे पर आप जी से अन्दर से बहुत ईर्ष्या करते थे। बाबा कबीर जी ब्राह्मण की बनाई हुई गलत मान्यताओं का हमेशा खण्डन करते रहते थे। आप जी का सिद्धान्त था कि नाम जपने से मन पवित्र होता है, न कि तीर्थों के जल से; जल के स्नान से शरीर तो ज़रूर स्वच्छ हो जाता है पर मन नहीं। मन पवित्र केवल निर्मल कर्मों और प्रभु बंदगी से होता है —

कांइआ मांजसि कउन गुनां[४]॥ जउ घट भीतरि है मलना[५]॥१॥ रहाउ॥

लउकी[६] अठसठि तीरथ न्हाई॥ कउरापनु तऊ न जाई॥

सोरठि कबीर जी, पृष्ठ ६५६

आप जी के भजन प्रताप से साधु महात्माओं का आप जी के दर्शनों के लिए तांता लगा रहता। आप जी के पास इतनी संगत आती कि पारिवारिक

---

१. नुक्स, २. और, ३. रस्ते, ४. की लाभ, ६. जे अंदर मैल है, ६. कड़वी तूंबी

शिकवे आप जी को हमेशा सहन करने पड़ते —

इक दुइ मंदरि[१] इक दुइ बाट[२] ॥
हम कउ साथरु[३] उन कउ खाट[४] ॥
मूड[५] पलोसि कमर बधि पोथी ॥
हम कउ चाबनु[६] उन कउ रोटी ॥३ ॥ *गोंड कबीर जी, पृष्ठ ८७१*

जो भी घर में होता, सारा ज़रूरतमंद अभ्यागतों को बांट देते। समय-समय ईर्ष्यालु ब्राह्मणों ने आप को नीचा दिखाने के लिए कई षडयंत्र रचे पर हर समय परमेश्वर ने स्वयं प्रत्यक्ष होकर आपजी के मान-सत्कार को चार चांद लगाए। तभी आप जी ने अपनी बाणी में फरमान किया है —

कबीर ना हम कीआ न करहिगे ना करि सकै सरीरु ॥
किआ जानउ किछु हरि कीआ भइओ कबीरु कबीरु ॥६२ ॥

सलोक कबीर जी, पृष्ठ १३६७

जहाँ आप जी, ब्राह्मणों के खोखले कर्म-काण्डों का पाज बहुत दिलेरी से उधेड़ते, वहाँ मुसलमानी शरह-शरीयत के भी आप जी विपरीत थे। आप जी साबत सूरत दस्तार सिरा के अलंबरदार थे, जो परमेश्वर ने शरीर की बणत बनाई है। उसमें कमी-बढ़ौतरी करने को आप जी परमात्मा की अवज्ञा करना कहते थे। तभी मुसलमानों के सुन्नत करवाने के लिए आपने तर्क की है —

सकति सनेहु[७] करि सुंनति करीऐ मै न बदउगा[८] भाई ॥
जउ रे खुदाइ मोहि तुरकु करैगा आपन ही कटि जाई ॥२ ॥
सुंनति कीए तुरकु जे होइगा अउरत का किआ करीऐ ॥
अरध सरीरी नारि न छोडै ता ते हिंदू ही रहीऐ ॥३ ॥

आसा कबीर जी, पृष्ठ ४७७

दिखावा करके नमाज़ पढ़नी, सिज़दा करना, हज करना व्यर्थ है अगर नियत साफ न की —

---

१. घर में २. रास्ते में ३. परती ऊपर पराली विछा कर ४. साधुओं को खटीया देते हैं ५. सिर पर हाथ फेरते हैं ६. भुने दाने ७. औरत से प्रेम कर के ८. मैं ना मानूंगा।

किआ उजू पाकु कीआ मुहु धोइआ किआ मसीति सिरु लाइआ॥
जउ दिल महि कपटु निवाज गुजारहु किआ हज काबै जाइआ॥३॥

प्रभाती कबीर जी, पृष्ठ १३५०

दोनों सम्प्रदायों की कमियां आप जी हमेशा धर्म के ठेकेदारों और आम जनमानस के सामने बड़ी दिलेरी से खंडित करते थे। सच्चाई सुननी बहुत कठिन है।

दोनों फिरके मुसलमान और ब्राह्मण आप जी के कट्टर विरोधी बन गए। सिकन्दर लोधी बादशाह के पास अनेकों शिकायतें हुई कि कबीर दोनों धर्मों के विरुद्ध प्रचार करता है। सिकन्दर लोधी के सिपाही आप जी को बादशाह के पास ले गए। शिकायतों के विरोध में आप जी ने उतर दिया, बादशाह सलामत! मैं किसी भी धर्म के अकीदे के विरुद्ध नहीं हूँ। मैं केवल धर्म के पर्दे में जो पाखण्ड चल रहा है, उस पाखण्ड के खिलाफ हूँ। बादशाह ने अहंकार अधीन भक्त जी की एक न सुनी और कबीर जी के हाथ पाँव बांधकर हाथी के सामने फैंक दिया। जिसका वर्णन बाबा कबीर जी ने गौंड राग में किया है —

भुजा[१] बांधि भिला[२] करि डारिओ[३]॥ हसती क्रोपि मूंड महि मारिओ॥
हसति भागि कै चीसा मारै॥ इआ मूरति कै हउ बलिहारै॥१॥
आहि[४] मेरे ठाकुर तुमरा जोरु॥ काजी बकिबो[५] हसती तोरु॥१॥ रहाउ॥
रे महावत तुझु डारउ[६] काटि॥ इसहि तुरावहु घालहु साटि[७]॥
हसति न तोरै[८] धरै धिआनु॥ वा कै रिदै बसै भगवानु॥२॥
किआ अपराधु संत है कीन्हा॥ बांधि पोट[९] कुंचर[१०] कउ दीन्हा॥
कुंचरु पोट लै लै नमसकारै॥ बुझी नही काजी अंधिआरै[११]॥३॥
तीनि बार पतीआ[१२] भरि लीना॥ मन कठोरु अजहू न पतीना[१३]॥
कहि कबीर हमरा गोबिंदु॥ चउथे[१४] पद महि जन की जिंदु॥४॥१॥४॥

राग गोड कबीर जी, पृष्ठ ८७०

---

१. बाजू, २. पोटली, ३. सारथी हाथी के सिर में कुन्डा मारता है, ४. हे मेरे ठाकुर मुझे आप का ही सहारा है, ५. कहता है, ६. तुझे काट दूंगा, ७. हस को चोटें मखाउ ८. नहीं चलता, ९. पोटली, १० हाथी, ११. अन्धें काजी ने १२. परतावा, १३. तसल्ली नहीं हुई। १५. भगत की आत्मा तुरीक्ष अवस्था में होती है।

जब सच सरूप बाबा कबीर जी को हाथी ने भी कुछ नहीं कहा, बल्कि नमस्कार की। कठोर मन बादशाह ने अपनी हेठी समझ कबीर जी को गंगा नदी में ज़जीरों से बांधकर फेंकने का हुक्म दिया। अहलकार और जल्लाद बाबा कबीर जी को ज़ंजीरों से बांधकर नाव में बैठा कर गंगा में फेंकने के लिए ले चले। पर क्या हुआ ? आप जी ने भैरव राग में अंकित किया है —

भैरउ कबीर जी

गंग[१] गुसाइनि गहिर[२] गंभीर॥ जंजीर[३] बांधि करि खरे कबीर॥१॥
मनु न डिगै तनु काहे कउ डराइ॥ चरन कमल चितु रहिओ समाइ॥ रहाउ॥
गंगा[४] की लहरि मेरी टुटी जंजीर॥ म्रिगछाला[५] पर बैठे कबीर॥२॥
कहि कंबीर कोऊ संग न साथ॥ जल थल[६] राखन है रघुनाथ॥३॥

पृष्ठ ११६२

बाबा कबीर जी को गंगा नदी में डूबा कर मारने में भी जब बादशाह को सफलता न मिली तो बाबा कबीर जी से सभी को माफी मांगनी पड़ी। चारों दिशाओं में आपकी जय-जयकार हो गई।

जब आप जी ने महसूस किया कि अब हमारा शरीर त्यागने का अंतिम समय आ गया है। प्रभु जी की ओर से लगाई ड्यूटी पूरी हो गई है, तब आप जी ने एक अन्य मान्यता जो प्रचलित थी, उस भ्रम को दूर करने के लिए आप जी काशी छोड़ कर मगहर आ बसे, क्योंकि पण्डितों ने प्रचलित कर रखा था कि जो मनुष्य काशी में शरीर त्यागता है, वह सीधा बैकुण्ठ धाम को जाता है। जो मनुष्य मगहर (हड़म्बा)की धरती पर शरीर त्याग करता है चाहे वह कितना भजनीक हो, उसको नरकों में जाना पड़ता है। आप जी ऐसे भ्रम-वहमों से सहमत नहीं थे, सभी जगह परमेश्वर जी की बनाई हुई हैं। मनुष्य के कर्म ही बुरे या अच्छे हैं, अच्छे कर्मों के कारण जीवन-मुक्ति मिलती है और बुरे कर्मों

---

१. गन्गा दरीया, २. गहरी, ३. जंजीर से बांध कर ४. गंगा जी की जल तरंगों में फेंकते ही मेरी जांजीरें खुल गईं, ५. भृगशाला, ६. जल और भूमि पर।

का फल दु:ख और नर्क मिलता है। आप जी ने ''**काशी मगहर सम बीचारी**'' की नींव डालकर 120 साल संसार में शरीर के माध्यम से विचरण करके जनमानस को प्रभु मिलाप का मार्ग रोशन किया और गलत विचार धाराओं का सारी उम्र खण्डन किया। भ्रमों, वहमों, पाखण्डों का जहाँ डटकर विरोध किया, वहीं सच की शमां रोशन करके सच्चा बनने की प्रेरणा की। आप जी 1518 ई० को गुरु-अर्जुन देव जी के फरमान अनुसार —

सूरज किरणि मिले जल का जलु हूआ राम॥
जोती जोति रली संपूरनु थीआ राम॥

बिलावल महला ५, पृष्ठ ८४६

बाबा जी की आत्मिक जोत प्रभु ज्योति में लीन हो गई और सदा के लिए जनमानस को भटकन से बचाने के लिए अपनी असली जोत शबद सरूप में 541 शबद श्लोकों द्वारा पीछे छोड़ गई जिस शबद जोत को श्री गुरु अर्जुन देव जी ने गुरु ग्रंथ साहिब जी में बहुत अदब और सत्कार से सम्भाल कर सुशोभित किया।

◆ ◆ ◆

भक्त रविदास जी

जीवन वृत्तान्त

नाम	: श्री रविदास जी
जन्म समय	: 1378 ई०
पिता जी	: रामू उर्फ मान दास (प्रचलित नाम संतोखा था)
माता जी	: धुरबिनीआ-करमा देवी उर्फ दिआरी जी
स्थान	: काशी (उत्तर प्रदेश)
परिवार	: परिवार की सूचना उपलब्ध नहीं है।
गुरु दीक्षा	: रामानन्द जी के पास से
कृत	: चमड़े का काम
गुरु ग्रंथ साहिब जी में बाणी दर्ज	: 40 शबद : 16 रागों में।
परलोक गमन	: काशी में
परलोक गमन का समय	: 1529 ई०
जीवन काल	: 151 साल
मुख्य उपदेश	: जितना समय मनुष्य अपनी अलग अस्तित्व हस्ती में ग्रसित रहता है उतना समय प्रभु से दूरी बनी रहती है। आप का फरमान है, ''**जब हम होते तब तू नाही**'' मैं मेरी को खत्म करने के लिए कलयुग में केवल नाम ही साधन है—

''सतजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार॥
तीनौ जुग तीनौ दिड़े कलि केवल नाम अधार॥''

गउड़ी रविदास पृष्ठ ३४६

मनुष्य को संसार से प्रीति तोड़कर निरंकार से सच्ची प्रीति करनी चाहिए है क्योंकि निरंकार की सच्ची प्रीति ही आत्मा की साथी बनती है। इसलिए—

साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी॥
तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी॥३॥

रागु सोरठि रविदास जी, पृष्ठ ६५९

के धारणी बनना चाहिए। निरंकार की सच्ची प्रीति ही मनुष्य को बेग़मपुरे का वासी बना देती है।

◆ ◆ ◆

भक्त रविदास जी

भक्त रविदास जी का जन्म 1378 ई० को उत्तर प्रदेश के काशी (बनारस) शहर में पिता संतोखा जी, माता करमा देवी उर्फ दिआरी जी की कोख से हुआ। आप जी के पिता जी चमड़े का काम करते थे और धार्मिक वृति के मालिक थे। कुछ धार्मिक रुचियाँ आप जी को पिता जी से मिली, विशेष सब कुछ धुर प्रभु जी से ही लेकर आए थे।

जिस समय आप जी ने संसार में आगमन किया, मानवता की दशा बहुत दयनीय थी। ब्राह्मणों ने अपनी सर्वोच्चता (Supermacy) का जूला सारी मानवता पर डाला हुआ था। ब्राह्मणों के बिना और कथित अछूत जातियों को न धर्म ग्रंथ पढ़ने और न ही उनके अनुसार चलने का अधिकार था। कोई अछूत किसी भी देवी-देवता के मन्दिर में जाकर पूजा पाठ नहीं कर सकता था। अगर कोई दिलेरी करके ऐसा करने का यत्न भी करता उसको सख्त से सख्त सजाएँ दी जाती थीं। अछूतों की झुग्गियाँ शहर से बाहर पश्चिम की ओर डाली जाती थीं। किसी कुएँ से अछूत पानी नहीं पी सकता था। अगर किसी ज़रूरी काम के लिए उसने शहर में घुसना हो या शहर में से गुजरना हो, उसको हुक्म था कि वह अपने गले में घण्टी डालकर गुज़रे ताकि घण्टी की आवाज़ सुनकर ब्राह्मण उसके सामने पड़ने से अलग हो जाए और उसकी परछाई की छूत से बच सके। अछूत को अपने पदचिन्ह मिटाने के लिए अपने पीछे पेड़ की एक टहनी भी बांधनी पड़ती थी ताकि अछूत के पाँव के निशान साथ ही मिटते

१. रविदास महिमा में आप जी के पिता का नाम रामू लिखा है।

जाएं क्योंकि उसके लगे हुए पद चिन्ह पर अगर ब्राह्मण का पांव रखा जाए तो वह भ्रष्ट हो जाता था। ऐसी ग्लानि और नफरत भरे समय में आप जी ने प्रभु भक्ति करके समाज में क्रान्ति लाने का भरपूर यत्न किया और सफलता भी प्राप्त की। जिस कारण आप जी के जीवन से प्रेरणा लेकर मीराबाई और चितौड़ के राजा की रानी झालाबाई जैसी ऊँची जाति की आत्माओं ने आप जी को अपना मुर्शिद बनाया। पर ईर्ष्यालु कथित जाति अभिमानी ब्राह्मण हमेशा आप जी से नफरत और ईर्ष्या करते रहे। समय-समय अनेकों बहाने बनाकर और दोष आरोपित करके आप जी को परेशान करने के लिए भी यत्नशील रहे, पर परमात्मा ने आप जी का हर समय, हर जगह पक्ष लिया और निदंकों दुष्टों को मुँह की खानी पड़ी। आप जी की आत्मिक शक्ति और भक्ति की गूँज चारों चक्कों में पड़ गई। जिसको भाई गुरदास जी ने निम्नलिखित अनुसार अंकित किया है —

भगतु भगतु जगि वजिआ चहुँ चक्कां दे विचि चमिरेटा॥
पाणहा गंढै राह विचि कुला धरम ढोइ ढोर समेटा॥
जिउं करि मैले चीथड़े हीरा लालु अमोलु पलेटा॥
चहुं वरना उपदेसदा गिआन धिआनु करि भगति सहेटा।
न्हावणि आइआ संगु मिलि बनारस करि गंगा थेटा॥
कढि कसीरा सउपिआ रविदासै गंगा दी भेटा॥
लगा पुरबु अभीच दा डिठा चलितु अचरजु अमेटा॥
लइआ कसीरा हथु कढि सूतु इकु जिउ ताणा पेटा॥
भगत जनां हरि मां पिउ बेटा॥१७॥

वार १०, पउड़ी १७

श्री गुरु रामदास जी ने भी अपनी प्रेम भक्ति का संकेत देकर फरमान किया है, कि चाहे लोग रविदास जी को नीच जाति का जानकर नफरत करते थे पर परमेश्वर के सिमरन की बरकत से चारों वर्ण, क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्व और शूद्र आप जी के चरणों पर आकर नमस्कार करते थे —

रविदासु चमारु उसतति करे हरि कीरति निमख इक गाइ॥
पतित जाति उतमु भइआ चारि वरन पए पगि आइ॥२॥

सूही महला ४, पृष्ठ ७३३

गउड़ी राग में आप जी अपनी आत्मिक उच्चता दर्शाते संसार के भटके हुए लोगों को मार्गदर्शन बख्शिश करते हैं कि हे संसार के लोगों! अव्वल दोम, सोम के विभाजन आपने अज्ञानता कारण लोगों में डाले हुए हैं। प्रभु के दर में कोई ऊंचा नीचा नहीं है। उस जगह पर किसी की जाति-पाति नहीं देखी जाती, वहाँ तो कर्म ही प्रधान हैं। यहाँ संसार में जगह-जगह पर आपने कथित अछूतों के जाने पर पाबन्दी लगाई हुई है पर प्रभु के शहर बेग़मपुरे में किसी पर कोई पाबन्दी नहीं। पहुँचे हुए जिज्ञासु जब चाहें अपने प्यारे से मिलाप प्राप्त कर सकते हैं। वहां कोई डर, चिंता, घबराहट नहीं सताता। वहाँ कोई दु:ख तकलीफ नहीं और न ही कोई टैक्स (कर) भरना पड़ता है। वह ऐसा देश है जहां हमेशा कृपा ही कृपा बरसती है। इस संसार की तरह किसी को ईर्ष्या द्वेष का शिकार नहीं बनना पड़ता। इस संसार में तो आप मुझ पर इतनी पाबन्दी लगा दोगे पर उस देश में जिसका मैं वासी बन चुका हूँ क्या करोगे ? भाव कुछ नहीं कर सकोगे। आप का फरमान है —

गउड़ी रविदास जी

बेगम पुरा सहर को नाउ॥ दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ॥
नां तसवीस खिराजु न मालु॥ खउफु न खता न तरसु जवालु॥१॥
अब मोहि खूब वतन गह पाई॥ ऊहां खैरि सदा मेरे भाई॥१॥ रहाउ॥
काइमु दाइमु सदा पातिसाही॥ दोम न सेम एक सो आही॥
आबादानु सदा मसहूर॥ ऊहां गनी बसहि मामूर॥२॥
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै॥ महरम महल न को अटकावै॥
कहि रविदास खलास चमारा॥ जो हम सहरी सु मीतु हमारा॥३॥२॥

पृष्ठ ३४५

जहाँ आप जी बेगमपुरा के वासी थे, वहां प्रभु जी से आपकी कितनी एकता और नज़दीक की सांझ थी। गुरु ग्रंथ साहिब जी में आप फरमान करते हैं, हे मालिक प्रभु! तुममें और मुझमें कोई फर्क नहीं; केवल देखने मात्र ही है। जैसे सोने और सोने के गहनों में, पानी और लहरों में कोई फर्क नहीं होता वैसे तेरे और मेरे में कोई अन्तर नहीं है। आप जी का प्रभु से कितना प्यार था, आप फरमाते हैं कि हे अनन्त प्रभु! अगर हम पाप न करते तो तुम्हारा नाम पतित पावन कैसे होता? अर्थात् नहीं होना था। हे मालिक! आप मालिक हो एक बात यकीनन है कि मालिक से दास की बड़ाई होती है और दास से ही मालिक की बड़ाई प्रकट होती है। अन्त में मांग की है, हे मालिक! मुझ पर कृपा करो, मैं हमेशा तुम्हारी ही आराधना करता रहूँ, आप का फरमान है —

सिरीरागु रविदास जी

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा॥१॥
जउ पै हम न पाप करंता अहे अनंता॥
पतित पावन नामु कैसे हुंता॥१॥ रहाउ॥
तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी॥
प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी॥२॥
सरीरु आराधै मो कउ बीचारु देहू॥
रविदास सम दल समझावै कोऊ॥३॥

पृष्ठ ९३

रविदास जी, पशुओं की खाल उतार कर, उसके जूते बनाकर और गांठकर अपनी और परिवार की पालना करते थे। सांसारिक माया की तंगी की ओर आप का ध्यान कभी नहीं जाता था। ध्यान हमेशा प्रभु बन्दगी में जुड़ा रहता था। माया की ओर से आपकी वृत्ति इतनी निर्लिप्त थी, जिस प्रति श्री गुरु अर्जुन देव जी ने गुरबाणी में फरमान किया है—

रविदासु ढुवंता ढोर नीति तिनि तिआगी माइआ॥ *महला ५, पृष्ठ ४८७*

इतिहास में ज़िक्र आता है कि एक समय प्रभु जी ने एक साधु का रूप

धारण करके आप जी की कुटिया में एक रात काटी। जाने से पहले साधु ने अपने पास से एक पारस पत्थर निकाल कर रविदास जी को देना चाहा और साथ ही पारस के गुण दर्शाकर आप जी के जूते गांठने वाली रम्भी को छू कर सोना बना दिखाया। भक्त जी ने पारस को छंन के आले में रखवा दिया और अपनी कृत करने और नाम जपने में जुड़ गए। काफी समय के पश्चात् वह साधु फिर रविदास जी की झोंपड़ी में आए, पारस प्रति पूछने पर आप जी ने उत्तर दिया, महात्मा जी! जहाँ आप रखकर गए हो, वहीं से अपना पारस उठा लो, मैंने उसका प्रयोग नहीं किया और न ही मुझे ज़रूरत है। ऐसी अतीत वृति के मालिक थे बाबा रविदास जी।

एक समय अभीच (नक्षत्र) का पूर्व चल रहा था। लाखों लोगों ने गंगा नदी में स्नान करके अपने आपको पवित्र हुआ मान लिया। कई संगियों ने भी आप को अभीच के पूर्व समय गंगा स्नान करने के लिए प्रेरित किया, आप जी ने उनको प्रेरणा दी कि आत्मा पवित्र नाम जपने से होती है, न कि पानी से। संग के मुखी को जो गंगा स्नान के लिए जा रहा था, आप जी ने कसीरा (20 कौड़ियों का गुच्छा) गले से निकाल कर गंगा जी की भेंट के लिए दे दिया और साथ ही उसको हिदायत की, कि मेरा कसीरा गंगा को हाथ में पकड़ाना है, वैसे ही पानी में नहीं फेंकना। अगर गंगा हाथ निकाल कर कसीरा न ले तो मुझे वापिस लाकर दे देना। सभी यात्री भक्त जी की अनोखी बात सुनकर बहुत हैरान थे।

सारे संग ने गंगा पहुँच कर स्नान किया, गंगा में भेंट डाली। अन्त में संग के मुखी ब्राह्मण ने रविदास जी का कसीरा गंगा को भेंट करने के लिए निकाला और गंगा को विनती की कि, भक्त रविदास जी ने कसीरे की भेंट आपके लिए भेजी है। आप हाथ निकालकर भक्त जी की भेंट स्वीकार करो। विनती के पश्चात्, गंगा की लहरों से एक गैबी हाथ बाहर निकला। उस गैबी हाथ ने भक्त जी की भेंट बहुत अदब से परवान की और साथ ही सोने का एक हीरे जड़ित कंगन गंगा ने रविदास को भेंट करने के लिए दिया। यह अजीब कौतुक देखकर सभी बहुत हैरान थे कि बड़े-बड़े दानी गंगा को मोहरें, सोना, अनेकों कीमती भेटाएँ अर्पण करते हैं पर किसी की भेंट गंगा ने हाथ निकाल कर

मंजूर नहीं की। भक्त रविदास जी का कसीरा स्वयं गंगा ने हाथ निकालकर लिया और परवान किया है। मायाधारी लोग प्यार से खाली होने के कारण प्यार को भी माया के पैमाने से नापते हैं, जिस कारण भक्तों और संसारियों का कभी मेल नहीं होता।

पण्डित कंगन लेकर वापस घर पहुंचा। मन बेईमान हो गया। मन में लोभ आया कि भक्त जी को क्या पता है, अगर मैं यह हीरे जड़ित कंगन राजा को भेंट कर दूँ, तो राजा कंगन की सुन्दरता देखकर मुझे बहुत सारी माया दे देगा। कंगन राजा को भेंट करने के पश्चात् उस की रानी ने उस जैसे दूसरे कंगन की मांग की। ब्राह्मण को बुलाकर दूसरा कंगन पैदा करने के लिए कहा। आखिरकार उसको सत्य बताना पड़ा। राजा असलीयत जानने के लिए पण्डित सहित रविदास जी पास पहुँचा। रविदास जी ने वह शिला जिस पर जूते गांठते थे, उठाकर नीचे गंगा बहती दिखाई और इस जैसे अनेकों कंगन गंगा की लहरों में तैरते दिखा दिए। बह रही गंगा में से उस कंगन के साथ का कंगन पण्डित और राजा को देकर उनकी तसल्ली की। राजा और सभी दरबारी भक्त जी को दंडवत करते वापस गए और आप के पक्के श्रद्धालु बन गए। भक्त रविदास जी का यश पहले से भी दुगुना-चौगुना फैल गया।

आप जी के जीवन से सम्बन्धित अनेकों साखियां भगत माल ग्रंथ में और इतिहास में मिलती हैं। ईर्ष्यालु ब्राह्मण रोज़ राजा के दरबार में जाकर भक्त जी की शिकायतें करते कि रविदास शूद्र होकर ठाकुरों को पूजता और लोगों को वर्ण आश्रम से दूर कर रहा है। राजा ने शिकायतों का निपटारा करने के लिए दोनों को अपने-अपने ठाकुर लाने के लिए कहा और मूर्तियां नदी के पार रखवा दी और पण्डितों से कहा कि आप बारी-बारी से अपने ठाकुरों को आवाज़ लगाओ। जिसका प्यार सच्चा होगा और जिसका प्यार ठाकुरों से ज्यादा होगा, उसके ठाकुर स्वयं उसके पास आ जाएंगे। ब्राह्मणों ने बहुत मंत्र पढ़े और आवाज़ें लगाई पर कुछ न बना। जब रविदास भक्त जी की बारी आई, आप जी ने प्यार में भीगकर मूर्ति जी के चरणों में इज्ज़त रखने के लिए विनतियाँ कीं।

आप जी की प्यार में भीगी विनती के कारण पत्थर के ठाकुर भी नदी पार

करके आप जी की गोद में आ विराजमान हुए। सभी ओर आप जी की जय-जयकार हो गई। आखिरकार ब्राह्मणों को आप जी के पांव पड़ना पड़ा। आप जी प्रभु नाम की बरकत दर्शाते फरमान करते हैं—

मेरी जाति कुट बांढला ढोर ढोवंता नितहि बानारसी आस पासा॥
अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा॥

मलार रविदास जी, पृष्ठ १२९३

ऐसी ही अनेक साखियां आप जी के जीवन की और मिलती हैं। जब भी कथित जात-अभिमानियों ने आप जी को नीचा दिखाने का यत्न किया, प्रभु परमेश्वर जी ने आप आश्चर्यजनक कौतुक करके, अपने भक्त की पैज पहले से भी ज्यादा बढ़ाई। हर समय प्रभु जी ने मान-सत्कार ऊँचा रखने के लिए आप जी ने परमेश्वर जी को धन्यवाद हित शब्द उच्चारण करके अपने प्रभु के बिरद पालन करने का ढिंढोरा पीटा। आप जी ने मारु राग में फरमान किया है —

रागु मारू रविदास जी

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै॥
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै॥१॥ रहाउ॥
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुंही ढरै॥
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै॥१॥
नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै॥
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै॥२॥१॥

पृष्ठ ११०६

आप जी ने वैराग्य, नम्रता, प्रेमा-भक्ति, प्रभु-बिरद प्रभु-देश, आदि विषयों पर बहुत प्यार भावना से बाणी के 40 शबद रचे। जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में श्री गुरु अर्जुन देव जी ने जिज्ञासुओं के मार्ग-दर्शन के लिए संभाल लिए हैं। आप जी की उच्चारण की हुई बाणी, भूले-भटकते और डगमगाते दिलों में

धैर्य और यकीन बख्शिश करती है। प्रभु मालिक पर पूर्ण भरोसा रखने के कारण मालिक अपने सेवकों की पैज रखता है ''**नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै**'' की कला घटित होती है।

आप जी ने प्रभु भक्ति की नींव डालते कथित जाति-पाति के विरुद्ध आवाज़ बुलन्द करते और आम जनता को वहमो-भ्रमों से मुक्त करने के उपदेश दिए और 1529 ई० में ''**जिउ जल महि जलु आइ खटाना॥ तिउ जोती संगि जोति समाना॥**'' की अवस्था को प्राप्त करके पंच-भूतक शरीर का त्याग कर दिया। आप जी के सच्चे-सुच्चे उपदेश और भी जनमानस को सच पर पहरा देने और भवजल से पार होने के लिए प्रकाश स्रोत का काम कर रहे हैं।

◆ ◆ ◆

भक्त नामदेव जी

जीवन वृत्तान्त

नाम	: नाम देव जी
जन्म	: 1270 ई०
पिता जी	: दाम शेट्टी
माता जी	: गोना बाई जी
जन्म स्थान	: गाँव नरसी बाहमनी, ज़िला सतारा (महाराष्ट्र)
धर्मपत्नी	: श्रीमति राजा बाई
संतान	: चार सपुत्र, एक पुत्री
गुरु दीक्षा	: विसोवा क्षेत्र, (ज्ञान देव जी)
समकालीन मित्र	: भक्त त्रिलोचन जी
समकालीन शासक	: मुहम्मद बिन तुग़लक
गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज बाणी	: 61 शबद
परलोक गमन और स्थान	: 1350 ई० गाँव घुमाण (ज़िला गुरदासपुर, पंजाब)
मुख्य उपदेश	: मनुष्य को सब कुछ प्राप्त करके भी यह ही कहना चाहिए है, **''मेरा कीआ कछू न होइ॥ करि है रामु होइ है सोइ॥''**

पृष्ठ ११६५

प्रभु मर्ज़ी में प्रसन्न रहकर प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त की जा सकती है। ऊँचे-सुच्चे आचरण वाले मनुष्य के हृदय में ही परमात्मा बसता है। इसलिए-

पर धन पर दारा परहरी॥
ता कै निकटि बसै नरहरी॥

भैरउ नामदेव जी, पृष्ठ ११६३

के धारणी बनने के लिए आपने ताकीद की है। कृत की उपासना का त्याग करके,

''हउ तउ एकु रमईआ लैहउ॥
आन देव बदलावनि दैहउ॥''

रागु गौंड नामदेव जी पृष्ठ ८७४

के दृढ़ धारणी बनना चाहिए और एक के सामने ही अरदास करनी चाहिए। हे दाता :-

''मो कउ तूं न बिसारि तू न बिसारि॥
तू न बिसारे रामईआ॥''

मलार नामदेव जी पृष्ठ १२९२

◆ ◆ ◆

भक्त नामदेव जी

भक्त नामदेव जी का जन्म नरसी ब्राह्मणी ज़िला सतारा (महाराष्ट्र) में पिता दाम शेट्टी और माता गोना बाई की कोख से 1270 ई० को हुआ। आप जी बचपन से ही प्रभु भक्ति की लग्न वाले होने के कारण हर समय प्रभु प्यार में भीग कर **''गीत गोबिन्द अलाइ''** की कार करते रहते। आप जी के माता-पिता जी ने आप जी को पण्डित पांधे के पास दुनियावी विद्या पढ़ने के लिए भेजा पर आप की लग्न, दुनियावी विद्या पढ़ने से परमार्थ की ओर ज़्यादा थी। जिस कारण आप जी अपने पिता जी से बीठल मन्दिर पुंडरपुर में सुबह शाम ठाकुर की पूजा और भक्ति करने के लिए जाते। आप जी ने गुरु विद्या ज्ञानेश्वर (ज्ञान देव) जी से प्राप्त की।

पूजा पाठ करने के पश्चात् अपनी और परिवार की उपजीविका के लिए स्वयं कपड़े छापने की कृत करते थे। आप जी एक समय दो काम करके अपने लोक सुखी परलोक सुहेले करते और करने का तरीका सिखाते थे। हाथों से कपड़े छापने का काम करते और मन के साथ आत्मा को नाम का रंग चढ़ाते।

आप जी ने अपने मुखारविंद से गुरबाणी में संकेत दिए हैं। जिस समय त्रिलोचन जी आप जी की शोभा सुनकर आपके दर्शनों को आए, तो आप जी अपनी मौज में बैठे अपनी आत्मा को प्रभु रंग में रंगते, हाथों से कपड़े छाप रहे थे। आप जी ने त्रिलोचन जी की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। अपनी अन्दर और बाहर की कार में मग्न रहे। त्रिलोचन जी ने थोड़ा समय इन्तज़ार करके तर्क की कि हे नामदेव! मैंने तेरी शोभा सुनी थी, कि तू बड़ा प्रभु भक्त है। मैं

तुम्हारे दर्शन करने आया था, पर देखने से पता चला कि तू तो माया में ही डूबा है। दिन रात माया इकट्ठी करने के लिए लोगों के कपड़ों की छपाई किए जाते हो। इस तर्क को भक्त जी ने गुरबाणी में अंकित किया है —

नामा माइआ मोहिआ कहै तिलोचनु मीत॥
काहे छीपहु छाइलै राम न लावहु चीतु॥२१२॥

श्लोक कबीर जी, पृष्ठ १३७५

अभी जो जवाब बाबा नामदेव जी ने त्रिलोचन को दिया उसका वर्णन ही बाबा कबीर जी ने अगले श्लोक में दिया है —

नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु संम्हालि॥
हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि॥२१३॥

श्लोक कबीर जी, पृष्ठ १३७६

आप जी के अन्दर प्रभु प्यार अत्यन्त प्रबल था। आप जी के परिवार ने आपजी की शादी गोविंद शेट्टी की पुत्री राजा बाई से, जो बड़ी सुशील और नेक थी, कर दी। समय पाकर आप जी के घर चार पुत्र (नारायण, महादेव, गोबिंद, बीठल) और एक पुत्री जिसका नाम लिंबा बाई था, ने जन्म लिया। आप जी पारिवारिक ज़िम्मेदारियाँ बहुत ध्यान से निभाते।

आप जी का स्वभाव बहुत सीधा, निश्छल, भोला, छल फरेब से कोरा था। आप जी हररोज़ अपने पिता के साथ मन्दिर जाते और अपने पिता को ठाकुरों को दूध का भोग लगाते देखते। आप जी को यह पता नहीं था कि मेरा पिता वैसे ही दूध की लुटिया पर्दे के पीछे रखकर थोड़े समय के पश्चात् उठा लेते थे। आप जी को यह भी भरोसा था, कि ठाकुर ज़रूर दूध पीते हैं।

एक दिन आप जी के पिता जी ने किसी विहार के लिए बाहर दूर जाना था। उन्होंने अपने पुत्र नामदेव को पास बुलाकर कहा कि पुत्र, मैं बाहर चला हूँ। कल को ठाकुरों को तूने भोग लगाना है। अच्छी तरह ठाकुरों की सेवा करने की ताकीद करके आपके पिता जी बाहर चले गए।

भक्त जी ने अगले दिन बहुत उत्साह से स्नान किया। कपिल गाय का दूध दुहा और बीठल मन्दिर गये। ठाकुर जी को प्रत्यक्ष जानकर प्यार पूरित विनतियाँ कीं। आप जी की निश्छलता और प्यार पर रीझकर परमेश्वर जी ने प्रकट होकर आप जी के पास से दूध पिया। इस सारी वार्ता को भाई गुरदास जी, और स्वयं बाबा नामदेव जी ने बाणी द्वारा अंकित किया है—

कंम किते पिउ चलिआ नामदेउ नो आखि सिधाइआ॥
ठाकुर दी सेवा करी दुधु पिआवणु कहि समझाइआ॥
नामदेउ इसनानु करि कपल गाइ दुहिकै लै आइआ॥
ठाकुर नो नावाहलि कै चरणोदकु लै तिलकु चढ़ाइआ॥
हथि जोड़ि बिनती करै दुध पीअहु जी गोबिंद राया॥
निहचउ करि आराधिआ होइ दइआलु दरसु दिखलाइआ॥
भरी कटोरी नामदेव लै ठाकुर नो दुध पाइआ॥
गाइ मूई जीवालीओनु नामदेउ दा छप्पर छाइआ॥
फेरि देहुरा रखिओनु चारि वरन लै पैरी पाइआ॥
भगत जना दा करे कराइआ॥११॥

भाई गुरदास जी वार १०, पउड़ी ११

और —

भैरउ नामदेव जी

दूधु कटोरै गडवै पानी॥ कपल गाइ नामै दुहि आनी॥१॥
दूधु पीउ गोबिंदे राइ॥ दूधु पीउ मेरो मनु पतीआइ॥
नाही त घर को बापु रिसाइ॥ १॥ रहाउ॥
सुोइन कटोरी अंम्रित भरी॥ लै नामै हरि आगै धरी॥२॥
एकु भगतु मेरे हिरदे बसै॥ नामे देखि नराइनु हसै॥३॥
दूधु पीआइ भगतु घरि गइआ॥ नामे हरि का दरसनु भइआ॥४॥३॥

पृष्ठ ११६३

प्रेमा भक्ति के कारण आप की आत्मिक अवस्था इतनी ऊँची हो चुकी थी

कि आप जी को सभी में परमात्मा ही दिखाई देता था। एक दिन एक कुत्ता रोटी उठाकर ले गया तो आप उसमें परमात्मा जानकर घी का कुजा लेकर पीछे दौड़ कर कहा, हे प्रभु! मैंने प्रशादा घी से चुपड़ कर खिलाना था,आप रूखा क्यों उठाकर ले गए हो, ठहर जाओ मैं घी से आपकी रोटी चुपड़ दूँ।

अगर मुग़ल ने अपनी घोड़ी की वछेरी उठाने के लिए हुक्म दिया। उस मुग़ल में भी आपने भगवान को देखकर बहुत खुशी से वछेरी उठाने की बेगार की और अपने मालिक से प्यार पूरित बातें की —

राग तिलंग नामदेव जी

हले यारां हले यारां खुसिखबरी॥
बलि बलि जांउ हउ बलि बलि जांउ॥
नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाउ॥१॥ रहाउ॥
कुजा आमद कुजा रफती कुजा मे रवी॥
द्वारिका नगरी रासि बुगोई॥१॥
खूबु तेरी पगरी मीठे तेरे बोल॥
द्वारिका नगरी काहे के मगोल॥२॥
चंदी हजार आलम एकल खानां॥
हम चिनी पातिसाह सांवले बरनां॥३॥
असपति गजपति नरह नरिंद॥
नामे के स्वामी मीर मुकंद॥४॥२॥३॥

पृष्ठ ७२७

इतिहास के अनुसार आप जी को 72 बार परमात्मा ने प्रत्यक्ष रूप में दर्शन दिए। आप जी की चढ़त देखकर समय के जात-अभिमानी ब्राह्मण आप जी से बहुत ईर्ष्या करते थे। एक दिन आप जी प्रभु-प्यार में भीगे अपने छैणे लेकर मन्दिर में चले गए। बहुत वज़द में झूम-झूमकर प्रभु के गुण गायन करने लगे, पर जाति अभिमानी पण्डों को यह बात कैसे अच्छी लग सकती थी। उन्होंने जहाँ आप जी के छैणे छीन लिए वहां धक्के मार कर मन्दिर से यह कहकर

बाहर निकाल दिया कि ठाकुरों की भक्ति करने का अधिकार केवल ब्राह्मणों को ही है। नीची जाति वाला मन्दिर में ठाकुरों की भक्ति नहीं कर सकता।

आप जी बे-बस होकर अपनी कम्बली कन्धे पर रखकर मन्दिर के पिछली ओर बैठकर भजन गाने लगे। भक्त वत्सल परमात्मा ने अपने भक्त की पैज रखने के लिए स्थूल मन्दिर का मुँह घुमा कर नामदेव जी की ओर कर दिया और सिद्ध कर दिया कि परमात्मा किसी के बाप का जर-खरीद नहीं है। परमात्मा तो भावना और प्यार का भूखा है। भक्त रविदास जी का फरमान है—

आपन बापै नाही किसी को भावन को हरि राजा॥

सोरठि रविदास जी, पृष्ठ ६५८

नामदेव जी ने अपनी आप बीती निम्नलिखित शबद में अंकित की है —

भैरउ नामदेव जी

हसत खेलत तेरे देहुरे आइआ॥
भगति करत नामा पकरि उठाइआ॥१॥
हीनड़ी जाति मेरी जादिम राइआ॥
छीपे के जनमि काहे कउ आइआ॥१॥ रहाउ॥
लै कमली चलिओ पलटाइ॥
देहुरै पाछै बैठा जाइ॥२॥
जिउ जिउ नामा हरि गुण उचरै॥
भगत जनां कउ देहुरा फिरै॥३॥६॥ *पृष्ठ ११६४*

तथा —

फेरि दीआ देहुरा नामे कउ पंडीअन कउ पिछवारला॥

मलार नामदेव जी, पृष्ठ १२९२

आप जी माया से निर्लेप, बेपरवाही वृति में विचरते थे। एक सेठ ने सोने जड़ित पलंग आप जी को भेंट किया, पर आप जी ने उसको नदी में फिंकवा दिया।

अगर आपकी दृष्टि मुर्दे पर पड़ी, भक्त जी की अमृतमयी दृष्टि से मुर्दे को नया जीवन मिल गया। आप जी की अवस्था **''नामे नाराइन नाही भेदु''** वाली बन गई थी।

परमात्मा अपने भक्त का सारा व्यवहार स्वयं पूरा करते थे, अगर आप जी के निवास करने वाली छप्परी अग्नि में जल गई, परमात्मा से स्वयं बेढ़ी (तरखाण) का रूप धारण करके थोड़े दिनों में बहुत ही सुन्दर छन्न आपके रहने के लिए तैयार कर दी। जिस छन्न की छब को देखकर पड़ोसी भी पूछने पर मज़बूर हो गए कि इतनी सुन्दर छन्न किस कारीगर ने बनाई है। पड़ोसियों के पूछने पर आपजी ने जो जवाब दिया, वह पढ़ने, सुनने और हृदय में धारण करने के लिए है —

सोरठि बाणी नामदेव जी

पाड़ पड़ोसणि पूछि ले नामा का पहि छानि छवाई हो॥
तो पहि दुगणी मजूरी दैहउ मो कउ बेढी देहु बताई हो॥१॥
री बाई बेढी देनु न जाई॥ देखु बेढी रहिओ समाई॥
हमारै बेढी प्रान अधारा॥ रहाउ॥
बेढी प्रीति मजूरी मांगै जउ कोऊ छानि छवावै हो॥
लोग कुटंब सभहु ते तोरै तउ आपन बेढी आवै हो॥२॥
ऐसो बेढी बरनि न साकउ सभ अतंर सभ ठांई हो॥
गूंगै महा अंम्रित रसु चाखिआ पूछे कहनु न जाई हो॥३॥
बेढी के गुण सुनि री बाई जलधि बांधि ध्रू थापिओ हो॥
नामे के सुआमी सीअ बहोरी लंक भभीखण आपिओ हो॥४॥२॥

पृष्ठ ६५७

यह सारा प्यार का खेल है जो प्यार भीगी आत्माओं को ही समझ आ सकता है। प्यार और भक्ति से खाली मनुष्य इस खेल को समझ नहीं सकेंगे।

आप जी का यश प्रताप दिनों दिन बढ़ता ही गया। जैसे-जैसे आप की

उपमा बढ़ती, ईर्ष्यालु लोगों के मन ओर ईर्ष्या की अग्नि से अशान्त होते गए। ईर्ष्या की अग्नि जिसके हृदय में प्रचण्ड हो जाए, उसके हृदय से शुभ गुणों को भस्म कर देती है। ईर्ष्यालु मनुष्य हर समय नीचे से नीचा हथकण्डा प्रयोग करने में भी संकोच नहीं करता।

बाबा नामदेव जी के समय भी तुअसबी मुलाणे और कपटी कर्मकाण्डी ब्राह्मण आप जी की चढ़त देखकर हर समय आप जी से ईर्ष्या करते और समय की इन्तज़ार में रहते थे कि कोई समय मिले तो बादशाह के पास से नामदेव जी को कोई झूठा सच्चा फतवा दिला कर मार दें। समय बीतता गया, आप जी संत मण्डली सहित दिल्ली के नज़दीक विचरण कर रहे थे। आप जी ने दिल्ली पड़ाव किया। सारे श्रद्धालु झुण्ड बनाकर आपके दर्शनों को आने लग पड़े। नामदेव जी की प्रभुता देखकर ईर्ष्यालुओं को ईर्ष्या की अग्नि ने जलाना शुरु कर दिया।

उधर बादशाह मुहम्मद बिन तुग़लक की गाय, जिसका वह दूध पीता था, अचानक मर गई। मोलाणियां ने बादशाह को उकसाया कि देखो एक नीच जाति का हिन्दू खुदा की बातें करता है। उसको हुक्म करके आप अपनी गाय जिन्दा करवा लो। बादशाह ने अपने अहलकार भेजकर भक्त नामदेव जी को बुलावा भेजा, बादशाह ने आपके सामने शर्त रखी कि गाय को ज़िन्दा कर दो, अगर गाय ज़िन्दा नहीं होती तो फिर मुसलमान बन जा। अगर इस्लाम भी नहीं कबूल किया, फिर तुम्हें मार दिया जाएगा। नामदेव जी ने बादशाह को बहुत नम्रता से उत्तर दिया। बादशाह —

मेरा कीआ कछू न होइ॥ करि है रामु होइ है सोइ॥

नामदेव जी, पृष्ठ ११६५

किसी को मारना या जिंदा करना यह परमेश्वर के हाथ में है, मेरे वश में नहीं। दूसरे जैसे आपको अपना धर्म प्यारा है, वैसे मुझे मेरा धर्म प्यारा है। शरीर नाशवान है, आत्मा अमर है, शरीर जब चाहो, इसको आप मार सकते हो। यह जवाब सुनकर बादशाह क्रोध में आ गया और नामदेव को बांधकर

खूनी हाथी के सामने फिंकवा दिया। जब हाथी की चोटें सहकर आप अडिग रहे तो बादशाह ने साढ़े सात घड़ियों के समय की मोहलत दी, सात घड़ियाँ बीत जाने के पश्चात् परमेश्वर जी ने प्रत्यक्ष दर्शन देकर अपने भक्त नामदेव जी की पैज रखी और जय-जयकार कराई। इस सारी घटना को नामदेव जी ने भैरउ राग में अंकित किया है, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पृष्ठ ११६५ पर दर्ज है —

सुलतानु पूछै सुनु बे नामा॥
देखउ राम तुम्हारे कामा॥१॥
नामा सुलताने बधिला॥
देखउ तेरा हरि बीठुला॥१॥ रहाउ॥
बिसमिलि गऊ देहु जीवाइ॥
नातरु गरदनि मारउ ठांइ॥२॥
बादिसाह ऐसी किउ होइ॥
बिसमिलि कीआ न जीवै कोइ॥३॥
मेरा कीआ कछू न होइ॥
करि है रामु होइ है सोइ॥४॥
बादिसाहु चढ़िओ अहंकारि॥
गज हसती दीनो चमकारि॥५॥
रुदनु करै नामे की माइ॥
छोडि रामु की न भजहि खुदाइ॥६॥
न हउ तेरा पूंगड़ा न तू मेरी माइ॥
पिंडु पड़ै तउ हरि गुन गाइ॥७॥
करै गजिंदु सुंड की चोट॥
नामा उबरै हरि की ओट॥८॥....
सात घड़ी जब बीती सुणी॥
अजहु न आइओ त्रिभवण धणी॥१४॥
पाखंतण बाज बजाइला॥

गरुड़ चढ़े गोबिंद आइला ॥१५॥
अपने भगत परि की प्रतिपाल ॥
गरुड़ चढ़े आए गोपाल ॥१६॥
कहहि त धरणि इकोडी करउ ॥
कहहि त ले करि ऊपरि धरउ ॥१७॥
कहहि त मुई गऊ देउ जीआइ ॥
सभु कोई देखै पतीआइ ॥१८॥
नामा प्रणवै सेल मसेल ॥
गऊ दुहाई बछरा मेलि ॥१९॥
सगल कलेस निंदक भइआ खेदु ॥
नामे नाराइन नाही भेदु ॥२८॥

पृष्ठ ११६५-६६

आप जी को लगन चाहे मूर्ति-पूजा से ही लगी थी, पर प्रभु प्राप्ति के पश्चात् आप जी ने मूर्ति पूजा का डटकर विरोध किया और प्रभु सिमरन ही परमात्मा की प्राप्ति का साधन दर्शाया। आप जी का गूजरी राग में मूर्ति पूजा प्रति फरमान है —

एकै पाथर कीजै भाउ ॥
दूजै पाथर धरीऐ पाउ ॥
जे ओहु देउ त ओहु भी देवा ॥
कहि नामदेउ हम हरि की सेवा ॥४॥१॥

गूजरी नामदेव जी पृष्ठ ५२५

श्री गुरु अर्जुन देव जी ने आसा राग में बाबा नामदेव जी को प्रभु प्राप्ति नाम जप द्वारा होने का संकेत दिया है —

गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदेउ मनु लीणा ॥
आढ दाम को छीपरो होइओ लाखीणा ॥१॥ रहाउ ॥

महला ५, पृष्ठ ४८७

आप जी ने सारे हिन्दुस्तान में घूमकर मण्डली सहित सच धर्म का उपदेश सारे संसार को दिया। पंजाब फेरी दौरान आप जी 1350 ई० को गाँव घुमाण (ज़िला गुरदासपुर) में अपनी जीवन यात्रा पूरी करके —

नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥३॥

सोरठि महला ९, पृष्ठ ६३३

की अवस्था प्राप्त कर गए वहाँ आप जी की याद में देहुरा कायम है।

आप जी की बाणी के 61 शबद श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज हैं, जिनके द्वारा भक्त जी ने छल-कपट और पाखण्ड का त्याग करके, एक अकाल-पुरख से सच्ची प्रीत करने और नाम जपने का सन्देश बख्शिश किया है।

◆ ◆ ◆

शेख फरीद जी

जीवन वृत्तान्त

नाम	:	शेख फरीदुदीन मसउद गंज-ए-शकर
प्रचलित नाम	:	शेख फरीद शकरगंज
जन्म	:	1173 ई०
पिता जी	:	शेख जलाल दीन सुलेमान
माता जी	:	मरिअम (कुरसम)
जन्म स्थान	:	खेतवाल (चावली मशाइक ज़िला मुलतान, पाकिस्तान)
मुर्शिद का नाम	:	ख्वाजा बख्तियार काकी
परलोक गमन	:	1266 ई०
आपके प्रसिद्ध स्थान	:	पाकपटन, चावली मुशाइखा, गाँव कबूला पास, उल्टे लटक कर तप करने वाला कुँआ।
गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज बाणी का वृत्तान्त	:	राग सूही, राग आसा में दो-दो शबद, 130 श्लोक जिनमें 18 श्लोक गुरु साहिब जी ने टिप्पणी सहित बाबा फरीद जी के नाम पर उच्चारण किए हैं।
मुख्य उपदेश	:	क्षमा के धारणी बनो, सब्र संतोष का पल्ला न

छोड़ो। बुराई करने वाले का भी भला करो, सादा जीवन व्यतीत करो, किसी के सामने हाथ न फैलाओ। हमेशा सिमरन करो और प्रभु पास से सिमरन बंदगी की ख़ैर मांगते रहो और पुकार करो ''**सेख फरीदै खैर दीजै बंदगी**''।

◆ ◆ ◆

बाबा शेख फरीद शकरगंज जी

बाबा शेख फ़रीद जी महान् त्यागी, महान् विद्वान्, महान् तपस्वी, महान् संतोषी, महान् सिदकवान, महान् हकीकत के मुरातबे को प्राप्त हुए महापुरुष थे। आप जी का जन्म 1173 ई० को पिता शेख जलालदीन सुलेमान के घर माता मरीअम की कोख से गाँव खेतवाल ज़िला मुलतान में हुआ।

आपजी के माता-पिता जी बहुत नेक और धार्मिक विचारों के धारणी थे। खास करके आप जी के माता जी एक पहुँची हुई आत्मा थी, जिनके मन में हमेशा तीव्र इच्छा बनी रहती थी कि कैसे मेरा होनहार पुत्र अल्लाह का भक्त बने। संसार में बहुत कम माताएँ फरीद जी की माता जैसी होती हैं, जिनकी दृष्टि में दुनियावी ऊँचे ओहदों से प्रभु प्राप्ति का मर्तबा महान् होता है। प्रभु प्राप्ति के महान् मर्तबे की प्राप्ति के लिए आप जी की माता जी ने आप जी के जीवन को महान् बनाने में बहुत योगदान डाला।

बचपन में शक्कर की पुड़िया मुसले[१] (प्रभु बंदगी करते समय नीचे बिछाने वाला कपड़ा) के नीचे रखकर आप जी की माता ने आप जी को अल्लाह ताला की भक्ति करने के लिए प्रेरित किया। समय पाकर शक्कर की पुड़िया ही नाम रस का रूप धारण कर गई, जिसके मुकाबले में शक्कर, चीनी, मिश्री, गुड़, शहद, दूध आदि के रस फीके पड़ गए। आप ने ऐसे प्रभु रस को प्राप्त किया और पुकार कर कह ही दिया —

फरीदा सकर खंडु निवात गुड़ु माखिओ मांझा दुधु॥
सभे वसतू मिठीआं रब न पूजनि तुधु॥२७॥

सलोक शेख फरीद के, पृष्ठ १३७९

१. प्रभु की बंदगी करते समय नीचे बिछाने वाला कपड़ा।

आप जी की बुद्धि बहुत तीक्ष्ण थी। आप जी ने 12 साल की उम्र में सारा कुरान शरीफ़ याद कर लिया था। आप जी ने मारफत और हकीकत की अवस्था को प्राप्त करने के लिए ख़्वाजा कुततुदीन बख़्तियार काकी को अपना मुर्शिद धारण किया। जो सूफी मत[१] से सम्बन्ध रखते थे।

आप जी गृहस्थ मार्ग के धारणी थे। कई ग्रन्थों में आप जी की चार शादियां, पहली सुलतान गिआसुदीन बलबन की शहज़ादी हज़बरा से, दूसरी बीबी शारदा से, तीसरी बीबी शकर से और चौथी एक अन्य विधवा स्त्री से हुई लिखते हैं। बीबी हज़रबा फकीरी लिबास में आप जी के साथ ही रहीं। स० शमशेर सिंह अशोक की लिखित अनुसार आप जी के आठ लड़के और नौ लड़कियाँ थीं।

---

१. **सूफी मत —** मुसलमानी कट्टड़ शरा-शरीअत से ऊपर उठकर एक अकाल पुरख खुदा का पुजारी, सूफी मत का खुदा किसी खास मसीत के हुजरे में कैद नहीं। सूफी मत अनुसार परमात्मा (अल्लाह) सर्व-व्यापक है। सूफी मत से सम्बन्ध रखने वाले दरवेश बहुत सादा जीवन व्यतीत करते थे। खुदा की रज़ा में राज़ी रहना, अल्लाह का प्यार प्रीत ही इनका जीवन आधार है। सूफी फकीर अपने मुर्शिद की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए उसके हुक्म अनुसार चलने में अपना भला मानते थे। सबर-शुक्र के धारणी बन एक गोदड़ी से तन ढ़ककर अल्प आहार कर, जीवन बिताते अल्लाह की बंदगी करके जीवन सफल करते थे। सूफी फकीरों की गुरु घर से बहुत नज़दीक की सांझ रही है। श्री हरिमन्दिर साहिब की नींव श्री गुरु अर्जुन देव जी ने सूफी फकीर साई मियां मीर से रखवाई थी। घुड़ाम के रहने वाले साई भीखण शाह ने कलगीधर जी के प्रकाश समय पश्चिम की ओर सिज़दा करने की बजाय पटना साहिब (पूर्व की ओर) सिज़दा किया था। सूफी फकीर बुद्धु शाह जी ने भंगाणी के युद्ध समय 500 मुरीद और चार पुत्र कलगीधर जी को भेंट करके आप जी खुशियां प्राप्त की थीं।

सूफी फकीर चार मार्गों का धारणी बनकर पूर्णता प्राप्त कर लेता है।

1. **शरीअत —** सूफी फकीर अपने मुर्शिद की सेवा करनी, रोज़े रखने, नमाज़ पढ़नी और नेक कर्म करके, कट्टड़वाद का त्याग, सबसे प्यार, खुल दिली, नेकी, परोपकार का धारणी बनकर सबर, शुक्र में रहकर सादा जीवन व्यतीत करने को शरीअत समझता है और उस पर पूर्ण पहरा देता है।

2. **तरीकत —** सूफी मत का जिज्ञासु, मुर्शिद के स्थान पर टिककर अपने मुर्शिद के हुक्म में चलता मन को इच्छाओं से रोकने के लिए तप साधता, जुहद करता, मन, वचन, कर्मों को करके खुदा को याद करके अपने आपको संवारता है, इसको तरीकत कहा जाता है।

3. **मारफत —** शरीअत की पालना करते, तरीकत के धारणी बनने के पश्चात् दुनियां एक तमाशा प्रतीत होने लग जाती है। मार्फत पर पहुँच कर फकीर अन्तर्मुखी वृत्ति का धारणी बन जाता है। संसार का मोह त्याग कर हर समय अल्लाह के मिलाप के लिए तरले लेता, वैराग्य में भीगकर विनती करने के मुकाम को मार्फत का नाम देता है। सूफी हकीकत की अवस्था को प्राप्त करने के लिए यत्नशील हो जाता है।

4. **हकीकत —** सूफी फकीर जब हकीकत की अवस्था पर पहुँच जाता है, उसके अन्दर अल्लाह का नूर प्रकट हो जाता है। इस अवस्था पर पहुँच कर सभी संकल्प विकल्प खत्म हो जाते हैं। अन्दर-बाहर एक परमात्मा की जोत दिखाई देती है। इस अवस्था पर पहुँच कर प्रभु से अभेदता की अवस्था बन जाती है। सारा संसार प्रभु का रूप ही दिखाई देता है। इस अवस्था पर पहुँच कर मन अत्यन्त नम्रता का धारणी, आपा निछावर बनकर खुदगर्जी से ऊपर उठकर बेपरवाह में विचरण करता है जिसको हकीकत का दर्जा कहा जाता है।

आप जी ने 25 से 50 साल का समय बहुत मेहनत कठिन तपस्या करते व्यतीत किया। आप जी का खान, पान, और पहरावा बहुत संयमी था। आधा गिलास शर्बत, आधी रोटी मक्की की और कुछ मुनक्के ही आप जी की चौबीस घण्टे की खुराक थी। एक गोदड़ी पहन कर आप गुज़ारा कर लेते थे। आप जी अक्सर कहा करते थे कि जो मनुष्य खाने पीने और पहनने का ही गुलाम है, उसने भजन क्या करना है क्योंकि उसका मन अपने काबू में नहीं है। वह मनुष्य सबसे महान् है जो सुख दु:ख में अडोल रहता है और एक समान वृत्ति में विचरण करता है। सबसे बड़ा वह है जो संतोष का धारणी है। जिसने संतोष का त्याग कर दिया वह सब का मोहताज बन जाता है। आप ने केवल त्याग का उपदेश ही नहीं दिया बल्कि आप जी ने जब शरीर त्यागा, आप जी को घर से निकालने के लिए भी वस्त्र प्राप्त न हुआ। उनकी कब्र में ईंटें लगाने के लिए भी घर की दीवार गिरा कर काम चलाया।

आप जी कुछ समय के लिए जंगल में तप साधना करने के लिए चले गए। जंगल में भूखे रहकर और उल्टे लटक कर तप किया। बहुत भूख लगने पर आप पेड़ों के पत्ते खाकर पेट की अग्नि को शांत करते। आप एक दिन एकान्त वन में भजन करते थे, चिड़ियों का शोर-शराबा आप को प्रभु बन्दगी में विघ्नकारी प्रतीत हुआ। आप ने गुस्से में आकर चिड़ियों को सहज ही कहा ''मर जाओ'' आप के वचन करते ही चिड़ियां मर गई। चिड़ियों को मरा देखकर आपके मन में उदासी आ गई और आप जी ने वचन किया, ''चिड़ियों, जिंदा हो जाओ,'' आपके मुंह से वचन निकलने से चिड़ियाँ जिन्दा हो गईं और उड़ान लगा गईं। आप मन में बहुत प्रसन्न हुए कि आपकी प्रभु भक्ति प्रभु दर में मंजूर हो गई, अल्लाह ताला ने उनके वाक्यों में सिद्धि भर दी है। शक्ति प्राप्त होने के पश्चात् सूक्ष्म अहंकार ने हृदय में घर कर लिया, पर प्रभु (अल्लाह ताअला) को यह मंजूर नहीं था कि मेरा प्यारा भक्त अहंकार का शिकार हो जाए।

आप जी जंगल से निकल कर एक नगर में गए, आप जी को काफी प्यास

लगी हुई थी। आप ने एक कुँआ देखा। आप पानी पीने के लिए उस कुएँ पर पहुँचे। क्या देखा कि एक नौजवान स्त्री कुएं से पानी भर-भर कर धरती पर फेंक रही है। आपने उस नौजवान स्त्री को पानी पिलाने के लिए कहा, पर वह नौजवान स्त्री अपने ध्यान में मग्न उसी तरह ही पानी का डोल निकालकर धरती पर गिराती गई। आप के दोबारा विनती करने पर भी उसने आपके वचन को अनसुना कर दिया और साथ ही उत्तर दिया 'बाबा! ठहरिए, मैं जरूरी काम कर रही हूँ, यह कोई जंगल की चिड़ियाँ नहीं, जिनको मर जाओ और जिंदा हो जाओ, कहकर अपनी शक्ति को प्रकट करोगे।'

आप उस बीबी के वचन सुनकर शर्मिंदा भी हुए और मन में हैरानी भी हुई इसको कैसे पता चल गया है ? जब बीबी ने धरती पर पानी डालने का काम बन्द किया, तब भक्त जी को संबोधन करके कहा, ''बाबा जी! आओ अब पानी पी लो'' आप जी ने जल छका और नम्रता से उस बीबी को अन्तर्यामता प्रति और धरती पर पानी गिराने का कारण पूछा। बीबी ने मुस्करा कर फरीद जी को उत्तर दिया ''मेरी बहन का घर यहां से काफी दूर है, उनका सारा परिवार बाहर गया है, उनकी ग़ैर हाज़िरी में उनके घर को आग लग गई थी, मैं पानी के डोल डालकर उस आग को बुझा रही थी।'' अन्तर्यात्मा प्रति उसने फरमाया कि मेरा पति परमेश्वर भक्त है, मैं अपने पति की वफादार स्त्री और पतिव्रता धर्म में पक्की हूँ। उनकी आज्ञा में चलने से मुझे यह सारी ताकत सहज ही प्राप्त हो गई है। मैंने कोई जप तप नहीं किया और न ही कोई साधना की है। उस बीबी ने यह वचन भी किया कि बाबा जी! करामात ईश्वर की बख्शिश है, इसका प्रयोग करने में संकोच करना चाहिए है और ईश्वर की रज़ा में राज़ी रहकर अजर को जरने की ज़रूरत है।

बीबी के सच्चे वचन सुनकर आपके मन से अहंकार खत्म हो गया। बाबा फरीद जी ने अपने मन को कोसते लाहनत दी कि तू अभी तक ईश्वर का चाकर नहीं बन सका। अल्लाह का चाकर बनने के लिए तो वृक्षों जैसा जिगरा धारन करने की ज़रूरत है। आप की रचना है —

फरीदा साहिब दी करि चाकरी दिल दी लाहि भरांदि[१] ॥
दरवेसां नो लोड़ीऐ रुखां दी जीरांदि[२] ॥६०॥

श्लोक फरीद जी के, पृष्ठ १३८१

आप जी अहंकार हीन होकर मालिक की चाकरी में जुड़ गए। प्यार में भीगकर आप विरह भरी विनतियाँ ऐसी करते कि सुनने वाला भी करुणा रस हो जाता। आप जी की उच्चारण की बाणी से पता चलता है कि आप के हृदय में अपने मालिक को मिलने की कितनी तड़प थी —

फरीदा तनु सुका पिंजरु थीआ तलीआं खूंडहि काग ॥
अजै सु रबु न बाहुड़िओ देखु बंदे के भाग ॥९०॥
कागा करंग ढंढोलिआ सगला खाइआ मासु ॥
ए दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आस ॥९१॥
कागा चूंडि न पिंजरा बसै त उडरि जाहि ॥
जितु पिंजरै मेरा सहु वसै मासु न तिदू खाहि ॥९२॥

श्लोक फरीद जी के,पृष्ठ १३८२

विरह वियोगी बाबा जी की बन्दगी और विनती प्रभु दर में मंजूर हो गई। आप जी ने मार्फत की मंज़िल को तय कर लिया। प्रभु प्राप्ति के पश्चात् आप पुकार उठे कि परमात्मा तो मेरे अन्दर ही बसता था। मैं ऐसे ही उसको प्राप्त करने के लिए जंगलों में टक्कर मारता रहा —

फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कंडा मोड़ेहि ॥
वसी रबु हिआलीऐ जंगलु किआ ढूढेहि ॥१९॥

श्लोक फरीद जी के, पृष्ठ १३७८

जैसे-जैसे आप जी को आत्मिक उच्चता प्राप्त हुई वैसे-वैसे ही आप जी में नम्रता आई। लोग आप जी को हकीकत की प्राप्ति वाला महापुरुष मानकर पूजते थे। आप को अपनी ज़िंदगी का तजुर्बा था, कि प्रभु की कृपा से जहां

---

१. अहंकार, २. धैर्य।

दैवीय गुणों की दात प्राप्त होती है, वहां चुपचाप ही माया का प्रभाव अहंकार के रूप में मनुष्य पर हावी होकर अल्लाह पाक की कृपा से नीचे गिरा देता है। अहंकार से बचने के लिए आप जी ने —

निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु॥१२७॥

श्लोक फरीद जी, पष्ठ १३८४

का हमेशा लिबास पहने रखा और नम्रता से पुकारते रहे —

फरीदा काले मैडे कपड़े काला मैडा वेसु॥

गुनही भरिआ मै फिरा लोकु कहै दरवेसु॥६॥

श्लोक शेख फरीद जी, पृष्ठ १३८१

और समय-समय मन को समझाते रहे कि अगर साईं के दर में प्रवेश करना है, फिर दंभ जैसी वृति का धारणी बन जा, तो अल्लाह पाक की दरगाह में जगह मिलेगी, बिना आपा भाव गंवाए साईं के दर में कबूल नहीं हुआ जा सकता —

फरीदा थीउ पवाही दभु॥ जे सांई लोड़हि सभु॥

इकु छिजहि बिआ लताड़ीअहि॥ तां साई दै दरि वाड़ीअहि॥१६॥

श्लोक शेख फरीद जी, पृष्ठ १३७८

एक बार आपके अन्दर अहंकार ने फिर चक्कर लगाया, जितना नुक्सान आप जी को हुआ उसको सदा ध्यान में रखकर आप अहंकार के प्रभाव से बचते रहे और सब को बचने के लिए उपदेश करते —

फरीदा गरबु[१] जिन्हा वडिआईआ धनि जोबनि आगाह[२]॥

खाली चले[३] धणी सिउ टिबे जिउ मीहाहु[४]॥१०५॥

श्लोक शेख फरीद जी, म० ५ पृष्ठ, १३८३

१. जिस को धन और जवानी का अहंकार, २. बहुत, ३. मालिक (प्रभु) से खाली रह गए, ४. जैसे वर्षा होने पर ऊंचे टिब्बे पानी से खाली रह जाते है।

आप जी का अपने अल्लाह-ताला पर अटूट भरोसा था। आप जी एक परमात्मा के बिना किसी की भी ओट नहीं लेते थे। आप की प्रभु टेक और आसरे का पता उस घटना से भली-भान्ति चल जाता है, जब आप जी बुढ़ापे के कारण चलने-फिरने में असमर्थ हो गए, आप जी के एक श्रद्धालु ने आप जी को एक सुन्दर लकड़ी की खूंटी सहारे के लिए लाकर भेंट की। आप जी उस लकड़ी की खूंटी से मुश्किल से तीन-चार कदम ही चले थे कि आप जी ने यह कहकर वह लकड़ी की खूंटी फेंक दी, 'फरीद! सारी उम्र एक अल्लाह ताला के बिना किसी का आसरा नहीं लिया, अब अन्तिम समय में एक बेजान लाठी का सहारा लेने लगा है। ऐसा था आपको अपने मालिक पर भरोसा, जिस की मिसाल शायद ढूंढने से भी न मिले। आप का फरमान है कि धिक्कार उनके जीवन को जो एक परमात्मा की आशा छोड़कर अन्य पर आशा करते हैं —

धिगु तिन्हा दा जीविआ जिना विडाणी आस॥२१॥

श्लोक फरीद जी, पृष्ठ १३७९

आप अल्लाह पाक की प्राप्ति के पश्चात् आप सब में उसकी जोत देखते। किसी को बुरा न कहते और न ही किसी का बुरा सोचते, करना तो एक तरफ रहा। आप किस वृति के धारणी थे —

फरीदा खालकु खलक महि खलक वसै रब माहि॥
मंदा किस नो आखीऐ जां तिसु बिनु कोई नाहि॥७५॥

श्लोक फरीद जी, पृष्ठ १३८१

आप जी —

फरीदा जिन्ही कंमी नाहि गुण ते कंमड़े विसारि॥
मतु सरमिंदा थीवही सांई दै दरबारि॥५९॥

श्लोक फरीद जी के, पृष्ठ १३८१

का ढ़िढोरा देते और —

तेरी पनह खुदाइ तू बखसंदगी॥ सेख फरीदै खैरु दीजै बंदगी॥४॥

आसा फरीद जी, पृष्ठ ४८८

की अल्लाह ताला से मांग करते। 1266 ई० को पाकपटन शहर में अल्लाह-ताअला के चरणों में स्थापी निवास कर गए और अपने उच्चारण किए वचनों को सफल कर गए —

आपि लीए लड़ि लाइ दरि दरवेस से॥

तिन धनुं जणेदी माउ आए सफलु से॥२॥

आसा फरीद जी, पृष्ठ ४८८

और —

सफल सफल भई सफल जात्रा॥

आवण जाण रहे मिले साधा॥१॥ रहाउ॥ *महला ५, पृष्ठ ६८७*

की दात को प्राप्त करके सदा के लिए अमर हो गए। अमर आत्मा की आवाज़ आज भी हमें गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी द्वारा सुनती है और हमेशा के लिए सुनती रहेगी। बाबा फरीद जी आज भी पुकार-पुकार कर हमें ईश्वर के सच्चे आशिक बनने की प्रेरणा दे रहे हैं —

दिलहु मुहबति[१] जिंन्ह सेई सचिआ॥
जिन्ह मनि होरु मुखि होरु सि कांढे कचिआ॥१॥
रते[२] इसक खुदाइ रंगि दीदार के॥
विसरिआ जिन्ह नामु ते भुइ भारु[३] थीए॥१॥ रहाउ॥

आसा फरीद जी, पृष्ठ ४८८

◆ ◆ ◆

१. जिनको परमात्मा से दिल से प्यार है, २. जो खुदा के प्यार में रंगे हुए हैं, ३. जिनको परमेश्वर का नाम भूल गया है, वे धरती पर एक भार हैं।

भक्त धन्ना जी

जीवन वृत्तान्त

नाम	:	श्री धन्ना जी
जन्म	:	1415 ई०
पिता जी	:	जानकारी उपलब्ध नहीं है
माता जी	:	
धर्मपत्नी	:	
सन्तान	:	
जन्म स्थान	:	गाँव धुआन, इलाका टांक, उस समय राजपूताना
कृत	:	ज़मीदारी
परलोक गमन	:	1475 ई०
जीवन काल	:	60 साल
गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज बाणी	:	चार शबद
मुख्य उपदेश	:	परमात्मा को निश्छल बुद्धि से सेवा कर प्राप्त किया जा सकता है। परमात्मा हर जगह, हर एक जीव की पालना करता है। हे मन! निश्चिंत मन होकर प्रभु मालिक का भजन कर, जो भी आर्थिक परमार्थिक ज़रूरत हो वह निसन्देह अपने मालिक प्रभु के सामने अर्ज़ करनी

चाहिए। परमात्मा दयालु है, **''जो मागहि ठाकुर अपुने ते सोई सोई देवै''** का अपना बिरद पालता है। इसलिए **''मत रे जीअ डरांही''** का धारणी बनना चाहिए।

◆ ◆ ◆

भक्त धन्ना जी

प्रभु परमेश्वर जी पर अटल विश्वास और भरोसे वाले भक्त धन्ना जी का जन्म 1415 ई० को गाँव धुआन, इलाका टांक राजपूताने के एक गरीब ज़मीदार के घर में हुआ। आप जी बचपन से ही धार्मिक संस्कारों के धारणी थे।

आप जी की रुचि जन्म से ही धार्मिक होने के कारण आप जी ने उस समय के प्रसिद्ध भक्त नामदेव जी का यश श्रवण किया। बाबा कबीर जी की भक्ति करने के कारण जय-जयकार होती सुनी। नीची जाति के भगत रविदास के चरणों पर चारों वर्णों के लोग नमस्कार करते देखे सुने। सैण भगत की शोभा की चर्चा घर-घर होती सुनी। इन सभी बातों का असर भगत जी के मन पर अमिट छाप छोड़ता गया जिस कारण आप जी, प्रभु भक्ति की ओर प्रेरित हुए और हर समय ध्यान अपने मालिक प्रभु से जोड़े रखते। श्री गुरु अर्जुन देव जी ने इसका संकेत आसा राग में किया है —

आसा महला ५

गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदेउ मनु लीणा[१] ॥
आढ[२] दाम को छीपरो[३] होइओ लाखीणा[४] ॥१॥ रहाउ ॥
बुनना तनना तिआगि कै प्रीति चरन कबीरा ॥
नीच कुला जोलाहरा भइओ गुनीय गहीरा[५] ॥
रविदासु ढुवंता ढोर[६] नीति तिनि तिआगी माइआ ॥
परगटु होआ साधसंगि हरि दरसनु पाइआ ॥२॥
सैनु नाई बुतकारीआ[७] ओहु घरि घरि सुनिआ ॥

---

१. लीन हो गया, २. आधी दमड़ी का, ३. छींबा, ४. लाखों का, ५. गुणों का खजाना, ६. मरे हुए पशु दोहता था, ७. बुतीयां करता था।

हिरदे वसिआ पारब्रहमु भगता महि गनिआ ॥३ ॥
इह बिधि सुनि कै जाटरो उठि भगती लागा ॥
मिले प्रतखि गुसाईआ धंना वडभागा ॥४ ॥२ ॥

पृष्ठ ४८७

पूर्व के भक्ति संस्कारों को प्रकट करने के लिए कोई विधि का बहाना चाहिए था। आप जी अपने पिता जी की ओर से जिम्मे लगाए पशु चराने के कार्य को करने के लिए नदी किनारे चारागाह[१] में नित्य ही जाते थे। चारागाह के साथ एक नदी बहती थी, इस नदी किनारे एक पण्डित, जिसका नाम त्रिलोचन था, वह भी नियम से ठाकुर पूजा करने के लिए आता था। वह पहले नदी में स्वयं स्नान करता, फिर मूर्तियों को स्नान करवा कर ठाकुरों की पूजा करता। धन्ना जी हर रोज़ पण्डित त्रिलोचन की इस क्रिया को देखते और मन ही मन विचार करते कि मैं तो हर रोज़ अपनी गायों को चराने के लिए इस चारागाह में आता हूँ। यह पण्डित हर रोज़ नदी किनारे बैठकर क्या काम करता है ?

एक दिन आप जी पण्डित त्रिलोचन जी के पास, जो ठाकुरों की पूजा करता था, हिम्मत करके चले गए और पूछा, ''पण्डित जी! यह आप क्या करते हो ? त्रिलोचन ने धन्ने को जवाब दिया, जटा! तुम्हें नहीं पता, मैं अपने ठाकुरों की पूजा करता हूँ। आगे धन्ना जी ने और सवाल कर दिया,'' पण्डित जी ठाकुरों की पूजा करने से क्या मिलता है ? त्रिलोचन जी ने धन्ना जी को उत्तर दिया कि जो प्यार से ठाकुरों की पूजा करके ठाकुरों को भोग लगाता है, उसको लोक-परलोक के सभी पदार्थ मिल जाते हैं, घर और परिवार में किसी चीज़ की कमी नहीं रहती। जो भी ठाकुरों की पूजा करके इनसे मांगो, ठाकुर सारी मुरादें पूरी करते हैं।

भक्त धन्ना जी ने त्रिलोचन जी से विनती की, पण्डित जी! कृपा करके मुझे भी एक ठाकुर दे दीजिए। पण्डित त्रिलोचन जी ने सीधा-साधा जट देखकर ठाकुर देने से टाल-मटोल की। त्रिलोचन ने धन्ने से कहा। धन्ना! ठाकुरों की

१. खुले पशुओं के घास खाने का मैदान।

पूजा करनी बहुत मुश्किल है, अमृत वेला में उठना पड़ता है, धूप-दीप करके फिर ठाकुरों को भोग लगाकर अन्न जल ग्रहण करना पड़ता है, अगर स्वयं पहले खा लें तो ठाकुर भी नाराज़ हो जाते हैं।

प्रेमा भक्ति की दृढ़ता और पवित्र मन वाले भक्त धन्ना जी ने पण्डित जी की सारी शर्तें मान लीं। त्रिलोचन ने धन्ना जी को ठाकुर लेने के लिए अडिग देखकर बह रही नदी से एक बड़ा पत्थर उठाया और उस पत्थर को एक कपड़े में लपेट कर धन्ना जी को दे दिया और ठाकुर पूजा की सारी विधि समझा दी और बदले में धन्ने से एक सुन्दर दूध देने वाली गाय प्राप्त कर ली।

धन्ना, ठाकुर प्राप्त करके बहुत प्रसन्न हुआ। खुशी-खुशी घर गया। स्वयं स्नान किया और ठाकुर जी को स्नान करवा कर ऊंची जगह पर विराजमान कर दिया और स्वयं साग, मक्की के प्रशादे और लस्सी का गिलास भरकर थाल में सजाकर ऊपर बड़ा सारा कपड़ा डालकर ठाकुर जी के सामने रख दिया। बहुत प्यार में भीगकर विनतियाँ करने लग पड़ा, 'ठाकुर जी! कृपा करो, मुझ गरीब का साग, मक्की की रोटी और लस्सी परवान करो, इसको भोग लगाकर पवित्र करो। काफी समय विनतियाँ करता रहा पर ठाकुर जी ने भोग न लगाया। धन्ना जी निश्छल पवित्र मन वाले थे। उनको यह नहीं पता था कि पण्डित त्रिलोचन तो ठाकुरों के सामने पदार्थ रखकर, उंगली डुबाकर दूध की छींटा मूर्ति को छू कर, इसको भोग लगाना ही समझता था, बाकी तो स्वयं खा लेता था।

पर धन्ना जी सचमुच ठाकुर जी को खिलाकर, भोग लगाकर फिर खाना चाहते थे। प्यार में भीगकर दृढ़ता से विनती करते गए, आखिरकार मन में निर्णय कर लिया और ठाकुर जी को विनती की, ठाकुर जी! जितना समय आप भोग नहीं लगाओगे, मैं भी मुँह जूठा नहीं करूँगा। आप के भोग लगाने के पश्चात् ही मैं कुछ मुँह में डालूंगा, चाहे मेरे घर में बहुत पदार्थ नहीं है, पर ठाकुर जी! मेरे पास जो भी है, मैंने आपके पास हाज़िर कर दिया है। आप त्रिलोचन पास से हर रोज़ छकते हो। कृपा करो आज मेरा गरीब का रूखा-सूखा अन्न जल भी परवान करो।

धन्ना जी की दृढ़ता और भोलेपन के कारण, प्रभु ठाकुर जी को दर्शन देने पड़े। प्रभु जी ने प्रकट होकर धन्ने की मक्की की रोटी, साग और लस्सी को ग्रहण किया। प्रत्यक्ष भगवान के दर्शन करके जहां धन्ना जी का मन गद्‌गद् हो उठा, वहां धन्ना जी के अन्दर के कपाट खुल गए। भक्त और मालिक प्यार से गले लगकर एक हो गए। वह अवस्था जो बहुत कठिन मेहनत करके ऋषियों-मुनियों को प्राप्त नहीं होती, दृढ़ता और भोलेपन और प्यार में भीगकर प्रार्थना करने के कारण धन्ना जी को प्राप्त हो गई। भक्त वत्सल प्रभु जी धन्ना जी के प्यार में संसार के सारे कार्य करते **''मिले प्रतखि गुसाईआ धंना वडभागा''** अनुसार धन्ना जी भाग्यशाली बन गए। भाई गुरदास जी ने भक्त धन्ना जी की इस सारी वार्ता को अपनी वार में निम्नलिखित अनुसार अंकित किया है—

बाम्हण पूजै देवते धंना गऊ चरावणि आवै॥
धंनै डिठा चलितु एहु पूछै बाम्हणु अखि सुणावै॥
ठाकुर दी सेवा करै जो इछै सोई फलु पावै॥
धंना करदा जोदड़ी मैं भी देह इक जे तुधु भावै॥
पथरु इकु लपेटि करि दे धंनै नो गैल छुडावै॥
ठाकुर को नावाहलिकै छाहि रोटी लै भोगु चढ़ावै॥
हथि जोड़ि मिनति करै पैरीं पै पै बहुतु मनावै॥
हउ भी मुहु न जुठालसां तू रुठा मै किछु न सुखावै॥
गोसाई परतखि होइ रोटी खाहि छाहि मुहि लावै॥
भोला भाउ गोबिंद मिलावै॥३॥

वार १०, पउड़ी १३

प्रभु जी के दर्शन प्राप्त करके धन्ना जी की दृढ़ता को और चार चांद लग गए। पहले से भी दुगुनी चौगुनी श्रद्धा परमेश्वर पर परिपक्व हो गई। आप जी ने अपना सारा जीवन परमेश्वर प्रति कर दिया। कृत करते कोई भी सांसारिक ज़रूरत आपको महसूस होती, जैसे एक बच्चा अपने माँ बाप के पास हर

ज़रूरत की पूर्ति के लिए बेझिझक होकर पुकार करता है, भक्त धन्ना जी का भी प्यार अपने ठाकुर से ऐसा हो गया। हम तो केवल पढ़ देते हैं ''**तुम मात पिता हम बारिक तेरे**'' पर धन्ना जी ने सचमुच दृढ़ता भरोसे से परमेश्वर जी को अपना माता-पिता बना लिया। जैसे सतगुरु अर्जुन देव जी ने गुरबाणी में फरमान किया है —

तूं मेरा पिता तूं है मेरा माता॥

तूं मेरा बंधपु तूं मेरा भ्राता॥ *माझ महला ५, पृष्ठ १०३*

मात्र माता-पिता माना ही नहीं बल्कि ज़रूरत पड़ी तो भक्त जी ने अपने ठाकुर प्रभु पास अपनी जरुरतों की सूची लिखकर रख दी जिसको परमेश्वर जी ने पूरा भी किया। कैसे प्यार में भीगकर अपने मालिक प्रभु पास से संसार की ज़रूरतों की पूर्ति के लिए मांग कर ली है। सुनते हैं भक्त धन्ना जी की जुबानी —

धनासरी धंना जी

गोपाल तेरा आरता[१]॥

जो जन तुमरी भगति करंते

तिन के काज[२] सवारता॥रहाउ॥

दालि सीधा मागउ घीउ॥

हमरा खुसी करै नित जीउ॥

पन्हीआ[३] छादनु[४] नीका[५]॥

अनाजु मगउ सत[६] सी का॥१॥

गऊ भैस मगउ लावेरी[७]॥

इक ताजनि[८] तुरी चंगेरी॥

घर की गीहनि[९] चंगी॥

जनु धंना लेवै मंगी॥२॥४॥ *पृष्ठ ६९५*

१. जरुरतमंद मंगता २. रसोई का समान, ३. जुत्ती, ४. कपड़ा, ५. सुन्दर, ६. सात बार जोते हुए खेत का अन्न, ७. दूध देने वाली, ८. अरबी घोड़ी, ९. घर की स्त्री।

जहां आप जी का अपने मालिक प्रभु जी पर अटल विश्वास था वहाँ प्रभु विश्वास को दृढ़ करने के लिए हमें सांसारिक जीवों को तीन उदाहरणें देकर प्रभु को रोज़ी दाता मानकर गुरु रामदास पातशाह जी के उपदेश को दृढ़ कराते हैं कि हे इन्सान —

ना करि चिंत चिंता है करते ॥ हरि देवै जलि थलि जंता सभतै ॥
अचिंत दानु देइ प्रभु मेरा विचि पाथर कीट पखाणी हे ॥६ ॥

मारू महला ४, पृष्ठ १०७०

आप जी ने आसा राग में मन को सम्बोधन करके फरमाया, हे मन! तू दयाल प्रभु जी को क्यों नहीं याद करता। उसके बिना और दूसरा कोई है ही नहीं। हे मन! जितना मर्ज़ी खण्डों, ब्रह्मण्डों तक भी भाग दौड़ कर ले, तेरी मर्ज़ी से कुछ नहीं होगा। जो कुछ करते प्रभु को अच्छा लगेगा, वही होगा। ऐसे चिन्ता न कर। देख! प्रभु मालिक ने माता के गर्भ में मां की रक्त और पिता की बिंद से कैसा दस द्वार वाला सुन्दर शरीर बना दिया है। माता के उदर से कोमल शरीर की रक्षा की और आहार दिया।

और देख, कछुआ पानी में रहता है और उसके बच्चे ब्रेती[१] में होते हैं। कछुआ को न ही पंख लगे हैं जिनसे वह उड़कर चोगा लाकर अपने बच्चों की पालना करे और न ही कछुए को दूध पिलाने के लिए परमात्मा ने क्षीर (थन) दिए हैं जिनके द्वारा वह उनको दूध पिलाकर आहार दे सके पर देखो सुन्दर परमानन्द परमेश्वर कछुओं के बच्चों की पालना करता है। और तो और वे तो पत्थरों में भी जहाँ कोई सुराख नहीं, जाने का कोई रास्ता नहीं, उन पत्थरों के शक्करखोर कीड़ों की भी पालना करता है। इसलिए हे मनुष्य! तू ऐसे ही रिज़क की खातिर हर समय डरता रहता है। उस मालिक प्रभु पर यकीन रखा कर। कितना विश्वास था अपने मालिक रोज़ी देने वाले धन्ना जी को ? आप जी में फरमान करते हैं —

१. नदी के किनारे की रेत

रे चित चेतसि की न दयाल दमोदर बिबहि न जानसि कोई॥
जे धावहि ब्रहमंड खंड कउ करता करै सु होई॥१॥ रहाउ॥
जननी केरे उदर उदक महि पिंडु कीआ दस दुआरा॥
देइ अहारु अगनि महि राखै ऐसा खसमु हमारा॥१॥
कुंमी जल माहि तन तिसु बाहरि पंख खीरु तिन नाही॥
पूरन परमानंद मनोहर समझि देखु मन माही॥२॥
पाखणि कीटु गुपतु होइ रहता ता चो मारगु नाही॥
कहै धंना पूरन ताहू को मत रे जीअ डरांही॥३॥३॥

आसा धंना जी, पृष्ठ ४८८

आप जी ने जहां अपनी आत्मिक अवस्था का ज़िक्र किया है, वहाँ जीवों को तन मन, और धन की नश्वरता दृढ़ कराई है, कि तन नष्ट हो जाता है। मन हमेशा इच्छाओं में भटकता रहता है, जिस कारण स्थिर नहीं होता और धन भी सदा टिकता नहीं, यह भी बिखर जाता है।

मनुष्य धन पदार्थों के लोभ लालच और माया के पाँच दूतों के वश में पड़कर आवागमन के चक्र को सहेड़ लेता है, माया के प्रभाव के कारण विषय विकार जो ज़हर के समान हैं, उनको मीठे जानकर उनमें ही फंसा रहता है।

गुरु की रहमत से जिनको असलीयत का पता चल गया है, उन्होंने प्रेमा भक्ति करके आत्मिक आनन्द की अवस्था को प्राप्त किया और उन्होंने सदीवी सुख और तृप्ति प्राप्त कर ली है। उन गुरमुखों का जन्म मरण का चक्र भी खत्म हो जाता है।

आप जी अन्तिम पंक्ति में फरमाते हैं, मैंने (धन्ने ने) संतों की संगत करके (धरती को आसरा देने वाले) प्रभु का नाम धन प्राप्त कर लिया है। हे जिज्ञासु जनों! आवागमन के चक्र से बचने के लिए आप भी इस मार्ग पर चलो। आप जी फरमान करते हैं —

आसा धंना जी

भ्रमत[१] फिरत बहु जनम बिलाने[२] तनु मनु धनु नही धीरे[३]॥
लालच बिखु काम लुबध[४] राता मनि बिसरे प्रभ हीरे॥१॥ रहाउ॥
बिखु फल मीठ लगे मन बउरे[५] चार बिचार न जानिआ॥
गुर ते प्रीति बढी अन भांती जनम मरन फिरि तानिआ[६]॥१॥
जुगति[७] जानि नही रिदै निवासी जलत जाल जम फंध परे॥
बिखु फल[८] संचि भरे मन ऐसे परम पुरख प्रभ मन बिसरे॥२॥
गिआन[९] प्रवेसु गुरहि धनु दीआ धिआनु मानु मन एक मए॥
प्रेम भगति मानी सुखु जानिआ त्रिपति[१०] अघाने मुकति भए॥३॥
जोति[११] समाइ समानी जा कै अछली प्रभु पहिचानिआ॥
धंनै धनु पाइआ धरणीधरु[१२] मिलि जन संत समानिआ॥४॥१॥

पृष्ठ ४८७

जहाँ **''धंनै धनु पाइआ धरनीधर''** की दात आपको प्राप्त हुई, वहां इस धरनीधर के नाम धन को बांटने के लिए आप जी ने देशाटन भी किया। इसी मंतव्य को लेकर आप जी ने पंजाब में भी चरण डाले। गांव पुर हीरां (ज़िला होशियारपुर) में भक्त धन्ना जी का सुन्दर स्थान है। जहां के पुजारी तो आप जी का जन्म स्थान भी पुर हीरां ही मानते हैं। भक्त धन्ना जी प्रभु के भोले निश्छल, लाडले भक्त थे। आप जी ने प्रभु भक्ति का ढ़िढोरा निडर होकर सारे संसार में पीटा। आप जी 60 साल की सफल आयु भोगकर 1475 ई० में प्रभु लीन हो गए। आप जी जैसे महापुरुषों की भक्ति प्रति सतगुरु अर्जुन देव जी ने गुरबाणी में वचन उच्चारण किए हैं —

सफलु जनमु हरि जन का उपजिआ जिनि कीनो सउतु बिधाता॥
सगल समूह लै उधरे नानक पूरन ब्रहमु पछाता॥२॥२१॥

देवगंधारी महला ५, पृष्ठ ५३२

---

१. कई जन्मों में भटकते २. बीत गए ३. टिकते नहीं, तन नष्ट हो जाता है, मन भटकता रहता, धन उड़ जाता ४. लोभी ५. कमला, अच्छे कामों की विचार नहीं जानता। ६. जन्म मरण का ताना ७. हरि से जुड़ने की अच्छी युक्ति ८. विषय विकारों के ज़हरीले फल ९. गुरु के ज्ञान धन का जब हृदय में प्रवेश हुआ १०. तृप्त हो गए। ११. प्रभु की जोत हर जगह समाई हुई है, १२. धरती को आसरा देने वाला प्रभु।

भक्त बेणी जी

जीवन वृत्तान्त

नाम	:	श्री बरहमबाद बेणी जी
प्रचलित नाम	:	श्री बेणी जी
माता जी	:	जानकारी उपलब्ध नहीं है।
पिता जी	:	
सुपत्नी जी	:	
जन्म स्थान	:	
जन्म समय	:	
संसार में विचरण करने का समय	:	15 वीं सदी के उत्तरार्द्ध से 16 वीं सदी के पूर्वाद्ध तक
गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज बाणी	:	तीन शबद श्री राग (पृष्ठ 93) रामकली राग (पृष्ठ 974) प्रभाती (पृष्ठ 1351) पर दर्ज हैं।
मुख्य उपदेश	:	इस संसार में विचरण करते मनुष्य को माया के बंधनों से छुटकारा कर लेना चाहिए। जो जीते जी मुक्त नहीं हो सका। वह मर कर भी

कैसे मुक्त होगा। आत्मतत्त्व की प्राप्ति के लिए गुरु वाले बनना ज़रूरी है। आप जी का फरमान है —

जिनि आतम ततु न चीन्हिआ॥

सभ फोकट धरम अबीनिआ॥

प्रभाती भगत बेणी जी, पृष्ठ १३५१

◆ ◆ ◆

भक्त बेणी जी

भक्त बेणी जी का जीवन वृत्तान्त इतिहास में बहुत कम उपलब्ध है। आप जी के माता-पिता जी, जन्म-स्थान और जन्म काल का कोई पक्का पता नहीं मिलता। साखी प्रमाण भाई नरैण सिंह जी ने आप का जन्म 1630 विक्रमी को गाँव असनी ब्राहमणों के घर हुआ लिखा है।

आप जी के जीवन वृत्तान्त की साखी सहित व्याख्या भाई गुरदास जी ने अपनी वारों में की है, जिससे पता चलता है, कि आप जी बहुत विद्वान् उच्च कोटि के कथा-वाचक थे। श्रद्धालु लोग आप जी को अपने घरों में कथा करने के लिए ले जाते थे। आप जी बहुत प्यार में भीगकर, पुरातन धर्म ग्रन्थों की कथा, श्रद्धालुओं को श्रवण कराया करते थे। जो भी प्रसन्न होकर माया दे देता उससे आप जी अपने परिवार का निर्वाह करते थे।

एक दिन यजमानों के घर में कथा सुनाकर आप जी घर वापस लौट रहे थे, कि आप जी को रास्ते में एक महात्मा के दर्शन हुए। महात्मा ने आप से वचन सांझे किए। बेणी जी को पूछने पर कि आप जी क्या करके और कहाँ से आए हो ? आप ने कथा सुनाने के कार्य की जानकारी महात्मा को दी। महात्मा ने आपसे कहा, बेणी! जिन सत्तपुरुषों की कथा-कहानियां तुम लोगों को सुनाकर अपनी रोज़ी-रोटी चलाते हो, उनके जैसा अपना भी जीवन बनाने का यत्न करो। तू स्वयं ही ख्याल कर कि जिन महापुरुषों के जीवन-वृत्तान्त सुनकर लोग माया न्यौछावर करने को तैयार हो जाते हैं, जो उनके जैसा जीवन बना लेगा, उनको कितना लाभ होगा ? फिर यह लोक भी सुहेला और परलोक में

भी किसी किस्म की कोई कमी नहीं रहती। दोनों लोकों में जय-जयकार हो जाती है।

महात्मा जी का उपदेश सुनकर बेणी जी ने, इसी उपदेश कर्ता महात्मा जी को अपना गुरु धारण कर लिया। अब आप जी हर रोज़ अपने घर से चलकर किसी यजमान के घर-घर जाने की बजाय एकान्त जंगल में चले जाते और वहाँ बैठकर प्रेमा-भक्ति में जुड़ जाते । जब शाम को घर लौटते, घर वालों के पूछने पर कि आज आप खाली हाथ आए हो, क्या कारण है ? तब आप जवाब देते कि आज से मैंने बड़े राजा जी की नौकरी कर ली है। अब मैं लोगों को कथा सुनाने की बजाय राजा जी को कथा सुनाता हूँ। जब कुछ दिन व्यतीत हो गए। घर से खाने-पीने की सामग्री खत्म होने लगी तो परिवार ने फिर आप जी से पूछा ? आप ने उत्तर दिया कि राजा जी बहुत बड़े हैं, मैंने उनसे अभी तनख्वाह के लिए पूछा नहीं है। वे स्वयं ही बहुत सारा धन दे देगें। काफी समय टाल-मटोल करते हुए व्यतीत हो गया। घर में खाने पीने की वस्तुओं की बहुत तंगी हो गई, पर आप निष्काम होकर प्रभु भक्ति में जुड़े रहे। प्रभु भजन में ऐसे मग्न हुए कि सारी इच्छाएं खत्म हो गईं।

उधर प्रभु मालिक ने अपने बिरद की पालना करते हुए राजा का रूप धारण करके खाने-पीने, प्रयोग होने वाली सामग्री के गड्डे लादकर भगत जी के घर को पदार्थों से भर दिया और परिवार को दिलासा दिया कि जल्दी ही और सामग्री आपको पहुँचा दी जाएगी, यह तो बेणी जी के हमें कथा सुनाने की दक्षिणा ही है। अभी उनकी तनख्वाह हमारे पास जमा है।

सारा धन पदार्थ सामग्री देख सारा परिवार और भक्त जी की पत्नी खुशी में आपे से बाहर हो गए और सारा सामान सम्भालने में जुट गए।

बेणी जी के घर से विदा लेकर प्रभु जी जंगल में अपने प्यारे भक्त जी को जा मिले। भक्त जी को प्रभु जी ने अपने गले से लगाया, अनेकों आत्मिक बख्शिशें करके नवाजा और आत्मिक प्रकाश की अवस्था बख्शिश की। इसलिए ही श्री गुरु अर्जुन देव जी ने बसंत राग में फरमान किया है —

बेणी कउ गुरि कीओ प्रगासु॥

रे मन तू भी होहि दासु॥ *बसंत महला ५, पृष्ठ ११९२*

जो भी एकाग्रचित होकर कामना रहित प्रभु भक्ति करता है। परमेश्वर जी **''अचिंत कंम करहि प्रभ तिन के जिन हरि का नामु पिआरा॥''** की दातें बख्शिश करके इस लोक में भी और परलोक में भी उसकी जय-जयकार करा देता है। भाई गुरदास जी ने भक्त बेणी जी का प्रसंग निम्नलिखित अनुसार अंकित किया है —

गुरमुखि बेणी भगति करि जाइ इकांतु बहै लिव लावै॥
करम करै अधिआतमी होरसु किसै न अलखु लखावै॥
घरि आइआ जा पुछीऐ राज दुआरि गइआ आलावै॥
घरि सभ वथू मंगीअनि वलु छलु करिकै झथ लंघावै॥
वडा सांगु वरतदा ओह इक मनि परमेसरु धिआवै॥
पैज सवारै भगत दी राजा होइकै घरि चलि आवै॥
देइ दिलासा तुसि कै अणगणती खरची पहुँचावै॥
ओथहु आइआ भगति पासि होइ दइआलु हेतु उपजावै॥
भगत जनां जैकारु करावै॥१४॥

वार दसवीं, पउड़ी १४

आप जी के तीन शबद श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज हैं, जिनमें आप जी ने दसम द्वार, परमपद की प्राप्ति की निशानियां दर्शायी हैं, जिसकी सुरत दसम द्वार में प्रवेश कर जाती है, उसको जीवन-मुक्ति की दात प्राप्त हो जाती है, बेणी जी संसार में रहते जीवन मुक्त होने के लिए प्रेरणा देते हैं। मरने के बाद जो मुक्ति का संकल्प किया गया है, उसको आपने नकारा है; कि जो जीते जी माया के बंधनों से मुक्त नहीं हो सका, उसकी आत्मा शरीर त्यागने के पश्चात् कैसे मुक्त हो सकती है। आप जी का श्री राग में फरमान है —

बेणी कहै सुनहु रे भगतहु मरन मुकति किनि पाई॥५॥

सिरीरागु बेणी जी, पृष्ठ ९३

जहां आप जी ने अनुभवी मण्डल का जिक्र अपनी बाणी में किया है, वहां दिखावे के खोखले कर्मकाण्डों का भी आप जी ने डट कर विरोध किया है। आत्म पद को पहचानना मनुष्य की ज़िंदगी का मनोरथ है। आत्म पद की प्राप्ति के लिए गुरु की अगवाई, गुरु कृपा की ज़रूरत है। आप का फरमान है —

जिनि आतम ततु न चीन्हिआ॥ सभ फोकट धरम अबीनिआ॥
कहु बेणी गुरमुखि धिआवै॥ बिनु सतिगुर बाट न पावै॥५॥१॥

प्रभाती बेणी जी, पृष्ठ १३५१

आप जी शरीर त्याग करके 16 वीं सदी में संसार से अलोप हो गए पर गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज़ उपदेशों द्वारा आप जी सदा अमर हो गए।

◆ ◆ ◆

भक्त भीखन जी

जीवन वृत्तान्त

नाम	:	श्री निजामओदीन भीखन जी
जन्म	:	1480 ई०
माता जी	:	जानकारी उपलब्ध नहीं है
पिता जी	:	
सुपत्नी	:	
संतान	:	
विद्वता	:	अरबी, फ़ारसी के उच्च कोटि के विद्वान् थे।
जन्म स्थान	:	गाँव कोकरी (नज़दीक लखनऊ)
मुर्शिद का नाम	:	सैय्यद मीर इब्राहिम जी
मत	:	सूफी
श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज बाणी	:	दो शबद, राग सोरठ (पृष्ठ 659, 660 पर)
अकाल चलाणा	:	1573 ई० को

मुख्य उपदेश	: गुरु कृपा से नाम की दात प्राप्त होती है। नाम जप द्वारा जो रस और आनन्द मिलता है, वह वर्णन नहीं किया जा सकता। नाम सिमरन से जीभ को स्वाद कानों को सुख और आत्मा को शान्ति मिलती है। ऐसा अमूल्य नाम जपने के लिए देरी–सुस्ती नहीं करनी चाहिए।

◆ ◆ ◆

भक्त भीखन जी

1480 ई० में आप जी का जन्म गाँव कोकरी, ज़िला लखनऊ (उत्तर प्रदेश) में सूफी ख्यालों से सम्बन्ध रखने वाले परिवार में हुआ। आप जी बचपन से ही धार्मिक रुचियों के धारणी थे। आप जी की स्मरण शक्ति इतनी तेज़ थी कि आप जी ने अरबी भाषा में सारा कुरान शरीफ छोटी उम्र में ही याद कर लिया था।

आप जी ने सैय्यद मीर इब्राहिम को अपना मुर्शिद धारण किया। साई सैय्यद जी की अगुवाई में आप जी ने रुहानियत में ऊंचे दर्जे को प्राप्त किया। जैसे श्री गुरु नानक देव जी का आसा जी दी वार में फरमान है : **''निवै सु गउरा होइ''**, जैसे जैसे आप जी ने सांसारिक विद्या में निपुणता प्राप्त की, साथ-साथ ही धार्मिक पक्ष में हकीकत के दर्जे पर पहुँच कर बहुत विद्वान् और महान् फकीर कहलाए। इतनी उच्चता, प्रभुता प्राप्त करके भी आप जी अपने आप को 'कारी' शब्द से सम्बोधित करते थे। कारी शब्द का भाव है, शिक्षार्थी।

आप का आशय गुरमत से मेल खाता है। सतगुरु जी ने अपने शिष्यों को सिख का नाम दिया है। सिख का भाव जो सीखने के लिए तैयार है, जो सीख रहा है और अन्तिम श्वासों तक सीखता रहेगा। जो मनुष्य सीखने के दरवाज़े बन्द कर लेता है, वह न सांसारिक और न ही परमार्थिक स्तर पर तरक्की कर सकता है। सम्पूर्ण केवल परमेश्वर स्वयं ही है। बाकी सभी अधूरे हैं, अधूरे को पूरा बनने के लिए शिक्षार्थी बनने की अवश्य ज़रूरत है।

आप जी शरह शरीअत की पाबन्दियों से आज़ाद हो चुके थे। आप सभी

से प्यार, प्रेम का व्यवहार करते थे। आप जी सारी कायनात को प्रभु का रूप समझ कर सभी का पूरा-पूरा सम्मान करते। आप उसी प्रभु के होने में अथाह निश्चय रखते थे। आप का मन और इन्द्रियां अपने काबू में थीं। आप सदा अपने समय को सफल करने के लिए अल्लाह ताला की याद में अपनी सुरत जोड़े रखते।

आप जी के दो शबद श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज हैं जिससे पता चलता है कि आप जी प्रभु का नाम जपकर प्रभु में अभेदता की अवस्था को प्राप्त कर गए थे। जिस अवस्था को आप जी ने प्राप्त किया है वह बताई नहीं जा सकती, केवल अनुभव ही की जा सकती है।

यह अवस्था कैसे प्राप्त होती है ? परमेश्वर का नाम जपने से। नाम किसको प्राप्त होता है ? जिसको गुरु का मिलाप प्राप्त हो जाए। गुरु का मिलाप किस को प्राप्त होता है ? जिसके बहुत उत्तम भाग्य हो, उसको गुरु रहमत करके नाम पदार्थ की दात बख्शिश कर देता है। नाम जो हीरे-रत्नों से भी कीमती है, इस अमूल्य नाम को छिपाया भी नहीं जा सकता। श्री गुरु अर्जुन देव जी के फरमान अनुसार —

गुझड़ा लधमु लालु मथै ही परगटु थिआ॥

मारू महला ५, पृष्ठ १०९६

बाबा भीखन जी ने अपनी बाणी में फरमान किया है, कि हरि परमेश्वर के गुण बयान नहीं किए जा सकते और न ही उसके मिलाप के आनन्द को वर्णन किया जा सकता है। जैसे गूंगे मनुष्य को स्वादिष्ट मिठाई खिलाई जाए, दोबारा उससे मिठाई का स्वाद पूछें, गूंगा मनुष्य मिठाई के स्वाद को बता नहीं सकता।

हे भाई! रसना (जीभ) से नाम जपने से नाम का रस प्राप्त होता है। कानों से नाम सुनने से कानों को सुख मिलता है। हृदय में नाम बसने से मन को शान्ति मिलती है। नाम सिमरन की बरकत से आँखें भी बुरी दृष्टि से शान्त हो जाती हैं। आप वर्णन करते हैं कि अब मैं जिधर भी देखता हूँ हर जगह मुझे हरि परमात्मा ही परिपूर्ण हो कर रमा दृष्टिगोचर होता है। कैसी आपकी अवस्था थी। पढ़ें सोरठ राग में आपका फरमान —

राग सोरठ भीखन जी

ऐसा नामु रतनु निरमोलकु पुंनि पदारथु पाइआ॥
अनिक जतन करि हिरदै राखिआ रतनु न छपै छपाइआ॥१॥
हरि गुन कहते कहनु न जाई॥
जैसे गूंगे की मिठिआई॥१॥ रहाउ॥
रसना रमत सुनत सुखु स्रवना चित चेते सुखु होई॥
कहु भीखन दुइ नैन संतोखे जह देखां तह सोई॥२॥२॥

पृष्ठ ६५९

दूसरे शबद में आप जी मनुष्य को सुचेत करते असलीयत से जानकार कराते हैं, कि हे मनुष्य! ऐसा अमूल्य नाम जिसके जपने से हृदय को शान्ति, रसना को सुख, नेत्रों को संतोष प्राप्त होता है। क्यों नही जपता ? क्या उस समय जपेगा ? जब आंखों से लगातार पानी बहने लग पड़ा, शरीर साथ देने से हट गया। केश सफेद दूध जैसे हो गए। और गले में बलगम फँस कर गला बंद हो गया। क्या उस समय नाम जपेगा ? इस जैसी हालत में नाम नहीं जपा जा सकता।

हे प्रभु! तेरे चरणों में विनती है, आप कृपा करके अपने सेवकों को इन दु:खों से छुटकारा दिला सकते हो। हे प्रभु! बुढ़ापे से सिर दर्द, शरीर में जलन, कलेजे में दर्द होने लग जाती है। आप के बिना इस हालत में कोई छुटकारा नहीं दिला सकता क्योंकि संसार में बुढ़ापे के रोग से बचने की कोई दवाई नहीं है। हे हरि परमात्मा! आप जी का पवित्र नाम ही सभी रोगों का दारू है। नाम का पल्ला पकड़कर ही मैं मुक्ति के दरवाज़े से निकल जाऊंगा। आप का फरमान है—

राग सोरठि बाणी भगत जी भीखन

नैनहु नीरु बहै तनु खीना भए केस दुध वानी॥
रूधा कंठु सबदु नही उचरै अब किआ करहि परानी॥१॥

राम राइ होहि बैद बनवारी॥ अपने संतह लेहु उबारी॥१॥ रहाउ
माथे पीर सरीरि जलनि है करक करेजे माही॥
ऐसी बेदन उपजि खरी भई वा का अउखधु नाही॥२॥
हरि का नामु अंम्रित जलु निरमलु इहु अउखधु जगि सारा॥
गुर परसादि कहै जनु भीखनु पावउ मोख दुआरा॥३॥१॥

पृष्ठ ६५९

अन्त आप जी ''**ऐसा नामु रतनु निरमोलकु पुंनि पदारथु पाइआ**'' का ढिंढोरा पीटते, आप जपते और दूसरों को जपाते 1573 ई० को इस संसार से पांच भूतक शरीर का त्याग करके प्रभु चरणों के वासी बन गए। उनकी पवित्र आत्मा की आवाज़ आज भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में गूंज रही है और गूंजती रहेगी।

◆ ◆ ◆

भक्त सधना जी

जीवन वृत्तान्त

नाम	:	श्री सधना जी
जन्म	:	1180 ई०
जन्म स्थान	:	गाँव सहवाल (हैदराबाद सिंध)
पिता जी	:	पारिवारिक जानकारी उपलब्ध नहीं है।
माता जी	:	
पत्नी	:	
संतान	:	
समकालीन	:	भक्त नामदेव जी
श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज बाणी	:	बिलावल रागु में एक शबद जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पृष्ठ 858 पर अंकित है।
अकाल चलाना स्थान	:	सरहिंद[1] में।

1. सरहिंद में बाबा सधना जी की मसीत है। जिसकी देखभाल पंजाब सरकार की ओर से की जाती है। उस मसीत का इतिहास बताते कहते हैं कि भक्त जी अपने कारोबार के कारण यहां सरहिंद में आ बसे थे। इस स्थान पर ही आपकी रिहायश थी। यहां ही आप मास बेचने का कर्म करते थे। इस स्थान पर ही आप को ज्ञान प्राप्त हुआ था। वह ही आपकी अन्तिम निशानी है।

मुख्य उपदेश : माण, ताण, अहंकार का त्याग करके प्रभु में समाई प्राप्त की जा सकती है। जितना समय मनुष्य पुकार कर यह नहीं कहता, ***''मै नाही कछु हउ नही किछु आहि न मोरा॥ अउसर लजा राखि लेहु सधना जनु तोरा॥''*** उतना समय बात नहीं बनती।

◆ ◆ ◆

भक्त सधना जी

सधना जी का जन्म मुस्लिम धर्म से सम्बन्धित सम्प्रदाय में लगभग 1180 ई० को इलाका, सिंध हैदराबाद के गाँव सहवाल में हुआ। आपके पिता जद्दी पुशती कसाई[१] का काम करके, मांस बेचकर गुजारा करते थे। सधना जी की वृति जन्म से ही धार्मिक संस्कारों वाली थी, घर के संस्कारों के अधीन आप जीवों को मार कर मास बेचने को एक कृत समझकर इस काम में परविरत होकर अपनी रोज़ी रोटी कमाने लगे।

आत्मिक भूख को पूरा करने के लिए आप जी को एक पूर्ण महात्मा ने प्रभु भक्ति की ओर प्रेरित किया। आप जी के प्रति कई साखियां प्रचलित हैं, कि सधना जी शालीग्राम की पूजा करते थे, उसी शालीग्राम को बाट बनाकर, आप ग्राहकों को मांस तोलकर देते थे। आप की इस क्रिया को देखकर ब्राह्मण लोग बहुत चिढ़ते थे। कई बार राजा के पास भी शिकायत की, कि सधना हमारे पूजने योग्य सालग्राम (शालिग्राम)को बाट बनाकर उससे मांस तोलता है।

मुसलमान भी अक्सर यह कहकर शिकायत करते थे कि सधना मुसलमान होकर शालिग्राम की पूजा करता है, जिस कारण यह काफिर है। दोनों की शिकायतों का निपटारा करने के लिए राजा ने सधना को दरबार में बुलाया। सधना ने बहुत नम्रता से राजा को सन्तुष्ट करने का यत्न किया पर सधना जी को इन्साफ नहीं मिला। राजा ने सधना जी को चल रही किले की उसारी बनती हुई दीवार चिनवाकर मार देने का हुक्म दिया। जल्लादों ने आप को दीवार में चुनना शुरु कर दिया।

---

१. जीवों को मार कर उनका मांस बेचने वाला

प्रभु भक्त सधना जी ने अपने मालिक के सामने विनतियां करनी आरम्भ कर दीं। हे प्रभु! एक राजा की लड़की को प्राप्त करने के लिए एक तरखाण के लड़के ने आपका (विष्णु जी का) भेष धारण किया था, जिसका प्रयोजन मात्र काम वासना और स्वार्थ था, आपने उस की इज्जत रखी थी। हे प्रभु! अगर आप यह कहो कि तूने सारी उम्र जीव-हत्या करके पाप-कर्म किए हैं, फिर आप ही बताओ, आपकी शरण में आने का क्या लाभ हुआ और आपमें जगत् गुरु होने का क्या गुण हुआ ? अगर मेरे किए हुए बुरे कर्म ही नष्ट न हुए क्योंकि आपकी कृपा-दृष्टि से तो करोड़ों जन्मों के पाप कर्म नष्ट हो जाते हैं। भला आप ही बताओ! शेर (प्रभु) की शरण में आने का लाभ ही क्या है ? अगर कर्मों के रूप में गीदड़ों ने ही मेरा पीछा नहीं छोड़ना। हे प्रभु! एक पानी की बूंद के लिए पपीहा विलाप करता है। अगर तड़पते पपीहे की मौत हो गई फिर पानी का चाहे समुद्र दे दो, उस मरे हुए पपीहे के किस काम का है। हे प्रभु! मेरे शरीर में से प्राण निकलने वाले हैं। मैं कैसे धैर्य करूं ? कृपा करो मुझे जल्दी छुटकारा दिलाओ। अगर मनुष्य पानी में डूबकर मर जाए, उसको मरने के बाद बेड़ी में चढ़ा दो, मरे हुए के लिए बेड़ी किस काम की ? हे प्रभु! मैं कुछ भी नहीं हूँ न ही मेरी कोई ओट और न ही आसरा है। अब इस समय मेरी लज्जा रखो, मैं आप जी का दास हूँ जी —

त्रिप कंनिआ के कारनै इकु भइआ भेखधारी॥
कामारथी सुआरथी वा की पैज सवारी॥१॥
तव गुन कहा जगत गुरा जउ करमु न नासै॥
सिंघ सरन कत जाईऐ जउ जंबुकु ग्रासै॥१॥ रहाउ॥
एक बूंद जल कारने चात्रिकु दुखु पावै॥
प्रान गए सागरु मिलै फुनि कामि न आवै॥२॥
प्रान जु थाके थिरु नही कैसे बिरमावउ॥३॥
बूडि मूए नउका मिलै कहु काहि चढावउ॥३॥
मै नाही कछु हउ नही किछु आहि न मोरा॥
अउसर लजा राखि लेहु सधना जनु तोरा॥४॥१॥

रागु बिलावलु सधना जी, पृष्ठ ८५८

नम्रता में आकर जब सधना जी ने प्यार सहित विनतियां अपने स्वामी प्रभु के चरणों में कीं। पतित पावन परमेश्वर ने अपने बिरद की लाज पाल कर अपने भक्त की रक्षा की। दीवार गिर पड़ी, सधना जी सही सलामत बच गए। राजा ने भक्त रक्षा का आश्चर्यजनक कौतुक देखकर भक्त सधना जी को माफ कर दिया।

सधना जी भी प्रभु जी का शुक्र करके संसार से प्रीत तोड़कर निरंकार से जोड़ने के लिए प्रेम भक्ति करने के लिए जंगल की ओर चले गए। तीर्थ यात्रा करने के लिए जा रहे सधना जी को भूख लगी। आप एक नगर में गए। जिस घर में आप प्रशादा मांगने के लिए गए, वह औरत सधना जी का सुन्दर सुडौल शरीर देखकर मंद वासना धार बैठी। उसने आप जी को बहुत प्रेम से प्रशादा छकाया और साथ ही मनोभावना प्रकट की। प्रभु भक्त सधना जी ने उसकी मंद भावना को ठुकरा दिया। उस औरत ने भक्त जी के मन की पवित्रता को न समझते हुए महसूस किया, कि शायद यह मेरे पति जो घर में सोये हुए हैं, को देखकर मुझे टाल-मटोल करता है।

काम वासना में मस्त स्त्री ने अपनी पति का सिर काट दिया और भक्त जी को निश्चिंत होकर अपनी मंद भावना पूरी करने के लिए कहा। भक्त जी ने उस बदचलन औरत का यह कार्य देखकर बहुत बुरा माना, और उसको बद असीस देकर चलने ही लगे थे कि उस औरत ने शोर मचाकर सधना जी को पकड़वा दिया, विपरीत सधना जी पर दोष मढ़ दिया कि इसने मेरे रूप पर मोहित होकर मेरे पति को मार दिया है। सभी लोगों ने कोरे झूठ को सच्च मान लिया। राजा ने भक्त जी के हाथ काट देने की सज़ा दे दी पर कुछ समय पश्चात् प्रभु कृपा से हाथ फिर साबुत हो गए। सतगुरु जी का गुरबाणी में फरमान है —

भगत जना की हरि जीउ राखै जुगि जुगि रखदा आइआ राम॥

रागु सूही महला ३, पृष्ठ ७६८

भक्त सधना जी परमेश्वर जी के आश्चर्यजनक कौतुक देखते प्रभु परायण

होते, सत धर्म का उपदेश जनमानस को बख्शिश करते, इस संसार से, पांच भूतक शरीर त्याग कर प्रभु देश को कूच कर गए। सरहिंद (पंजाब) में भक्त जी का अंतिम देहुरा सुशोभित है। देहुरा की ओर तो शायद ही कोई सजदा करने जाता हो, पर सतगुरु ग्रंथ साहिब जी के रूप में हर समय, हर जगह पर और आपके इलाही फरमान को जुहारें हो रही हैं और होती रहेंगी —

बेणु तिलोचनु नामदेउ धंना सधना भगत सदाए॥

भाई गुरदास जी वार २३, पउड़ी १५।

◆ ◆ ◆